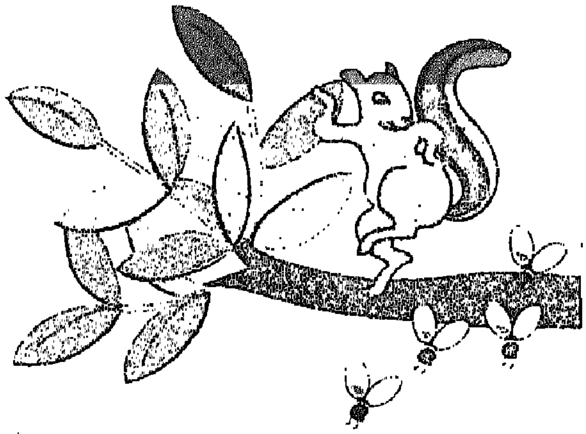


आस-पास

तीसरी कक्षा के लिए
पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
फरवरी 2006 माघ 1927

PD 25T SC

रु 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा सीमा प्रिंटिंग वर्क्स, ई 5-6, मंगोलपुरी, इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली 110 034 द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-473-7

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बैंगलूर 560 085

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	:	*पी.राजाकुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*शिव कुमार*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार अधिकारी	:	*गौतम गांगुली*
सहायक संपादक	:	*शशि चड्डा*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*अतुल सक्सेना*

सज्जा, आवरण तथा चित्रांकन
अनीता वर्मा

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती हैं। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान व अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद्, प्राथमिक पाठ्यपुस्तक समिति सलाहकार समूह की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल एवं पर्यावरण अध्ययन पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार डा. सावित्री सिंह की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों

ने योगदान दिया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों के प्रति अमूल्य सुझाव देने के लिए आभार व्यक्त करते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 दिसंबर 2005

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, प्राइमरी पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर,* शिक्षा विभाग (सी.आई.ई.), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

मुख्य सलाहकार

सावित्री सिंह, *प्राचार्या,* आचार्य नरेंद्र देव कॉलेज, नई दिल्ली एवं *पूर्व-फेलो,* विज्ञान शिक्षा एवं संचार केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

सदस्य

बलजीत कौर, *प्राइमरी अध्यापिका,* एम.सी.डी. मॉडल स्कूल, जमरूदपुर, दिल्ली।

दिलीप सिंह, *कार्यक्रम समन्वयक,* दिगंतर, शिक्षा एवं खेलकूद समिति, जयपुर।

जूही श्रीवास्तव, *कार्यक्रम समन्वयक,* निरंतर, नई दिल्ली।

कविता शर्मा, *व्याखाता,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.।

ममता पंडया, *कार्यक्रम समन्वयक,* पर्यावरण शिक्षा केंद्र, अहमदाबाद।

पूनम मोंगिया, *सहायक अध्यापिका,* सर्वोदय कन्या विद्यालय, विकास पुरी, नई दिल्ली।

प्रीति चड्ढा, *प्राइमरी अध्यापिका,* प्रायोगिक बेसिक स्कूल, सी.आई.ई, दिल्ली।

रविन्दर पाल, *उच्च व्याख्याता,* डी.आई.ई.टी, राजेंद्र नगर, नई दिल्ली।

रीतू सिंह, *व्याख्याता,* डी.ई.एस.एस.एच, एन.सी.ई.आर.टी.।

सिमंतिनी धुरू, *निदेशक,* अवेही अबेकस प्रोजेक्ट, मुंबई।

स्मृति शर्मा, *व्याख्याता,* लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली।

सोनिया शामीहोक, *अध्यापिका,* संस्कृति स्कूल, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली।

सुस्मिता मलिक, *भूतपूर्व सलाहकार,* पी.एस.ई.बी, चंडीगढ़।

सदस्य एवं समन्वयक

मंजु जैन, *प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग।

भारत का संविधान
उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में सहयोग के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विभिन्न संस्थाओं, विषय-विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं विभागीय सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम प्रोफ़ेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति हम विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होनें हर संभव सहयोग दिया।

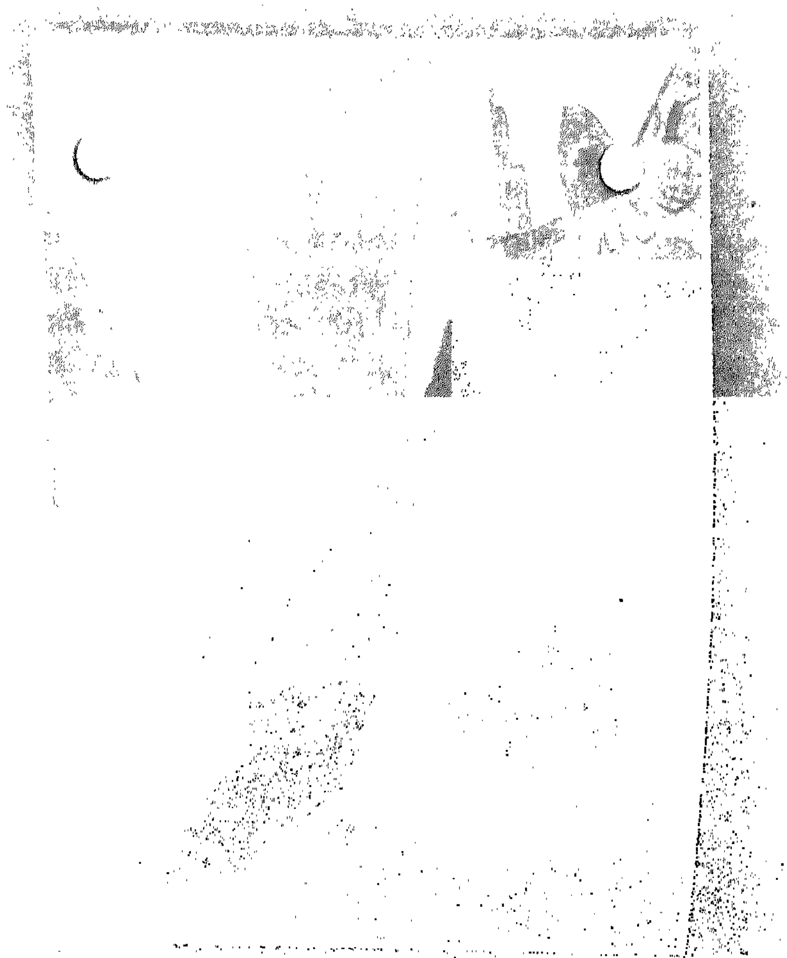
परिषद् पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए उन समस्त रचनाकारों तथा संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने इस पुस्तक में रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति प्रदान की। इसके लिए विजेंद्र पाल सिसौदिया (*पत्ते*); श्रीप्रसाद (*पानी*); सचिव, भारत ज्ञान विज्ञान समिति (*घर प्यारा*); जीन वाईटहाउस पीटरसन द्वारा रचित, अरविंद गुप्ता द्वारा अनुवादित तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित (*मेरी बहन सुन नहीं सकती*); हरीश निगम (*बादल आए*), एकलव्य द्वारा प्रकाशित; हरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय (*रेलगाड़ी*) तथा अन्नपूर्णा सिन्हा (*फुदगुदी और भनाते*)।

पर्यावरण शिक्षण केंद्र, अहमदाबाद; अवेही अबेकस, मुंबई; एकलव्य, भोपाल; होमी भाभा विज्ञान शिक्षण केंद्र (हल्का फुल्का विज्ञान), मुंबई; दिगंतर, जयपुर; निरंतर, नई दिल्ली; नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) दिल्ली; विज्ञान शिक्षा एवं संचार केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली आदि संस्थाओं का आभार व्यक्त करती है, जिनकी प्रकाशित पाठ्यसामग्री से परिषद् लाभांवित हुई तथा उनके सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ।

पुस्तक विकास में सहयोग के लिए हम अंजनी कौल, *व्याख्याता*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, तथा एम.के. सतपथी, *प्रोफ़ेसर*, उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मेघालय, शिलांग, एन.सी.ई.आर.टी., के प्रति आभारी हैं।

ऊषा चौजर, *प्राइमरी टीचर*, एयर फोर्स बाल भारती स्कूल, नई दिल्ली; दीपाहरी, *लेखक एवं संपादक*, अवेही अबेकस प्रोजेक्ट, मुंबई; अनीता जुल्का, *प्रवाचक*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग, सुषमा जयरथ, *प्रवाचक*, महिला अध्ययन विभाग, आर.बी.एल. सोनी, *प्रवाचक*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग आदि विभागीय सदस्यों द्वारा पुस्तक को उपयोगी बनाने हेतु महत्त्वपूर्ण सुझावों के लिए परिषद् आभार व्यक्त करती है।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए कविता चौधरी, *डी.टी.पी. आपरेटर;* दुर्गा देवी, *प्रूफ रीडर;* कल्पना वाजपेयी, *कॉपी एडीटर;* सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक*, शाकंबर दत्त, *प्रभारी कम्पयूटर कक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग के हम आभारी है। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएं प्राप्त हुई, इसके लिए हम आभारी हैं।



एस. अमाल जेरी अर्थपुथराज, 10 वर्ष,
सेंट पैट्रिक मॉडर्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, पांडिचेरी

दो शब्द शिक्षकों एवं अभिभावकों से

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा (एन.सी.एफ) 2005 में कथित उद्देश्यों को एक राष्ट्र स्तर की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत करना लेखन मंडल के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। लेखन मंडल पाठ्यपुस्तक के विकास से जुड़े अपने अनुभव तथा मुद्दों को सबके साथ बाँटना चाहेगा।

इस आयु वर्ग के बच्चे अपने परिवेश को समग्र रूप में देखते हैं भागों में नहीं, तथा इससे जुड़े किसी भी विषय को 'विज्ञान' तथा 'सामाजिक अध्ययन' के रूप में नहीं देखते। अत: यह आवश्यक समझा गया कि इस पुस्तक में बच्चों के परिवेश के प्राकृतिक और सामाजिक घटकों को समग्र रूप में प्रस्तुत किया जाए। पर्यावरण अध्ययन विषय का पाठ्यक्रम भी अलग-अलग विषयों से उप-विषयों की सूची लेने की बजाए ऐसे उप-विषय (थीम) प्रस्तावित कर रहा है जो की बच्चों के जीवन के बहुत करीब से जुड़े हों। पाठ्यपुस्तक में प्रयास है कि प्रत्येक उप-विषय से जुड़े प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष बहुत सूक्ष्म रूप से उभरे ताकि बच्चे अपने विचार सोच-समझ कर बनाएँ।

राष्ट्रीय स्तर पर कक्षा के बहुसांस्कृतिक स्वरूप को प्रतिबिंबित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा। यह आवश्यक समझा गया कि सभी बच्चों को महत्व मिले – उनका समाज, संस्कृति, रहन-सहन आदि सभी महत्त्वपूर्ण हैं। पाठ्यपुस्तक लिखते समय मुख्य प्रश्न था कि 'किस बच्चे को संबोधित कर रहे हैं?' - क्या वे किसी बड़े शहर के किसी बड़े विद्यालय के बच्चे हैं, या किसी झुग्गी-झोपड़ी के किसी विद्यालय के, या किसी एक ग्रामीण स्कूल के या फिर दूर-दराज के किसी पहाड़ी इलाके के? इतनी विविधताओं को पाठ्यपुस्तक में कैसे समाहित किया जाए? लिंग, वर्ग, संस्कृति, धर्म, भाषा, भौगोलिक स्थिति आदि सभी को समाहित करना था। कैसे बच्चों को व्यक्तियों में होने वाली भिन्नताओं के प्रति संवेदनशील बनाया जाए? — ये कुछ मुख्य मुद्दे थे जो पाठ्यपुस्तक में समाहित किए हैं तथा जिन्हें अध्यापकों को भी अपने तरीके से संभालना है।

पुस्तक में विषय-वस्तु बाल-केंद्रित रखी गई है जिससे बच्चों को स्वयं खोजकर पता करने का अवसर मिले। पाठ्यपुस्तक में यह प्रयास किया है कि रटने की प्रवृति कम हो अत: परिभाषाएँ, वर्णन, अमूर्त प्रत्यय आदि को स्थान नहीं दिया है। पाठ्यपुस्तक में जानकारी देना बहुत ही सरल कार्य है। वास्तविक चुनौती है कि बच्चों को मौका दिया जाए जिससे वे अपने विचार प्रकट करें, उत्सुकता को बढ़ा सकें, करके सीखें, प्रश्न करें तथा प्रयोग कर सकें। बच्चे

पाठ्यपुस्तक से खुशी-खुशी जुड़ें, इसके लिए पाठों का प्रस्तुतीकरण विविध तरीकों से किया गया है – किस्से-कहानियाँ, संवाद, कविताएँ, पहेलियाँ, हास्य खंड, नाटक, कक्षा-कक्ष के बाहर, क्रियाकलाप द्वारा आदि। बच्चों में कुछ बातों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के लिए अक्सर किस्से-कहानियों का इस्तेमाल महत्त्वपूर्ण माना गया है क्योंकि बच्चा कहानी के पात्र से अपने को आसानी से जोड़ सकता है। पुस्तक में प्रयुक्त भाषा भी 'औपचारिक' नहीं है बल्कि बच्चों की बोल-चाल की भाषा है।

ज्ञान सृजन के लिए बच्चों का क्रियाशील होना ज़रूरी है। इस विषय की पढ़ाई को कक्षा की चारदीवारी के बाहर से जोड़ा गया है। पाठ्यपुस्तक में क्रियाकलापों द्वारा बच्चों में अवलोकन क्षमता के लिए बाग-बगीचे, तालाब के किनारे, प्रकृति भ्रमण पर ले जाने की ज़रूरत है। इससे उनमें अवलोकन के साथ-साथ अन्य कौशलों का विकास भी होगा। पाठ्यपुस्तक में प्रयास किया गया है बच्चों के स्थानीय ज्ञान को विद्यालय के ज्ञान से जोड़ना। यह ध्यान देने की बात है कि पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित क्रियाकलाप मात्र सुझावात्मक है। क्रियाओं व प्रश्नों को पाठों के अंत में न देकर उन्हें पाठ का ही हिस्सा बनाया गया है। अतः अध्यापकों को पुस्तक में दिए क्रियाकलापों और इस्तेमाल की गई सामग्री को स्थानीय परिवेश के अनुसार रूपांतरित करना है। पुस्तक में विविध प्रकार के क्रियाकलाप हैं जो बच्चों को, अवलोकन, खोज, वर्गीकरण, प्रयोग, चित्र बनाना, बात-चीत करना, अंतर ढूँढ़ना, लिखना आदि सभी कौशलों को सीखने का मौका देंगे। पाठ्यपुस्तक में बहुत सारे ऐसे क्रियाकलाप हैं जिन्हें बच्चे स्वयं अपने हाथों से करेंगे और उससे उनमें गामक कौशलों का विकास होगा। बच्चों में सृजनात्मकता को उभारना, रचना करने का कौशल एवं सौन्दर्यबोध का विकास भी होगा। क्रियाकलापों के बाद उस विषय पर चर्चा बच्चों को अपने अवलोकन के निष्कर्ष निकालने में सहायक होगी। साथ ही सही दिशा में चर्चा या सुझाव, बच्चे में व्यक्तिगत रूप से सीखने में ज़्यादा मददगार हो सकते हैं।

पुस्तक में इस बात की काफी गुँजाइश है कि बच्चे ज्ञान के लिए शिक्षक और पाठ्यपुस्तक के अलावा अन्य स्रोतों की मदद लें जैसे – परिवार के सदस्य, समुदाय के लोग, समाचार-पत्र एवं पुस्तकें, इत्यादि। इससे यह स्पष्ट हो सकेगा कि पाठ्यपुस्तक ही मात्र सीखने का स्रोत नहीं है। बहुत समय पहले की जानकारी या इतिहास की झलक के लिए बच्चों को अपने बड़ों की मदद लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। इससे बच्चों के अभिभावकों और समाज का विद्यालय से जुड़ाव तो होगा ही, साथ ही योगदान भी बढ़ेगा। शिक्षक को भी बच्चों के परिवारों के बारे में जानने का मौका मिलेगा।

चित्र, इस आयु वर्ग के बच्चों की पुस्तकों का महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। लेखन दल ने ध्यान रखा है कि चित्र की प्रकृति लिखित बातों को प्रतिबिंबित करे। पुस्तक में विषय-वस्तु को चित्रों

की सहायता से बढ़ाना एक प्रमुख आधार रखा गया है। चित्रों का इस्तेमाल इस तरह भी किया गया है कि वे लिखित कार्य के पूरक हों। चित्र बच्चे को खुशी तो प्रदान करें ही, साथ ही वे उनसे कुछ सीखें भी। पाठ्यपुस्तक में विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में विभेद करने के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग किया गया है जिसकी सूची पुस्तक में सम्मिलित की गई है।

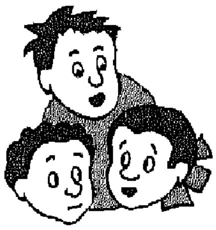
पाठ्यपुस्तक में बच्चों को काम करने के विविध प्रकार के अवसर दिए गए हैं, जैसे अकेले, छोटे समूह या बड़े समूह में काम करना। समूह में किए पारस्परिक क्रियाकलापों से बच्चे एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखते हैं और इससे मिलकर कार्य करने की क्षमता बढ़ती है। बच्चे शिल्पकला और चित्रकला को समूह में करके आनंदित होते हैं। जब बच्चों की रचनात्मकता की प्रशंसा की जाती है तो वे बहुत खुश होते हैं व उसके प्रति उत्साहित भी होते हैं अत: उनकी प्रशंसा की जाए, उनकी रचनात्मकता को अनावश्यक रूप से नकारा न जाए।

पाठ में प्रश्नों तथा क्रियाकलापों का उद्देश्य मात्र सूचना अथवा जानकारी को जाँचना नहीं है बल्कि बच्चों को अपने विचार प्रकट करने का अवसर देना है। इन प्रश्नों तथा क्रियाकलापों को करने के लिए उन्हें पूरा समय दिया जाना चाहिए क्योंकि हर बच्चा अपनी गति से सीखता है। अध्यापक, बच्चों की आवश्यकता, पढ़ाने का तरीका तथा स्थानीय स्थिति के अनुरूप अपने मूल्यांकन में तरीके स्वंयं निर्धारित करेगा। बच्चों के कौशलों का मूल्यांकन, उनके द्वारा की गई क्रियाओं - कक्षा में अथवा कक्षा के बाहर - के अनुरूप होना चाहिए। मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है अत: विभिन्न परिस्थितियों जैसे अवलोकन करना, प्रश्न पूछना, ड्राइंग अथवा चित्रकारी करना, समूह में चर्चा करना आदि, के दौरान मूल्यांकन होना जरूरी है।

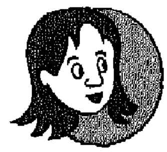
पाठ्यपुस्तक के विकास में लेखन मंडल के सामने एक प्रमुख मुद्दा था कि समाज में पाई जाने वाली भिन्नताओं के प्रति बच्चों की संवेदनशीलता बढ़ाई जा सके। चाहे वे भिन्नताएँ शारीरिक क्षमताओं, आर्थिक स्थिति तथा हमारे व्यवहार में अंतर के कारण हो – यह सब चीजें हमारे रहन-सहन, पहनने के तरीके तथा भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता आदि में परिलक्षित होती हों। हमें हर बच्चें को यह पहचान करवानी होगी कि किसी भी समाज में भिन्नता स्वभाविक है। हमें इन भिन्नताओं की प्रशंसा तथा सम्मान करना सीखना है। अध्यापकों को इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा जिससे सामाजिक मुद्दों को संवेदनशीलता के साथ संभाला जा सके खासकर जब कक्षा-कक्ष में विशेष आवश्यकता समूह वाले बच्चे हों या फिर परेशान माहौल से आने वाले बच्चे।

लेखन मंडल ने न केवल बच्चे के बारे में सोचा है अपितु अध्यापक को भी ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा है जो ज्ञान सृजन करते हैं और अपने अनुभवों को बढ़ाते हैं। अत: इस पाठ्यपुस्तक को सीखने-सिखाने की सामग्री की तरह देखा गया है जिसके इर्द-गिर्द शिक्षक अपनी पढ़ने-पढ़ाने की क्रिया को संगठित करे ताकि बच्चों को सीखने के अवसर मिल सकें।

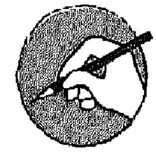
पाठ्यपुस्तक में इस्तेमाल किए गए चिह्न



चर्चा करो



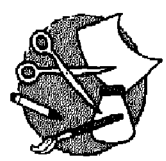
बताओ



लिखो



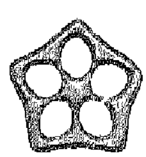
सोचो



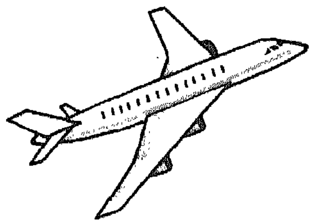
करो / बनाओ

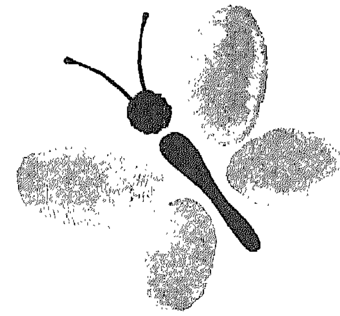


पता करो

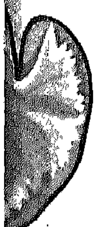


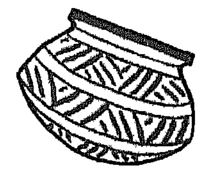
अध्यापकों / अभिभावकों के लिए संकेत

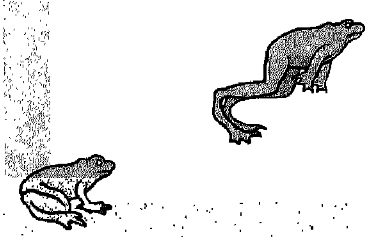


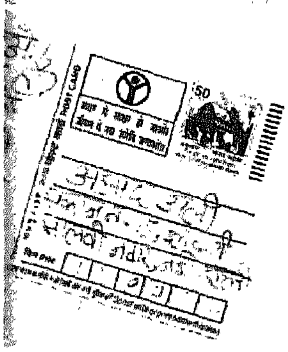


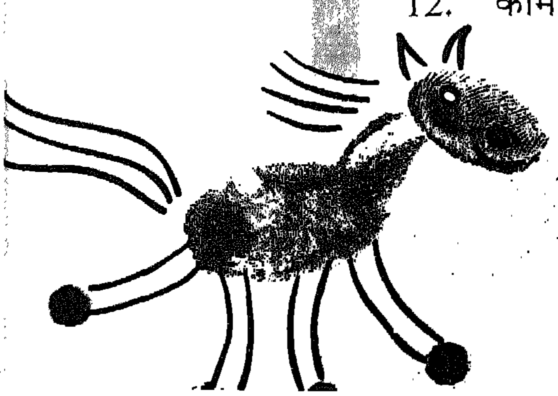


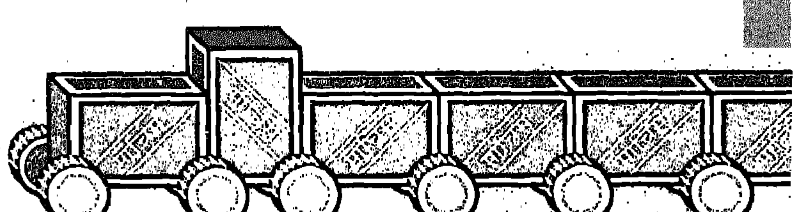




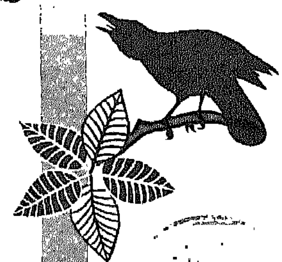


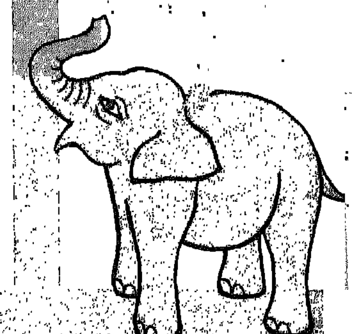




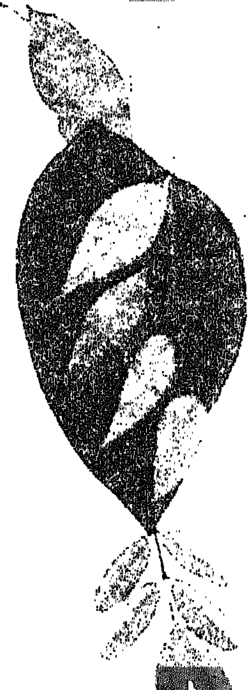










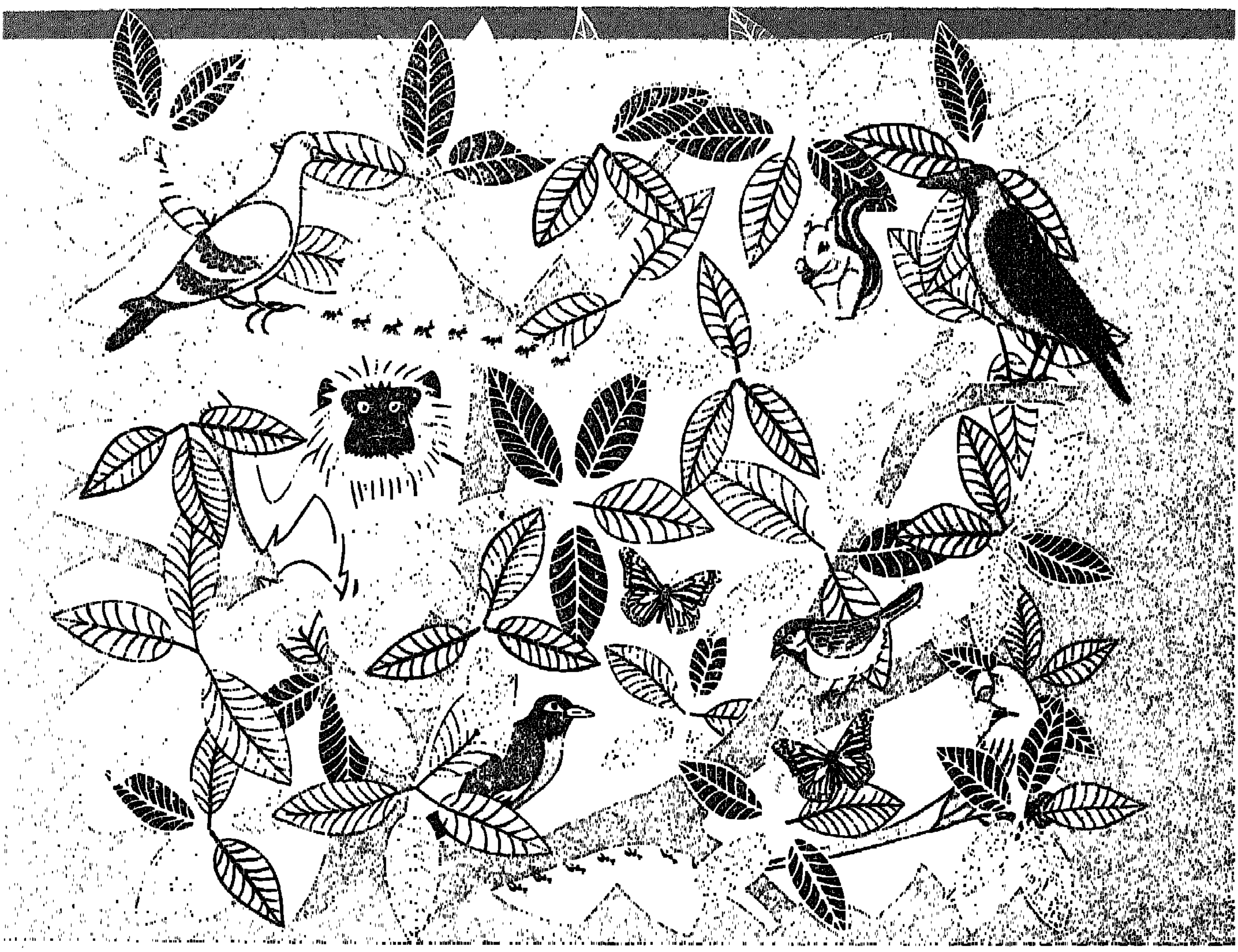




ऊँचे-ऊँचे पेड़, पक्षी टहनी पर

माँ, आज मुझे स्कूल भेज दो न! दो दिन से घर में बैठे-बैठे बोर हो गई हूँ – पूनम बोली। माँ ने जवाब दिया – तुम्हें अभी भी बुखार है। बाहर, जाकर चारपाई पर लेट जाओ।

चारपाई पर लेटे-लेटे पूनम को नींद आ गई। अचानक उसके चेहरे पर कुछ गिरा। वह हड़बड़ाकर उठी। उसने अपने गाल पर हाथ लगाया। उफ! यह किसकी शरारत है – कबूतर की या कौए की? हूँ, कौए की ही लगती है!



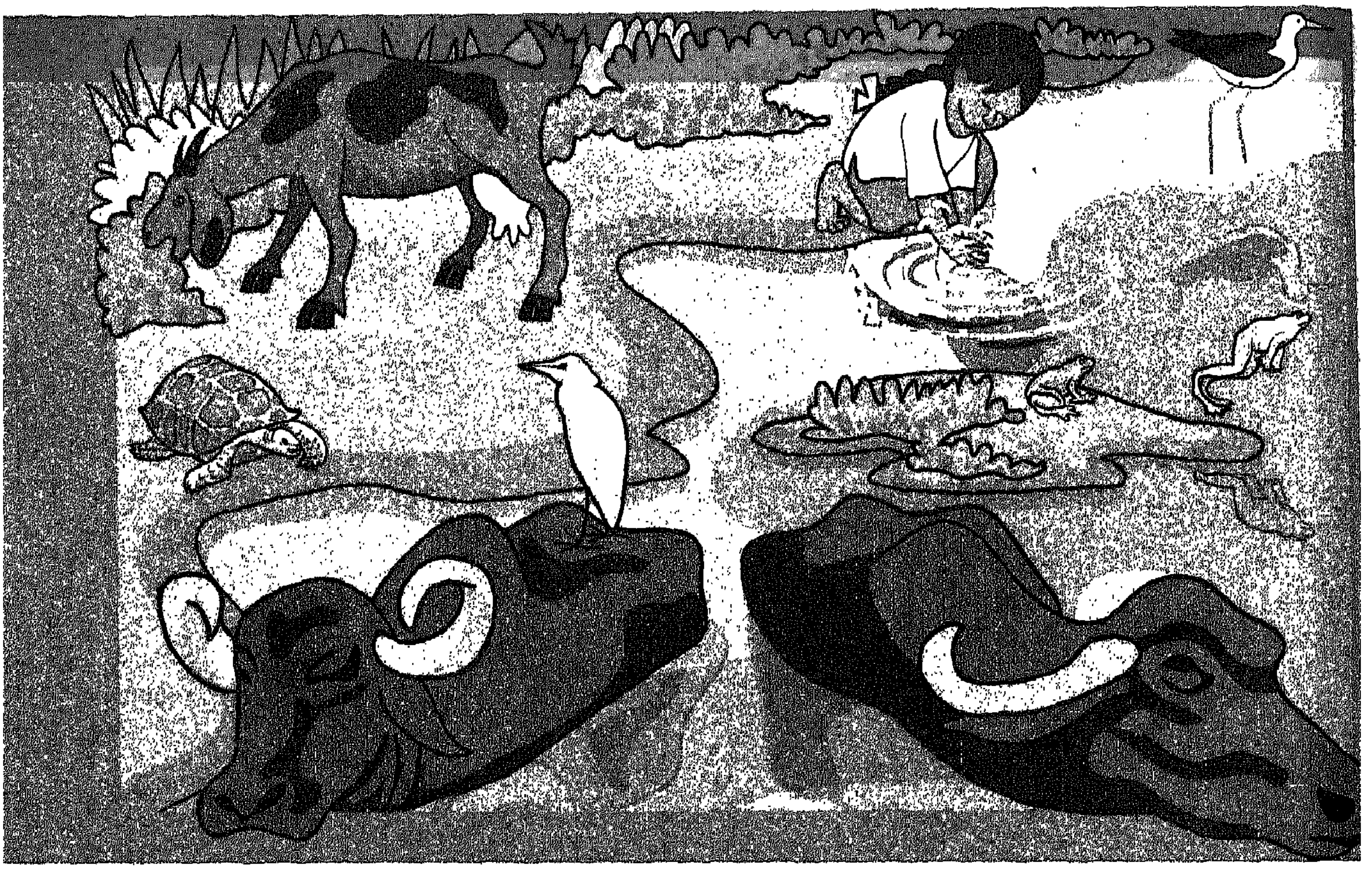
बच्चे अपने आस-पास के लोगों और चीज़ों को देखकर, समझकर बहुत कुछ सीखते हैं। इस अध्याय से भी कक्षा के बाहर की दुनिया का अवलोकन करवाया जाए – कक्षा में बैठकर केवल पढ़ा न जाए।

पूनम ने पेड़ पर कई जानवर देखे। तुम्हें चित्र में पेड़ पर कौन-कौन से जानवर दिखाई दे रहे हैं? उनके नाम लिखो।

________ ________ ________ ________

________ ________ ________ ________

ज़मीन से पूनम ने एक पत्ता उठाया और बीट को पोंछा। गाल अभी भी चिपचिपा था। उसने सोचा, सामने तालाब में धो आती हूँ।



पूनम ने तालाब पर किन-किन जानवरों को देखा? चित्र देखकर उनके नाम लिखो।

________ ________ ________

________ ________ ________

किताब में 'जानवर' शब्द का इस्तेमाल सभी तरह के जानवरों – कीड़े, पक्षी, स्तनधारी आदि के लिए किया गया है। इस उम्र में बच्चे कीड़े-मकौड़े या साँप और छिपकली का अधिक बारीकी से वर्गीकरण नहीं कर सकते। आप भी पता करें कि बच्चे जानवर शब्द से क्या समझते हैं।

तालाब पर दिखे जानवरों का अभिनय (एक्शन) करके दिखाओ। कौन-सा जानवर क्या हरकत करता होगा? जानवरों की अलग-अलग आवाज़ें भी निकालो।

जानवरों के चलने का ढंग अलग-अलग होता है। कुछ चलते हैं तो कुछ रेंगते हैं। कुछ उड़ते हैं तो कुछ तैरते हैं। इसके लिए कुछ पैरों की मदद लेते हैं तो कुछ पंखों की। कुछ तो पूँछ का सहारा भी लेते हैं।

तुमने भी बहुत सारे जानवर देखे होंगे। उनमें से कौन-कौन से जानवर –

उड़ते हैं ____________ ____________ ____________

रेंगते हैं ____________ ____________ ____________

चलते हैं ____________ ____________ ____________

फुदकते हैं ____________ ____________ ____________

पंख वाले हैं ____________ ____________ ____________

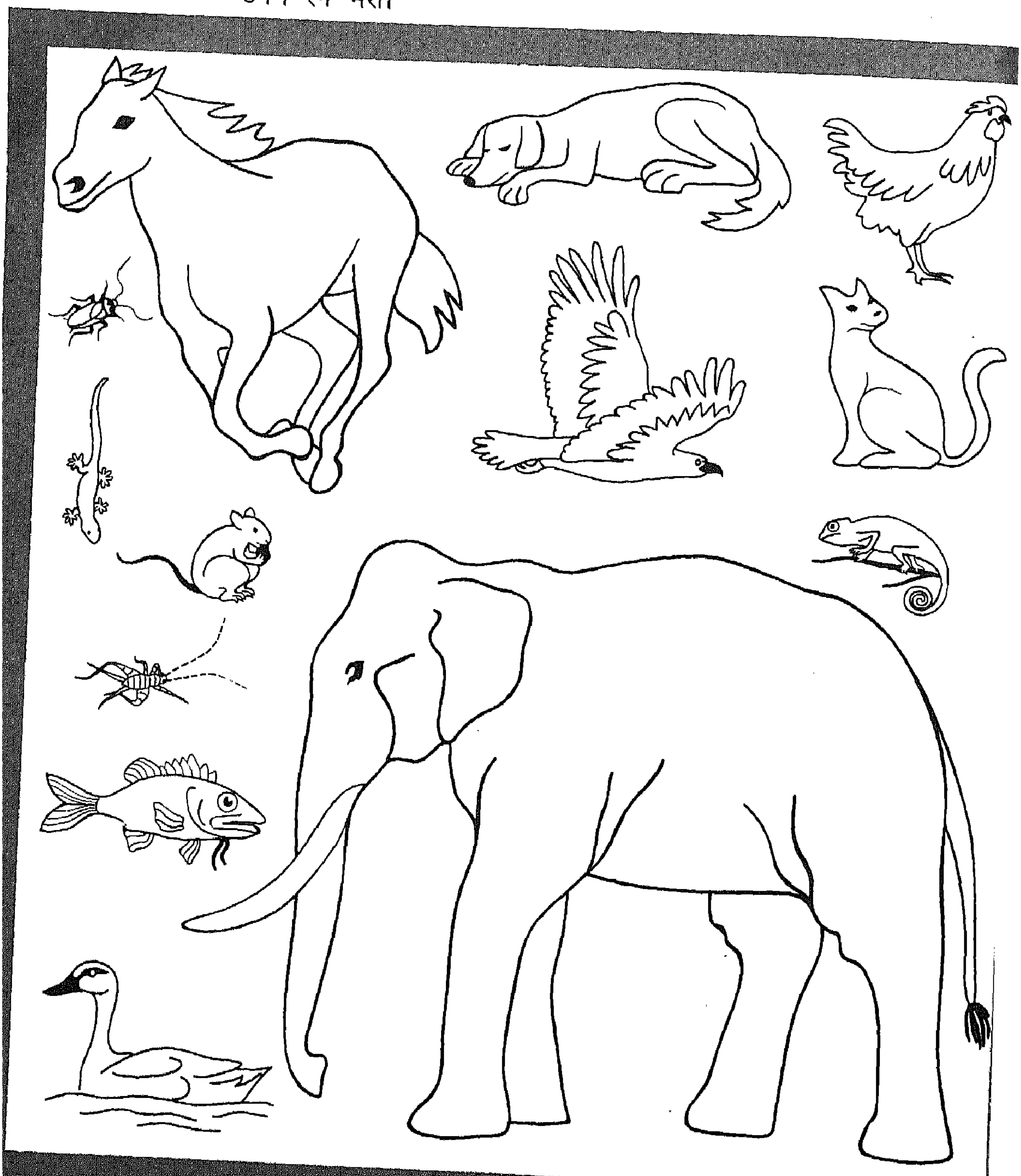
पैर वाले हैं ____________ ____________ ____________

पूँछ वाले हैं ____________ ____________ ____________

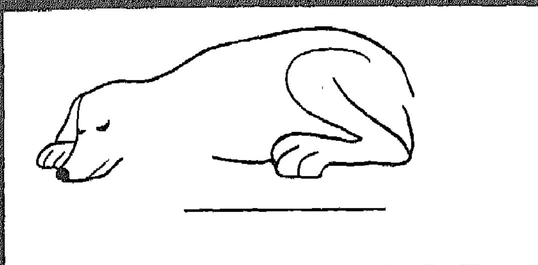
जानवर अलग-अलग जगह रहते हैं। कुछ पेड़ पर रहते हैं तो कुछ पानी में। कुछ ज़मीन पर रहते हैं तो कुछ उसके नीचे। कुछ तो हमारे घरों में भी रहते हैं।

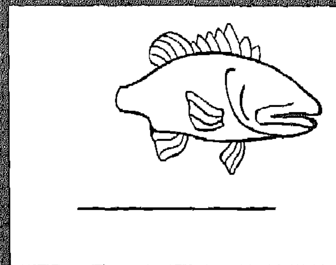
जानवरों के रंग, रूप, चाल, आवाज़ आदि देखना, उनकी नकल करना बच्चों को बहुत रोचक लगता है। जानवरों की विविधता देखकर उनके अलग-अलग समूह बनाने से ही वर्गीकरण की शुरुआत होती है।

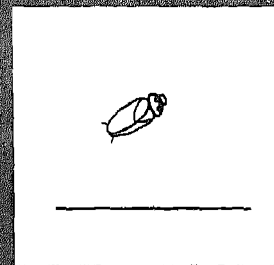
नीचे दिए चित्रों को देखो। इनमें से जो जानवर तुम्हारे घर में नहीं रहते, उनमें रंग भरो।

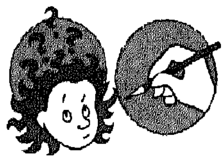


❖ यहाँ कुछ जानवरों के अधूरे चित्र हैं। इन्हें पूरा करो इनके नाम नीचे लिखो।









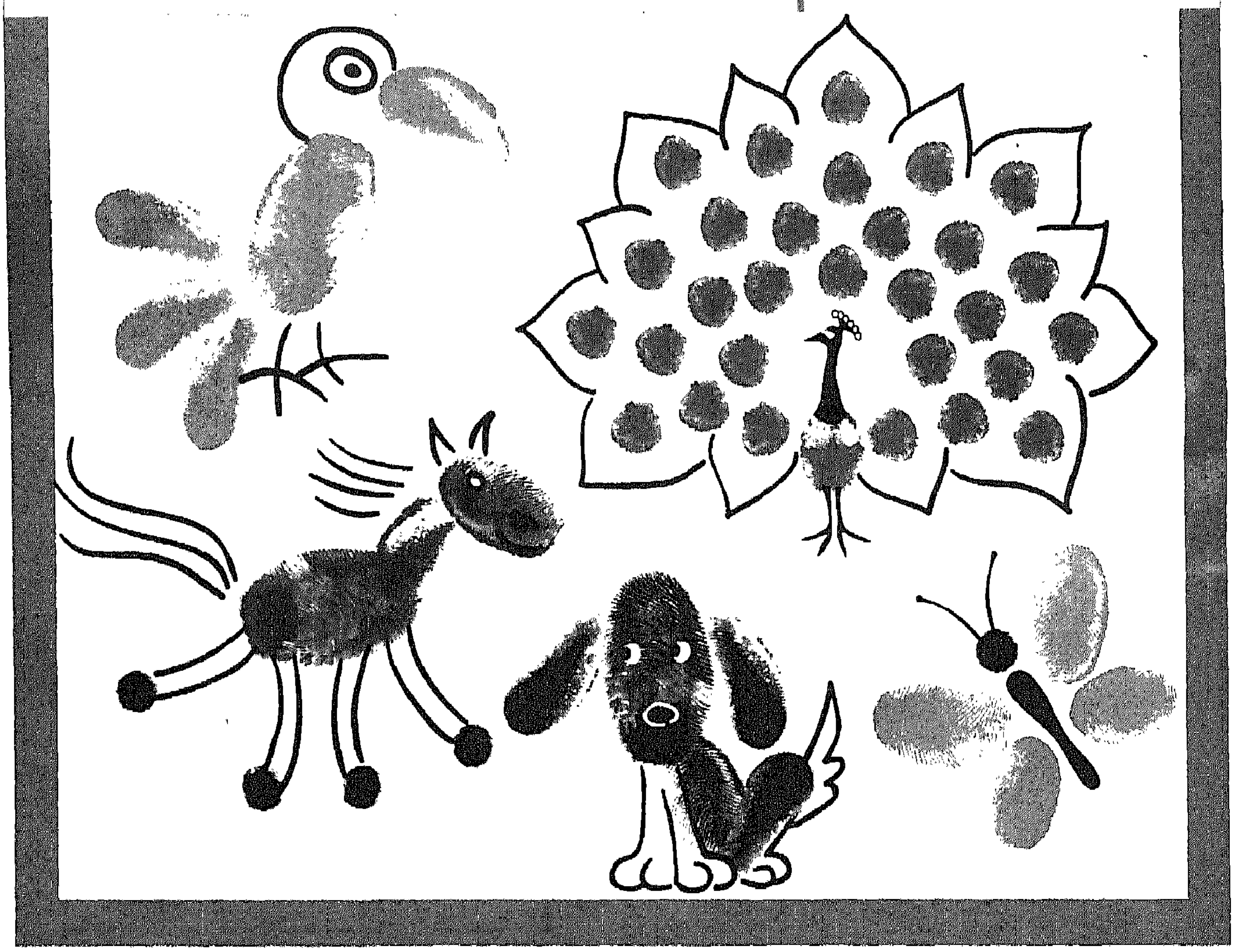
मैं कौन हूँ?

वर्ग पहेली में मेरा नाम ढूँढ़ो और उन पर घेरा ◯ लगाओ। एक उदाहरण दिया है।

1. छत पर बैठकर केला खाऊँ,
   इधर-उधर मैं कूद लगाऊँ।
2. दीवारों पर जाल बनाऊँ,
   जिसमें कीड़ों को फंसाऊँ।
3. जाग-जाग कर रात बिताऊँ,
   दिन निकले तो मैं सो जाऊँ।
4. टर्र-टर्र-टर्र की रट लगाऊँ,
   फुदक-फुदक पानी में जाऊँ।
5. बारिश के बाद नज़र मैं आऊँ,
   पाँव नहीं पर रेंगता जाऊँ।
6. धीमी चाल से चलता जाऊँ,
   दौड़ में फिर भी जीत मैं पाऊँ।

द	क	छु	आ	ग
र	बं	में	ढ	क
च	द	स	म	प
क	र	ह	उ	न
म	क	ड़ी	ल्लू	च
कें	चु	आ	म	छ

पहेली 6 का आधार पंचतंत्र की कहानी 'खरगोश और कछुआ' है। कहानी सुनाकर बच्चों को पंचतंत्र की और कहानियाँ पढ़ने के लिए भी प्रेरित करें।



चित्र में देखो और बताओ कौन-से निशान उंगलियों के हैं, और कौन-से अंगूठे के।

तुम भी इसी तरह स्याही या गीले रंग से कागज़ पर जानवरों के चित्र बनाओ। दिए गए चित्रों की नकल मत करना, अपने मन से बनाना। इन चित्रों से अपने स्कूल और घर को सजाओ।

बच्चों को सृजनात्मक गतिविधियों जैसे उंगलियों और अंगूठे पर रंग लगाकर चित्र बनाना अच्छा लगता है। उन्हें अपनी इच्छा से अलग-अलग तरह के डिज़ाइन बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

आओ कुछ चित्र बनाएँ

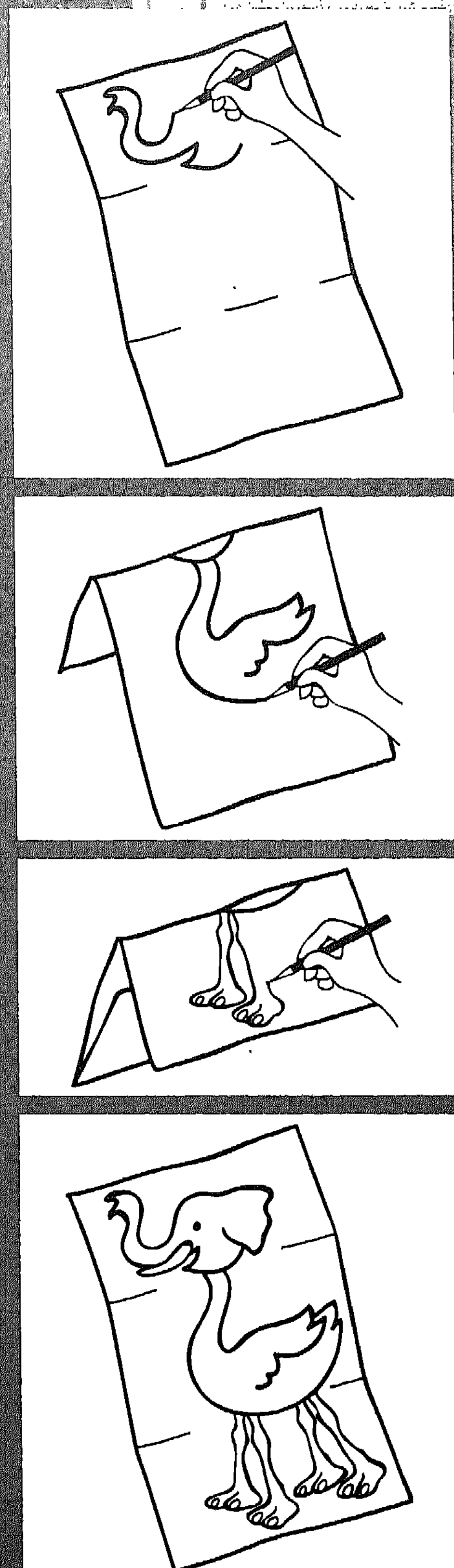
- किसी ऐसे जानवर का चित्र कॉपी में बनाओ, जिसे तुमने देखा है।
- अब अपनी पसंद के किसी एक जानवर का मुँह बनाओ और किसी एक जानवर के पैर बनाओ।

अब तीन बच्चे मिलकर एक चित्र बनाएँगे। एक कागज़ को तीन हिस्सों में मोड़ लो।

1. एक बच्ची कागज़ के पहले हिस्से में किसी जानवर का मुँह बनाए। कागज़ को मोड़ कर अपने चित्र को छुपा ले।
2. दूसरी बच्ची बीच वाले हिस्से में किसी और जानवर का धड़ बनाए।
3. तीसरी बच्ची किसी और जानवर के पैर बनाए।
4. अब इस पूरे कागज़ को खोलो और चित्र देखो।

बन गया न मज़ेदार जानवर!

अपने साथियों के चित्रों को भी देखो।



बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे जानवरों को ध्यान से देखें और अपने मन से चित्र बनाएँ। 'समूह में चित्र' बनाने में बच्चों को सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

किसी पेड़ के नीचे कुछ देर बैठो। ध्यान से देखो, पेड़ पर और उसके आस-पास कौन-कौन से जानवर हैं –

डालियों पर ______ ______ ______

पत्तों पर ______ ______ ______

तने पर ______ ______ ______

ज़मीन पर ______ ______ ______

पेड़ के आस-पास ______ ______ ______

अब इन जानवरों को एक क्रम में लिखो – छोटे से बड़े तक।

1. ______ 2. ______ 3. ______

4. ______ 5. ______ 6. ______

7. ______ 8. ______ 9. ______

10. ______ 11. ______ 12. ______

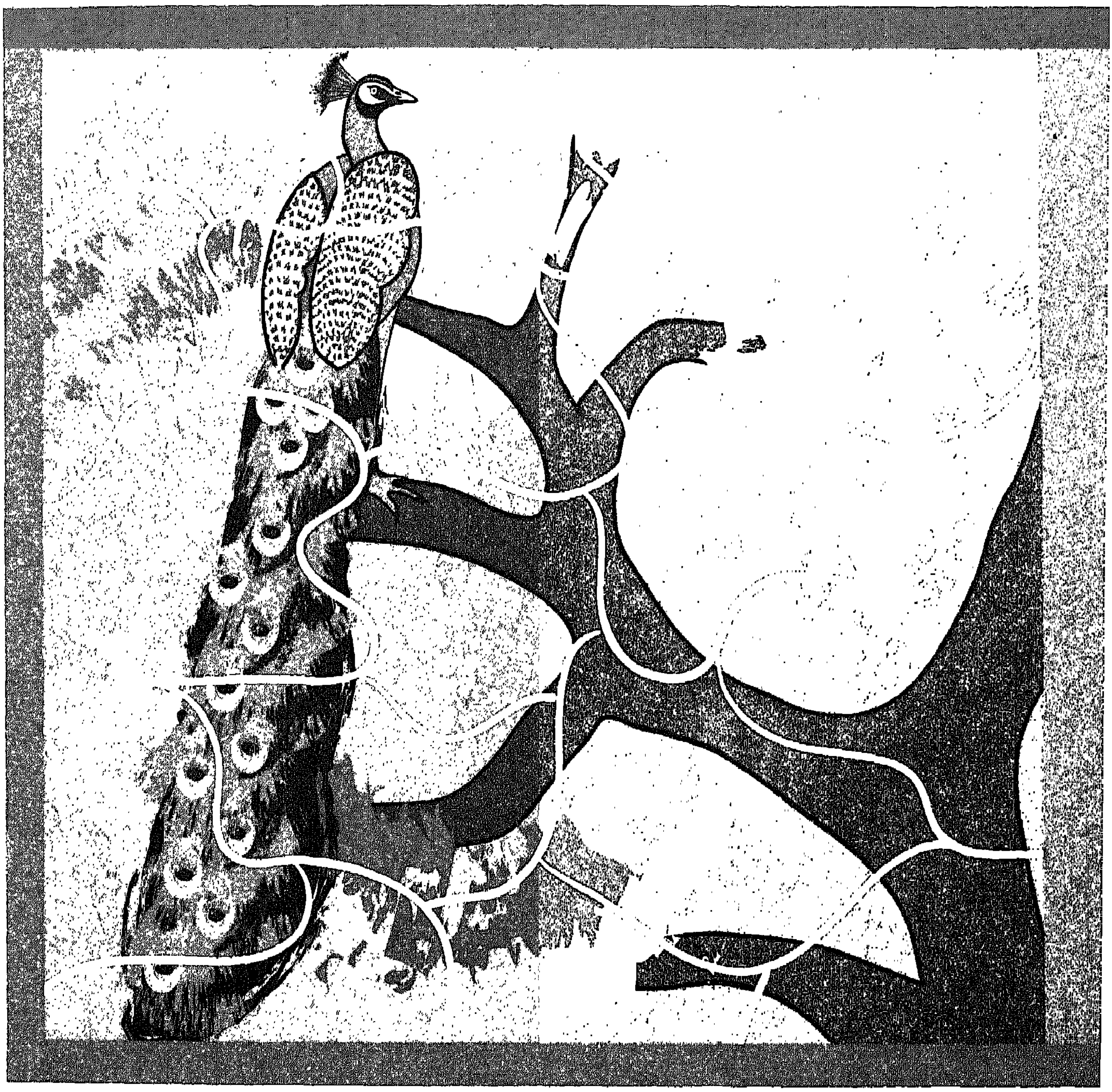
13. ______ 14. ______ 15. ______

जिग्सॉ का खेल

जिग्सॉ में किसी चित्र के ऐसे टुकड़े होते हैं कि उनको मिलाने के लिए बहुत दिमाग लगाना पड़ता है।

यह गतिविधि चीज़ों को क्रमानुसार लगाने का शुरुआती कदम है। क्रम में लगाना बच्चों के अपने अनुभव पर निर्भर करता है – चूहा चिड़िया से छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी।

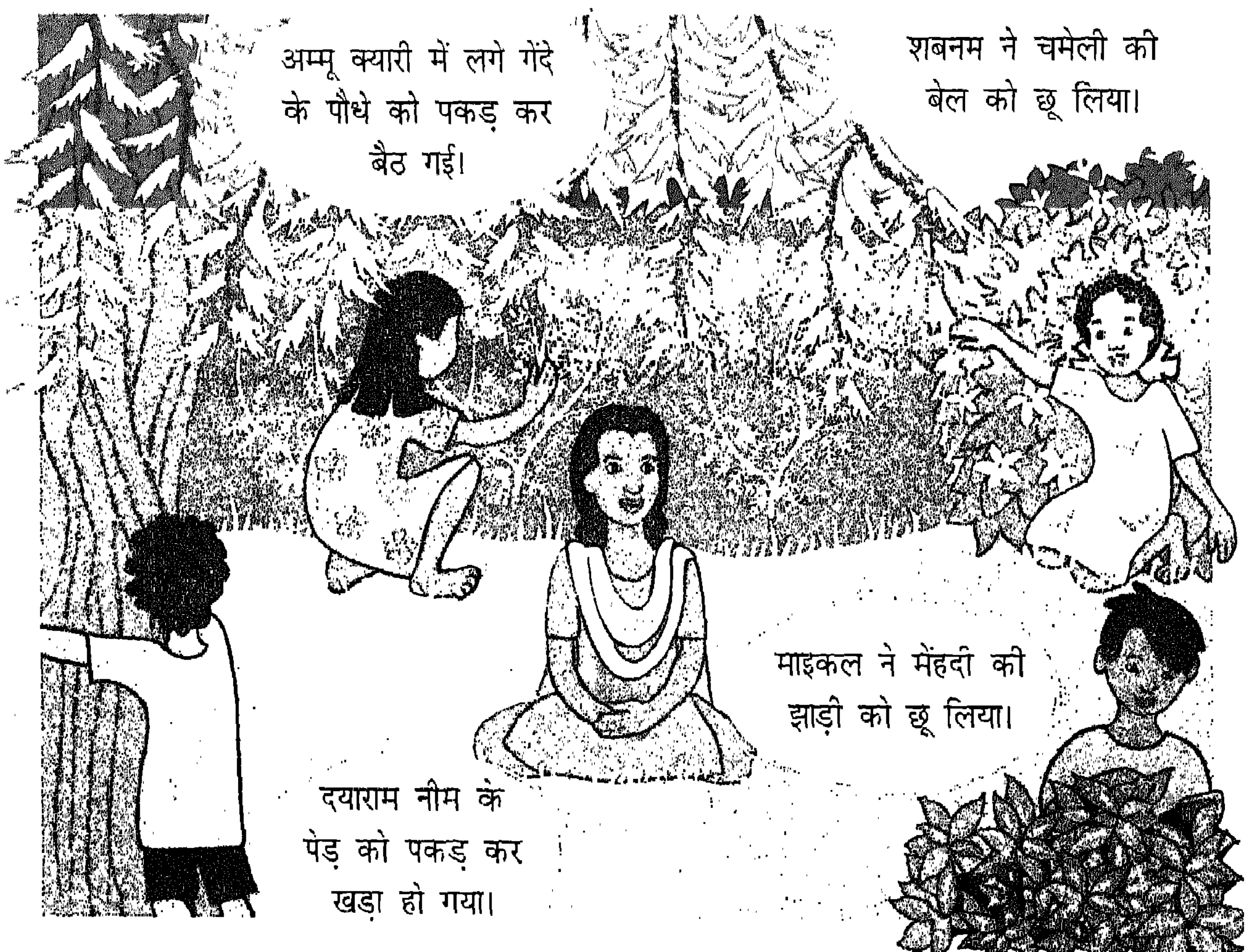
अब तुम भी किसी जानवर के चित्र से एक जिग्सॉ बनाओ। चित्र को गत्ते पर चिपकाओ। गत्ते को जानवर के आकार में काटो। अब इस गत्ते को आड़े-तिरछे टुकड़ों में काटो। टुकड़े अलग-अलग करके अपने दोस्तों से जोड़कर देखने को कहो। उनसे जानवर का नाम भी पूछो।



जिग्सॉ ऐसा बनाया जाए कि उसमें कुछ चुनौती हो – सीधे-सीधे टुकड़े न हों जो आसानी से ही जोड़े जा सकें।

रविवार को हम सब बच्चे पास के बगीचे में गए। वहाँ सबने **छुपनछुपाई** और **अंताक्षरी** खेली। बहुत मज़ा आया। फिर दीदी ने कहा – आओ, मैं तुम्हें एक नया खेल सिखाती हूँ। हमने पिछले कैंप में इसे खेला था। मैं बन जाती हूँ 'पौधों की परी'। 'पौधों की परी' जिस चीज़ का नाम लेगी, तुम्हें उसे छूना होगा।

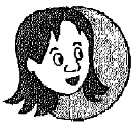
दीदी ने खेल शुरू किया। वह बोली – 'पौधों की परी' कहती है, किसी पौधे को छू लो। इतना सुनते ही सब बच्चे पौधों को छूने भागे।



बच्चों से इस बारे में बातचीत की जा सकती है कि उनके यहाँ छुपनछुपाई, अंताक्षरी आदि खेलों को किस नाम से पुकारा जाता है।

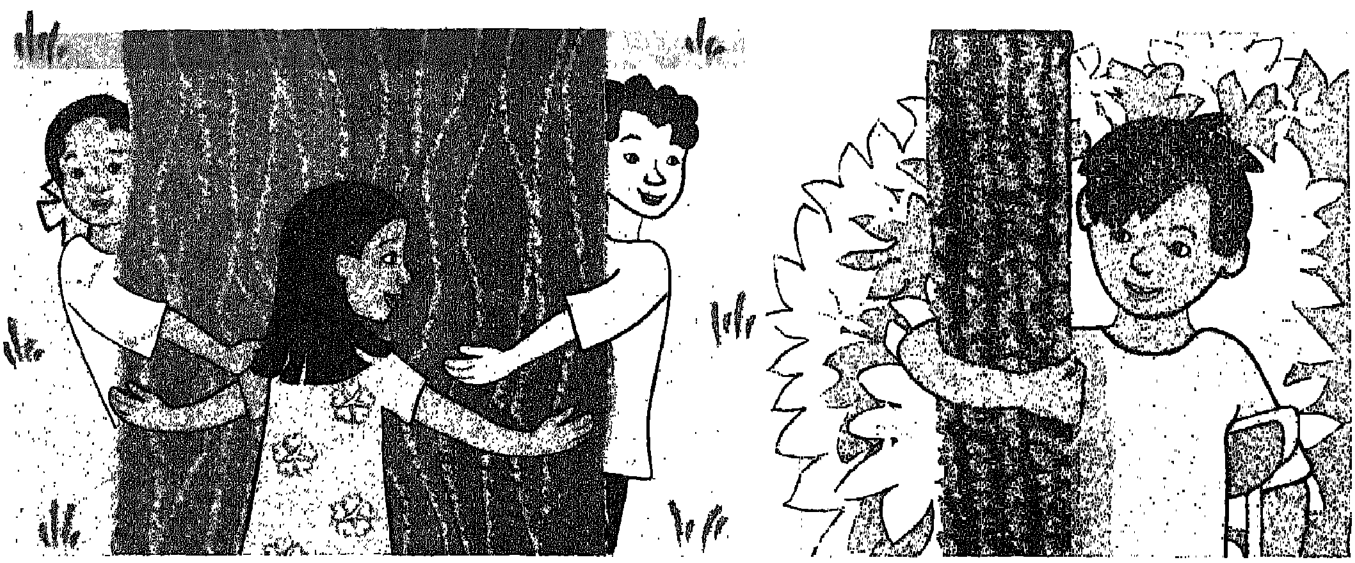
दीदी बोली – अरे वाह! सबने एक-एक पौधे को छू लिया। ज़रा देखो तो, सबके पौधे कितने अलग-अलग हैं।

शबनम बोली – दीदी, आप भी तो छोटे-छोटे पौधों पर बैठी हो।



सोचो तो दीदी किन पौधों पर बैठी होंगी?

खेल फिर शुरू हुआ। अब 'पौधों की परी' ने कहा – एक ऐसे पेड़ को छुओ जिसका तना या तो बहुत मोटा हो या फिर पतला हो।



बच्चे फिर भागे मोटे और पतले तने वाले पेड़ों को छूने।

क्या तुमने कोई ऐसा पेड़ देखा है जिसका तना चित्र में दिखाए पेड़ जितना मोटा हो?

माइकल को खेल बड़ा रोचक लगने लगा था। खेल में परी बनकर वह सब बच्चों पर अपना हुक्म जो चला सकता था। वह बोला – अब मैं बनूँगा 'पौधों की परी'। पर मैं 'परी'! चलो, बन जाता हूँ। सब हँसे और करने लगे 'परी' के आदेश का इंतज़ार।

माइकल बोला – सब बच्चे जल्दी से मुझे कुछ पत्ते लाकर दो।

दीदी ने कहा – लेकिन ध्यान रहे तोड़कर नहीं।

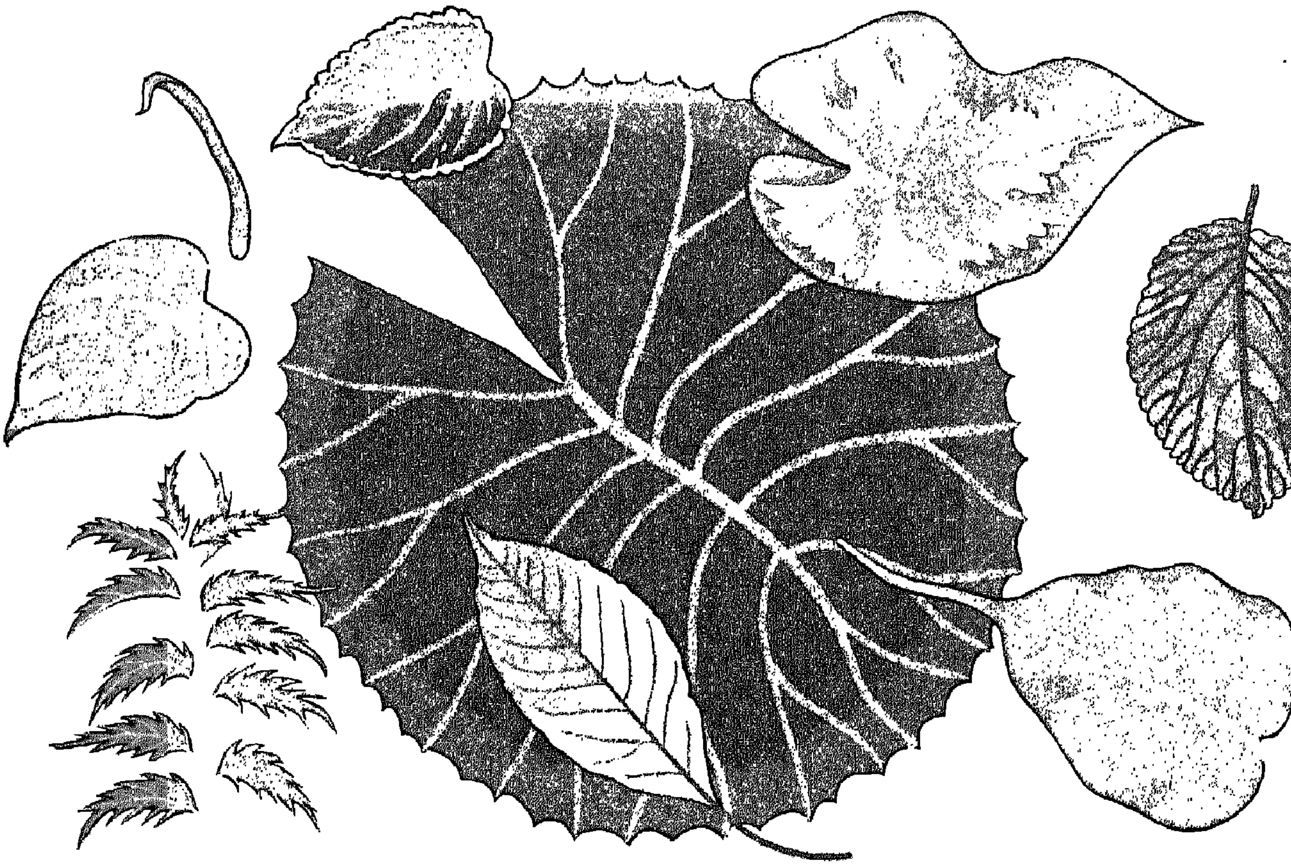
सब दौड़ पड़े और जो पत्ते नीचे पड़े मिले उन्हें उठा लाए।



यह खेल बच्चे खुद खेलकर पेड़-पौधों में पाई जाने वाली विविधता को देखकर महसूस कर पाएँगे। अलग-अलग बच्चे यदि 'पौधों की परी' बनेंगें तो अच्छा होगा क्योंकि वे खुद वर्गीकरण का आधार चुनेंगें।



क्या सभी पत्तों का रंग, आकार और किनारे एक जैसे हैं?



दयाराम ने कहा – मुझे तो पता ही नहीं था कि पत्ते इतनी तरह के होते हैं। देखो, कोई गोल है, कोई लंबा और कोई तिकोना!

अम्मू बोली – इन सबके रंग भी कितने अलग-अलग हैं – कोई हल्का हरा तो कोई गाढ़ा हरा। कोई तो पीला, लाल, बैंगनी है। एक पत्ता है तो हरा, पर उसमें सफ़ेद धब्बे हैं।

शबनम बोली – देखो, पत्तों के किनारे भी तो कितने अलग-अलग हैं। किसी पत्ती का किनारा सीधा है, तो किसी का कटा-फटा। कुछ के किनारे तो आरी की तरह हैं।

अब मैं बनूँगी 'पौधों की परी' – अम्मू और शबनम इकट्ठे बोले।

दीदी ने कहा – अगले इतवार को बनना। अब घर जाने का समय हो गया है।

रास्ते में दीदी ने सब बच्चों को एक कविता सुनाई –

पत्ते

हरे-हरे और गीले, ढीले,
लाल, बैंगनी और कुछ पीले।
तरह-तरह के होते पत्ते,
बड़ी तरह के होते पत्ते।
कुछ हाथी के कान के जैसे,
फड़फड़ाएँ शैतान के जैसे।
कटे-फटे कुछ मुड़े-तुड़े से,
खाएँ कुछ को पान के जैसे।
सुबह सवेरे, बड़े अँधेरे,
ओस के आँसू रोते पत्ते।
लगे कोई तितली कोई भौंरा,
रूएँदार कोई बिल्कुल कोरा।
बनता कोई सूख के काँटा,
कोई पिचककर बने कटोरा।
साँय-साँय, सन्-सन्, फड़-फड़,
हवा चले तो करते बड़-बड़।
दिन भर रहते खिले खिले से,
सूरज के संग सोते पत्ते।
तरह-तरह के होते पत्ते,
बड़ी तरह के होते पत्ते।

– विजेंद्र पाल सिसोदिया

बच्चों को कविता गाना अच्छा लगता है। उन्हें ज़बरदस्ती याद करने को नहीं कहा जाए। अच्छा होगा कि सभी बच्चे कक्षा में साथ-साथ गाएँ।

कविता के चारों तरफ़ बने पत्तों में रंग भरो।

कुछ पत्ते इकट्ठे करो जैसे — नींबू, आम, नीम, तुलसी, पुदीना, हरा धनिया। इन पत्तों को मसलो और उनकी महक सूँघो। क्या सभी पत्तों की महक एक-सी है? क्या तुम सिर्फ महक से इन पत्तों को पहचान पाओगे?

देखो, कितने सुंदर चित्र बने हैं। हाँ, यह सूखे पत्तों से ही बने हैं।

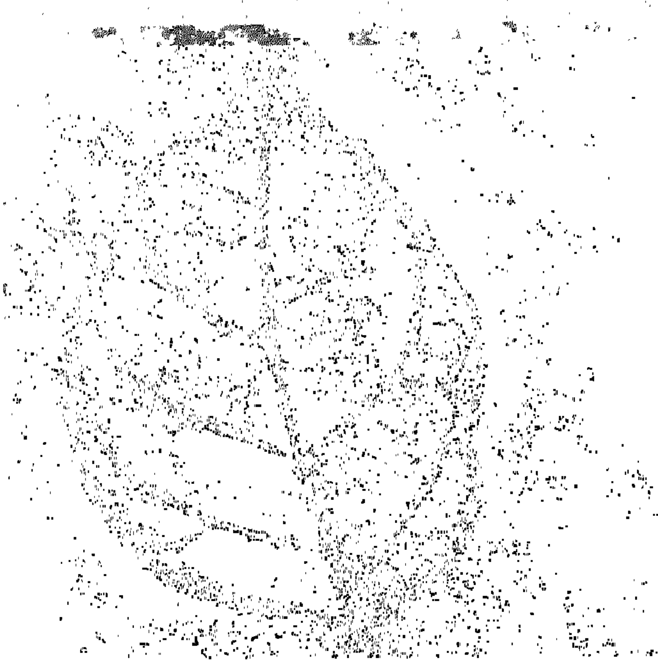


तुम भी अब सूखे पत्तों से अलग-अलग जानवरों के चित्र अपनी कॉपी में बनाओ।

मशहूर कलाकार विष्णु चिंचालकर (इंदौर, मध्य प्रदेश) ऐसे सूखे पत्तों से बढ़िया चित्र बनाते थे। यह कलाकारी भी उन्हीं से प्रेरित है।

❋ दीदी ने सबको पत्तों और तनों की **छाप** लेना भी सिखाया। देखो कैसे।

एक कागज़ और मोमी रंग या पेंसिल लो। पत्ते को मेज़ या ज़मीन पर रखो।



ध्यान रहे जिस तरफ़ पत्ते की नसें उभरी हुई हैं, उसे ऊपर की तरफ़ रखना है।

कागज़ को पत्ते पर रखो।

अब हल्के हाथ से कागज़ पर मोमी रंग या पेंसिल फेरो। पत्ते और कागज़ को हिलाना नहीं।

❋ अब इसी तरह किसी तने की छाप भी लो।



इसके लिए एक कागज़ को पकड़कर तने पर रखो और उस पर रंग फेरो। देखो, तुम्हारे कागज़ पर तने की छाप बन गई!

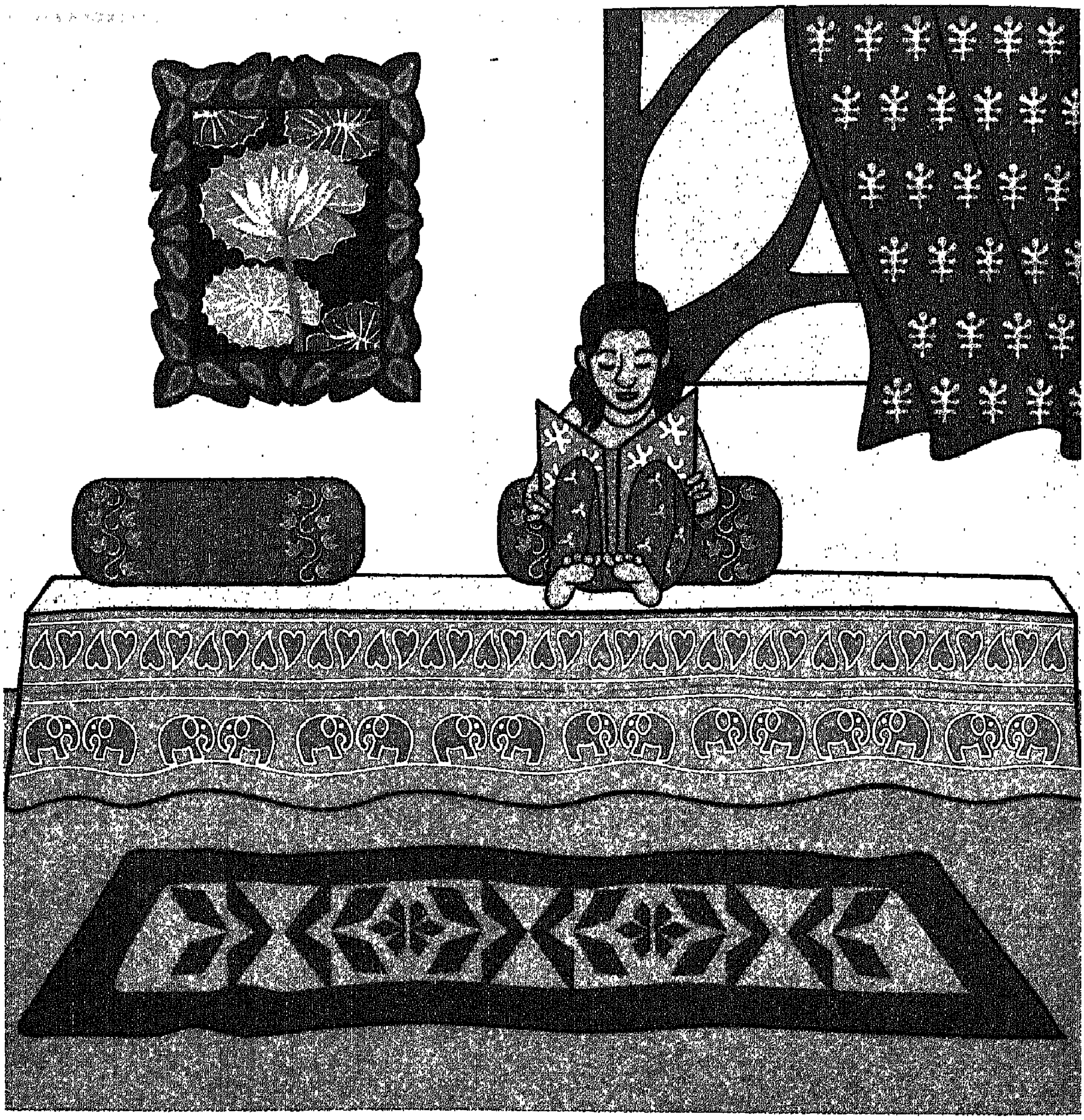
अब एक-दूसरे की बनाई छाप को देखो। क्या सब पेड़ों की छाप एक जैसी है?

कौन-से पत्ते की छाप अच्छी बनी?

किस पेड़ की छाप लेना मुश्किल था? क्यों?



चित्र में कौन-कौन सी चीज़ों पर फूल-पत्तियों का डिज़ाइन बना हुआ है?



पेड़-पौधों के बारे में जानकारी लेने के लिए बच्चे अपने बड़ों से पूछें अथवा किसी किसान या माली से भी पता करें।

❁ अपने घर में देखो किन-किन चीज़ों पर फूल-पत्तियों के डिज़ाइन बने हैं?

❁ तुमने बहुत सारे पेड़-पौधे देखे हैं। उनमें से तुम कितनों के नाम जानते हो? उनके नाम लिखो।

❁ ऐसे पेड़-पौधों के नाम लिखो जिनको तुमने कभी नहीं देखा, लेकिन उनके नाम सुने हैं।

❁ किसी बुजुर्ग से पता करो। क्या कोई ऐसे पेड़-पौधे हैं, जो उस समय होते थे जब वे छोटे थे, लेकिन अब वे दिखाई नहीं देते?

❁ क्या कोई ऐसे पेड़-पौधे हैं, जो पहले नहीं थे, पर अब दिखते हैं?

पेड़ से दोस्ती

तुम्हारे स्कूल या घर के आस-पास कोई एक पेड़ ढूँढ़ो और उससे दोस्ती करो। एक लंबी दोस्ती!

❁ यह किस चीज़ का पेड़ है? यदि नहीं जानते तो बड़ों से पूछो।

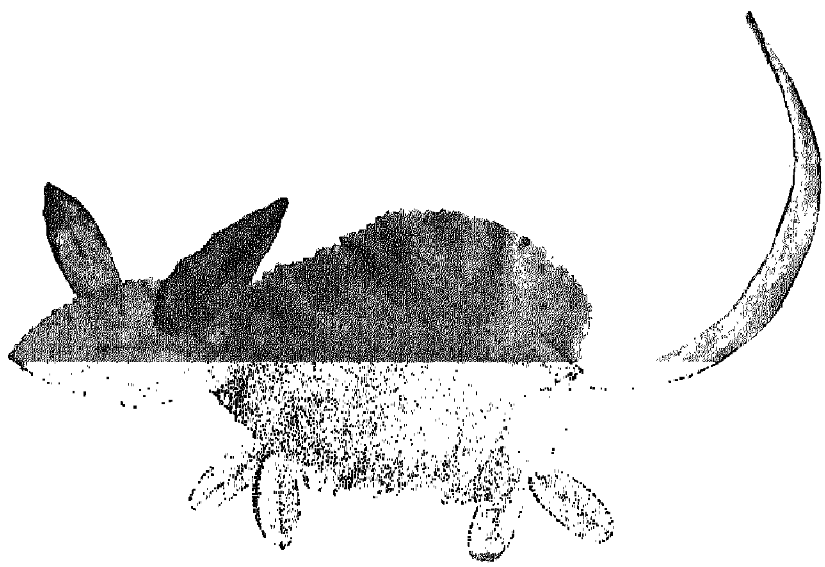
❁ क्या तुम दोस्त पेड़ को कुछ खास नाम देना चाहोगे? क्या रखोगे उसका नाम?

बच्चों को किसी एक पेड़ से रिश्ता बनाने के लिए प्रेरित करें – उसे पानी देना, उसकी देखभाल करना, उसको बारीकी से देखना आदि। इससे पर्यावरण के प्रति उनका लगाव भी बढ़ेगा।

* क्या यह पेड़ फूल या फल देता है? बताओ कौन-से?
* इस पेड़ के पत्ते कैसे हैं?
* क्या इस पेड़ पर पक्षी या अन्य जानवर रहते हैं? कौन-से?



अपने इस दोस्त पेड़ के बारे में और भी बहुत-सी बातें पता करो और सभी को बताओ।



3 पानी रे पानी

पानी

मुँह धोऊँगा पानी से,
मुन्ना कहता नानी से।
प्यासे पानी पीते हैं,
पानी से सब जीते हैं।
जाने कबसे पानी है,
कितनी बड़ी कहानी है।
कहीं ओस है, बर्फ कहीं,
पानी ही क्या भाप नहीं?
सब रूपों में पानी है,
कहती ऐसा नानी है।
नदियाँ बहती कलकलकल,
झरने गाते छलछलछल।
तालों में लहराता जल,
कूँओं में आता निर्मल।
धरती पर जीवन लाया,
खेत सींचकर लहराया।
पर जब बाढ़ें लाता है,
भारी आफत ढाता है!

– श्रीप्रसाद

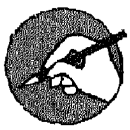
अपने इलाके में गाई या सुनाई जाने वाली पानी से जुड़ी कविताएँ और गीत बच्चे कक्षा में गाएँ। इससे अपने समुदाय के ज्ञान और कला के प्रति उनका लगाव बढ़ेगा।



❋ क्या तुम पानी पर कोई कविता या गाना जानते हो? कक्षा में सुनाओ।

❋ कविता में पानी से जुड़ी कौन-सी आवाज़ों की बात की गई है? कुछ आवाज़ें तुम भी बताओ।

❋ कवि ने क्या कहा है – पानी कहाँ-कहाँ है?



❋ नीचे दिए जिन कामों में पानी की ज़रूरत है, उन पर '✓' का निशान लगाओ।

खेलने में ☐	गाना गाने में ☐	चाय बनाने में ☐
आटा गूँधने में ☐	लिखने में ☐	नाव चलाने में ☐
चित्र बनाने में ☐	पौधों को उगाने में ☐	पंखा चलाने में ☐

❋ ऐसे चार काम लिखो जो

◆ तुम पानी के बिना कर सकते हो।

__________ __________ __________ __________

◆ तुम पानी के बिना नहीं कर सकते।

__________ __________ __________ __________

❋ किसके लिए कितना पानी?

इन कामों में सबसे ज़्यादा पानी जिसमें लगता है, उसे पहले लिखो। बाकी को ज़्यादा से कम के क्रम में लिखो।

कामः नहाने में, पीने में, घर धोने में, खेत में पानी देने में, आटा गूँधने में।

1. __________ 2. __________ 3. __________

4. __________ 5. __________

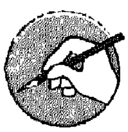
तुमने कविता में नदी, झरने, तालाब और कुएँ के बारे में पढ़ा। इनसे हमें पानी मिलता है। तुम पानी कहाँ-कहाँ से लाते हो? तुम्हारे घर में या घर के पास इनमें से जो-जो हैं, उन पर ◯ लगाओ।

झील, कुआँ, तालाब, झरना, सागर, नदी,

नहर, ट्यूबवैल, नल, नलकूप, टाँका, गर्मसोता



क्या तुमने कभी ज़मीन में से गर्म पानी निकलते देखा है? कहाँ?

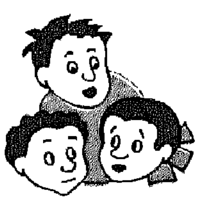


- क्या तुम्हारे गाँव या शहर में कोई नदी बहती है? यदि हाँ तो उसका नाम क्या है? ______________________

- क्या तुम कुछ नदियों के नाम जानते हो? उनके नाम लिखो।

____

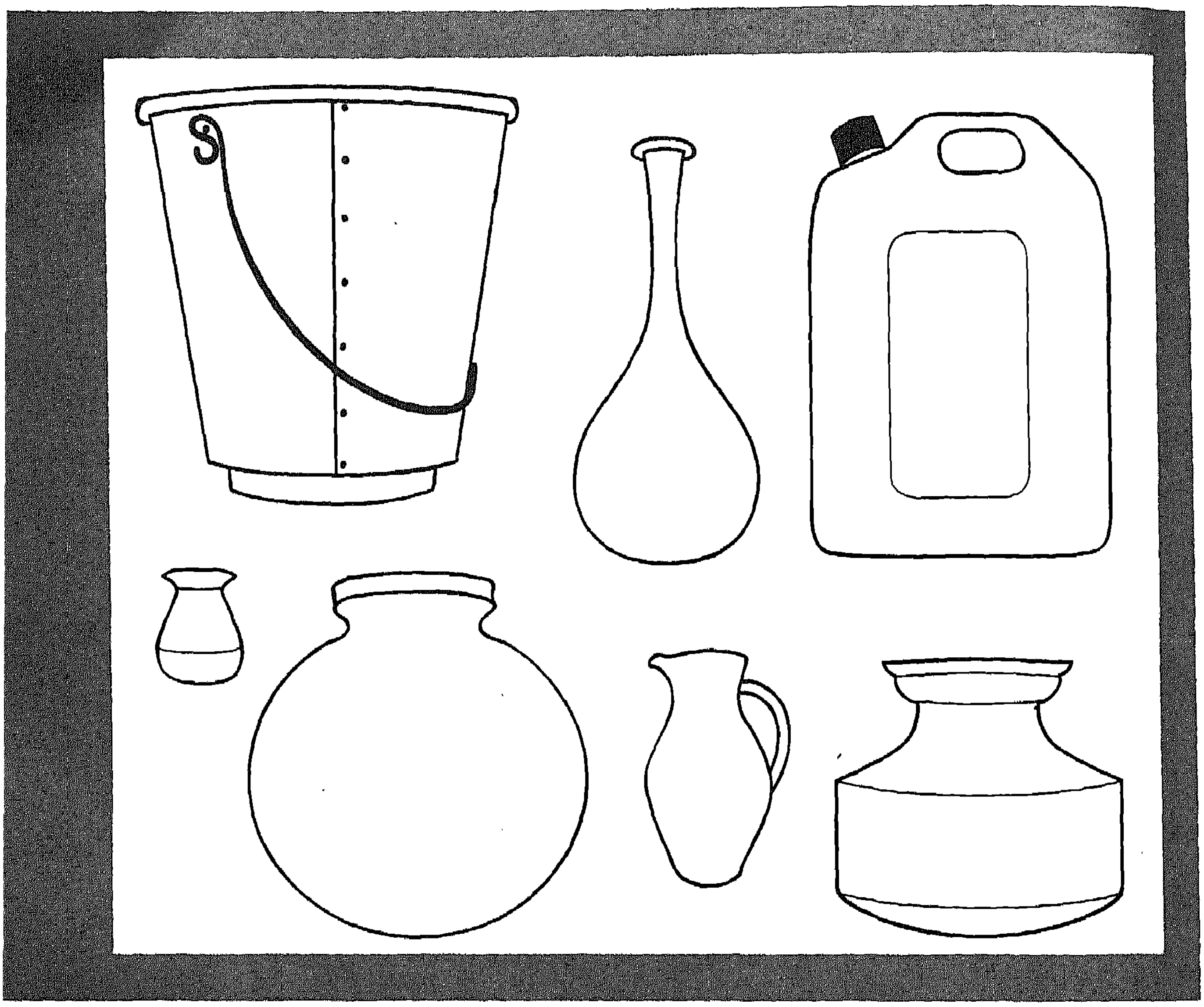
____



- तुम्हारे घर में पीने का पानी कहाँ से आता है?
- क्या पानी लाने घर से दूर जाना पड़ता है? पानी लाने में कितना समय लगता है?
- क्या आस-पास के सभी लोग वहीं से ही पानी लेते हैं?
- क्या ऐसे भी कुछ लोग हैं, जिनको वहाँ से पानी भरने नहीं दिया जाता?
- पानी को भरकर रखने की ज़रूरत क्यों पड़ती है?
- तुम्हारे घर के लिए पानी भरने का काम कौन-कौन करते हैं?

कई जगह कुछ लोगों को आम स्रोत से पानी नहीं लेने दिया जाता। इस पर चर्चा करना ज़रूरी है, जिससे भेदभाव जैसे विषयों के प्रति संवेदनशीलता बढ़े।

❋ नीचे दिए गए चित्रों में से उन में रंग भरो, जिनमें तुम पानी भरकर रखते हो।



❋ तुम्हारे घर में यदि किन्हीं और चीज़ों में पानी भरकर रखा जाता है, तो कॉपी में उनका चित्र बनाओ और नाम भी लिखो।

चित्र में दिए सभी बर्तनों में यदि ऊपर तक पानी भरा हो तो –

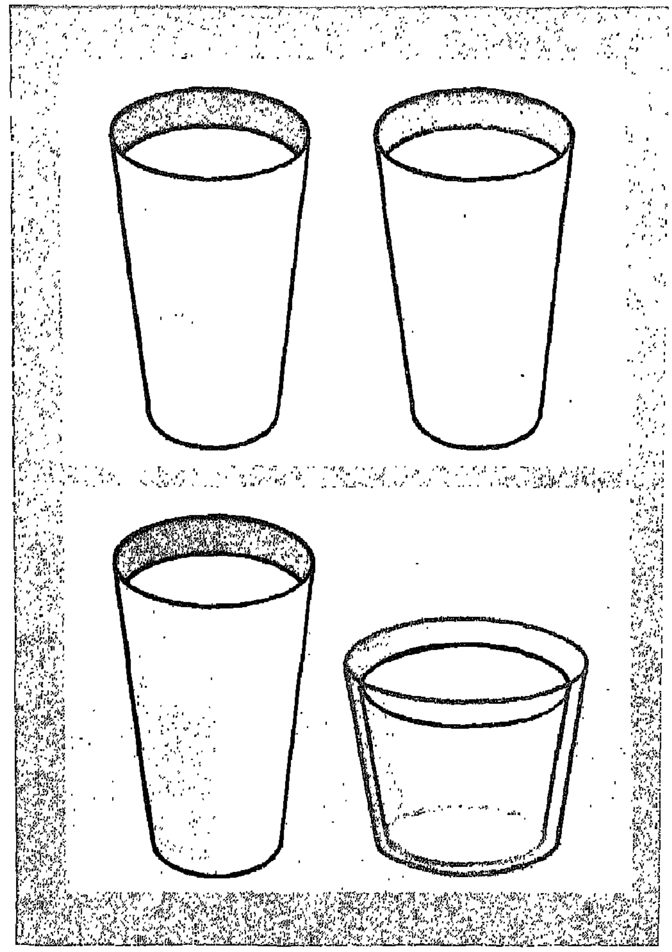
1. किस बर्तन में सबसे कम पानी होगा?
2. किस बर्तन में सबसे ज़्यादा पानी होगा?

यह तुम कैसे कह सकते हो?

छुटकी चकराई

हिरेन और छुटकी को बहुत गर्मी लग रही थी। अंकल ने कहा – रुको, मैं तुम्हें आम का पन्ना देता हूँ। उन्होने दो स्टील के गिलास भर कर बच्चों को पकड़ाए। पर छुटकी ने ज़िद पकड़ी – मुझे तो काँच के गिलास में ही पीने में मज़ा आता है। अंकल ने पन्ना एक काँच के गिलास में पलट दिया। पर नहीं, छुटकी फिर भी नहीं मानी। बोली – अंकल! आपने तो मुझे कम दिया है।

तुम्हें क्या लगता है? क्या छुटकी के गिलास में कम पन्ना था?





पानी कहाँ-कहाँ से मिलता है? वर्ग पहेली में ढूँढ़ो और ◯ लगाओ। क्या तुम दस और ढूँढ़ पाए?

बा	व	ड़ी	झी	न
रि	सा	कु	आँ	ल
श	सो	ग	झ	ता
च	न	ह	र	ला
श्मा	दी	टाँ	का	ब

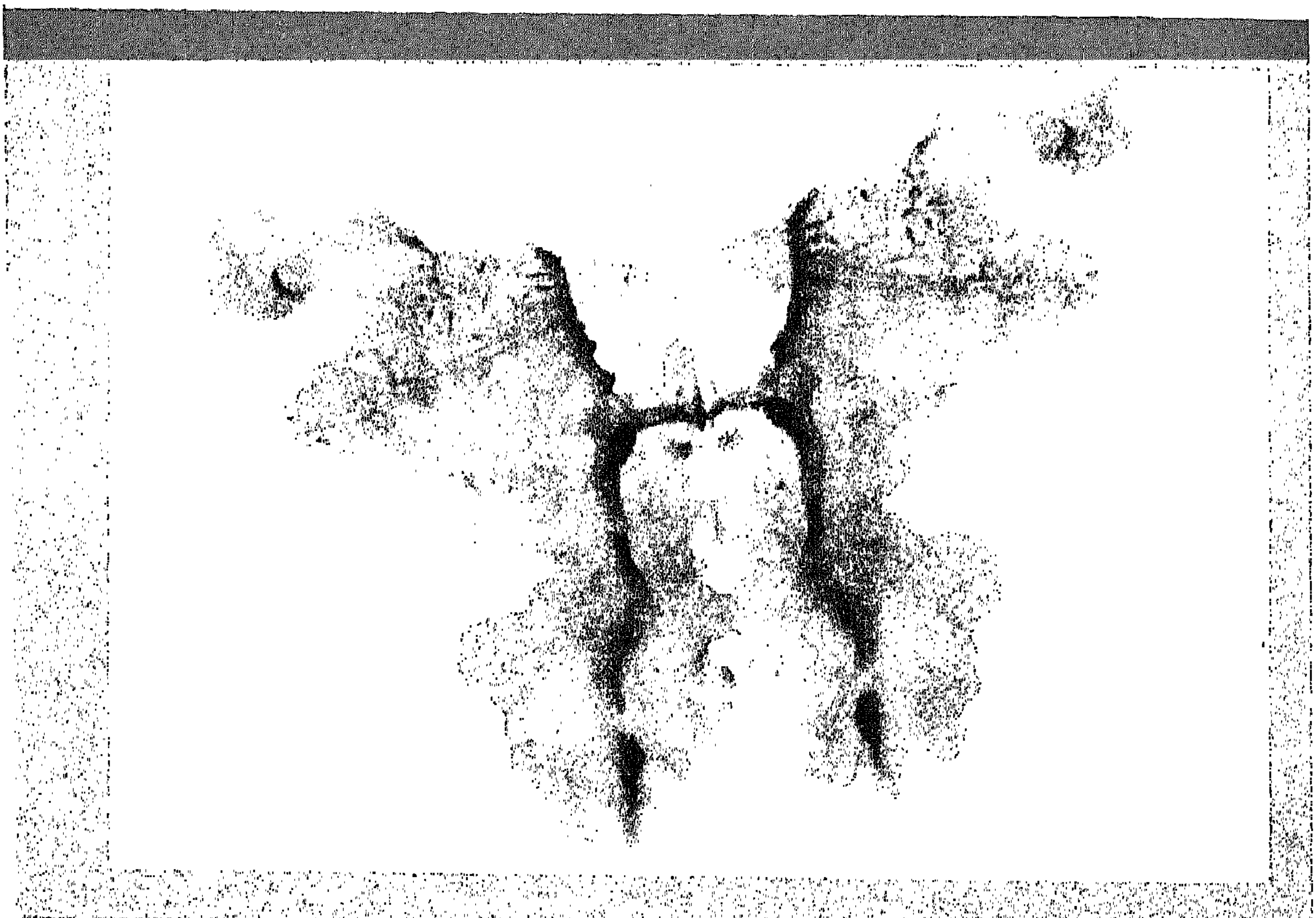
'छुटकी चकराई' को करके दिखाएँ, फिर बच्चों से पूछें।

इनमें से जो अलग है उस पर ◯ लगाओ और बताओ क्यों?

- नदी, पहाड़, तालाब, नल, सोता।
- नहाना, कपड़े धोना, तैरना, कंघी करना, आटा गूँधना।
- मछली, बत्तख, बंदर, मगरमच्छ, कछुआ।
- कार, नाव, बस, रेलगाड़ी, साइकिल।

रंगों से खेल

एक कागज़ को बीच में से मोड़ो। अब खोलकर रंगों की कुछ बूँदें डालो। कागज़ को फिर से मोड़कर दबा दो। खोलकर देखो क्या बना?



स्कूल में हम कितनी सारी बातें सीखते और समझते हैं। पर जानते हो, हमारा पहला स्कूल कौन–सा है? वह है हमारा परिवार। हम अपने परिवार से ही सबसे पहले सीखना शुरू करते हैं। हम अपने परिवार से सबसे ज़्यादा करीब से जुड़े होते हैं। पर हम उसके बारे में शायद ही कभी सोचते हैं। आओ, अपने परिवार के बारे में सोचें और बातें करें।

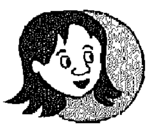
अपने परिवार का चित्र बनाओ। यदि फोटो है तो वह चिपकाओ।

❊ तुम्हारे परिवार में कौन–कौन हैं? उनका नाम और उनसे तुम्हारा क्या रिश्ता है, लिखो।

नाम	तुमसे रिश्ता	नाम	तुमसे रिश्ता
________	________	________	________
________	________	________	________
________	________	________	________

❖ अपने परिवार के दो लोगों में आपस का रिश्ता लिखो – जैसे पति-पत्नी भाई-बहन, माँ-बेटी...।

परिवार के दो लोगों का नाम		आपसी रिश्ता
________	________	______________
________	________	______________
________	________	______________
________	________	______________



यहाँ कुछ लोगों के चित्र बने हैं। इनमें दो लोग बिल्कुल एक जैसे दिखते हैं। इनका आपस में क्या रिश्ता हो सकता है?



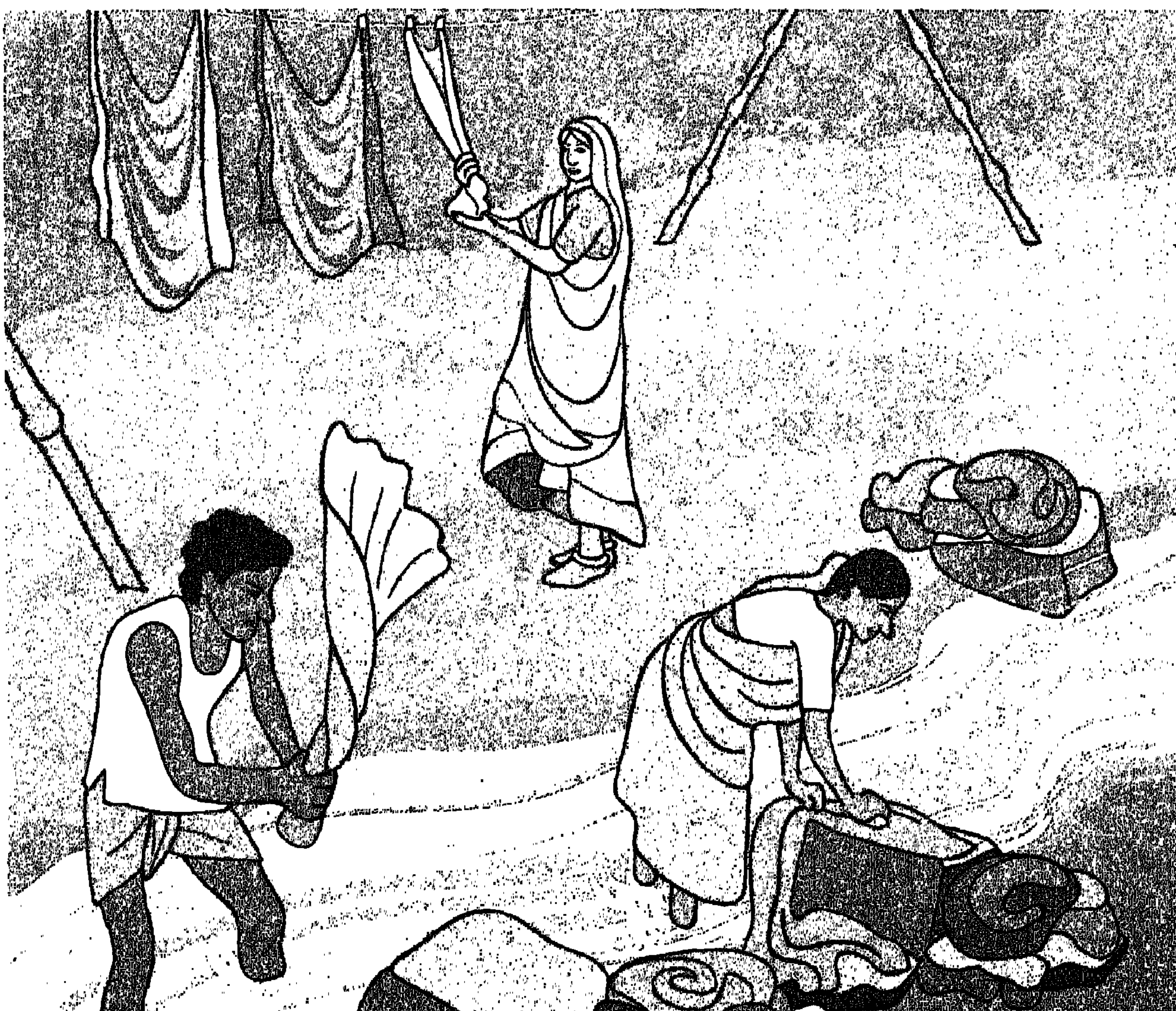
तुम्हारी कौन-सी बात परिवार में किसी से मिलती-जुलती है – जैसे तुम्हारी आवाज़, तुम्हारी आँखें, तुम्हारे बाल, तुम्हारी चाल...? किससे और कैसे?

_______________ _______________

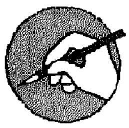
_______________ _______________

तुम्हें घर में प्यार से किस नाम से बुलाते हैं? तुम अपने घर के लोगों को किस-किस तरह से बुलाते हो?

आओ, अब अनवरी के परिवार के बारे में कुछ पढ़ें।



अनवरी के परिवार के सभी बड़े लोग धोबी का काम करते हैं। परिवार के सभी सदस्य अपनी-अपनी तरह से कपड़े धोने, सुखाने, इस्त्री करने में हाथ बँटाते हैं। अनवरी और उसका चचेरा भाई तौफ़ीक भी अब यह काम सीख रहे हैं।



- क्या तुम्हारा परिवार भी मिलकर कोई काम-धंधा करता है? यदि 'हाँ' तो क्या?

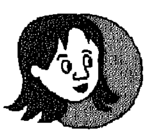
____

- इस काम में तुम क्या मदद करते हो?

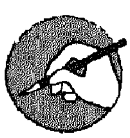
____

____

हम परिवार में एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखते हैं। अनवरी के चाचा ने उसे और परिवार के सभी बच्चों को साइकिल चलाना सिखाया।



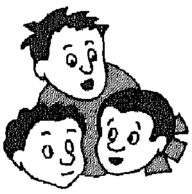
तुमने भी अपने परिवार से बहुत कुछ सीखा है। क्या और किससे? क्या किसी ने तुमसे भी कुछ सीखा है?



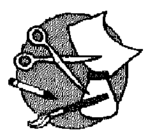
कुछ और बातों के बारे में सोचो और लिखो जैसे –

- जब मैं दुःखी होती हूँ, तब मैं __________ के पास जाती हूँ।
- जब मैं पुराने दिनों के बारे में जानना चाहती हूँ, तब मैं __________ के पास जाती हूँ।
- जब मैं अपनी कुछ राज़ की बात बताना चाहती हूँ, तब मैं __________ के पास जाती हूँ।
- जब मुझसे कोई गलती हो जाती है तो मैं __________ के पास जाती हूँ।

जूते बाहर उतारकर ही घर में आना – यह सुरेखा के घर का रिवाज़ है। लेकिन उसके कुछ दोस्त जूते-चप्पल पहनकर घर के अंदर आ जाते हैं। इससे सुरेखा के बाबा नाराज़ होते हैं।



क्या तुम्हारे परिवार के अपने कुछ रिवाज़ हैं? कौन-कौन से?



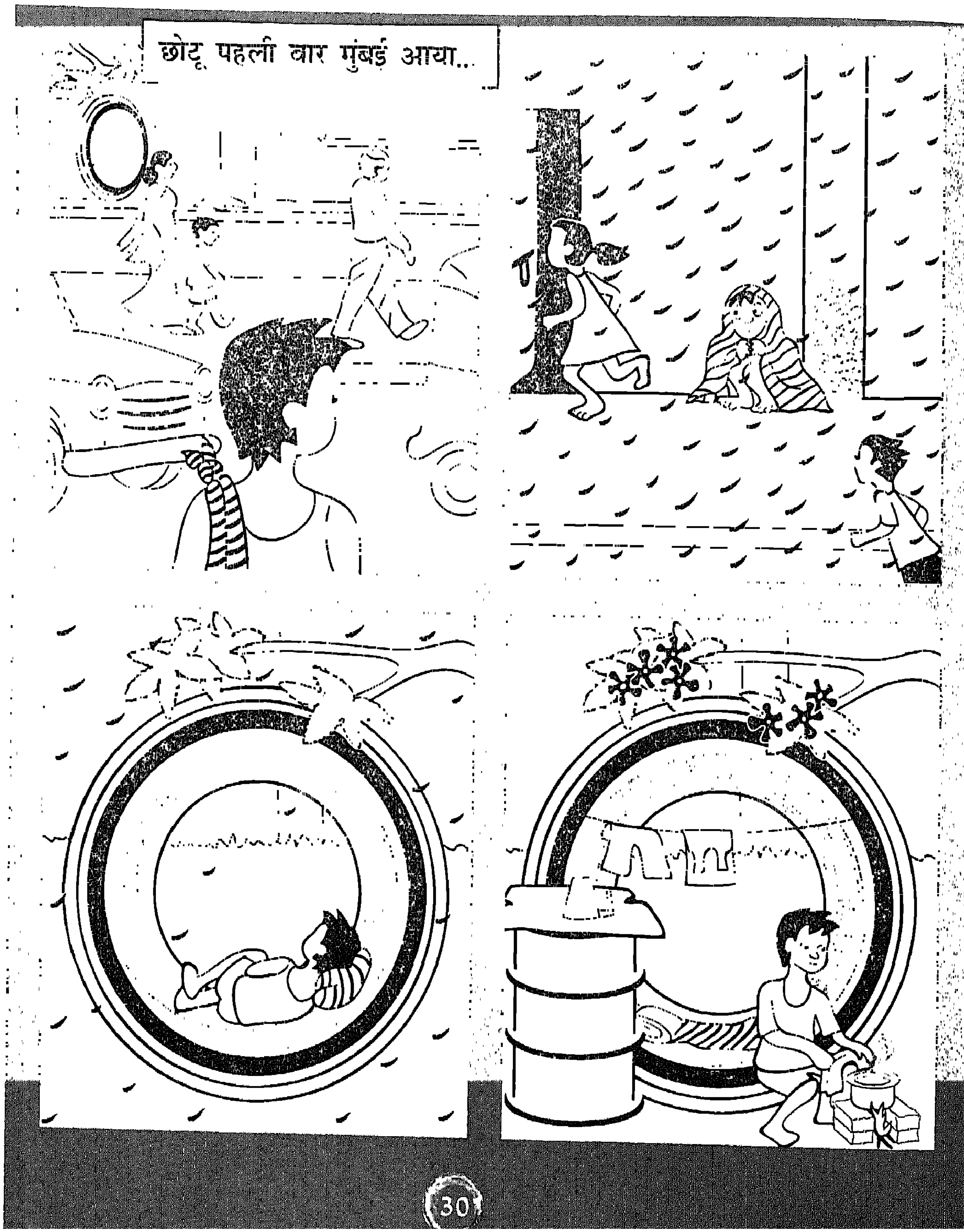
क्या तुम्हारे परिवार में किसी की कोई खास आदत हैं जैसे - ज़ोर से हँसना, खुश होने पर गाना आदि – उनकी तरह करके दिखाओ।

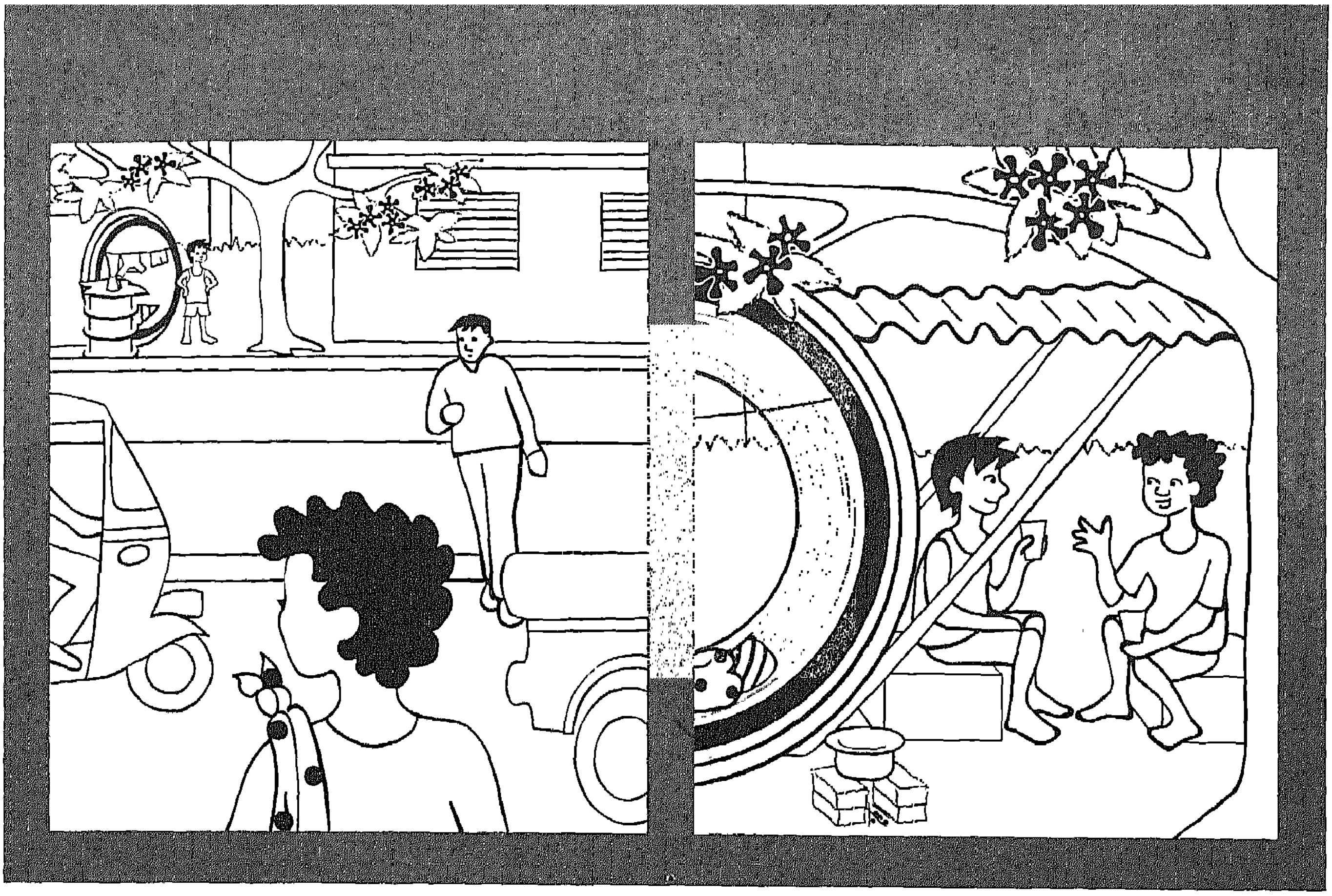


- तुम अपने परिवार में बड़ों की इज़्ज़त कैसे करते हो? अपने आस-पास देखो लोग क्या-क्या तरीके अपनाते हैं।
- बड़े जब बच्चे थे

घर के किसी बड़े को उनके बचपन का कोई मज़ेदार किस्सा बताने को कहो।

बच्चों से अपने परिवार वालों के हँसने, गाना गानें आदि के तरीकों के बारे में बातचीत करवाई जाए। इससे वे अपने परिवार के लोगों की ख़ासियत भी पहचान सकेंगे।


छोटू पहली बार मुंबई आया...



चित्रों में छोटू की कहानी बताई गई है। देखकर बताओ –

- छोटू ने पाइप को देखकर क्या सोचा?
- छोटू ने पाइप का किस तरह से इस्तेमाल किया है?
- छोटू ने पाइप और आस-पास की जगह को कौन-से हिस्सों में बाँटा है?
- छोटू को इस घर के कौन-से हिस्से में ज़्यादा समय बिताना पसंद होगा?
- छोटू ने मोनू को भी पाइप में रहने को क्यों कहा होगा?

मकान कब घर बन जाता है, इस पर चर्चा करवाना 'मकान' और 'घर' के अंतर को स्पष्ट करेगा।

अपने घर का चित्र कॉपी में बनाओ। उसमें रंग भी भरो।

- तुम्हारे घर में कौन-कौन लोग रहते हैं?

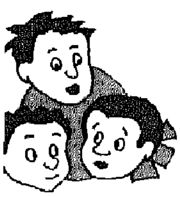
__________ __________ __________ __________

__________ __________ __________ __________

- छोटू ने पाइप को अलग-अलग हिस्सों में बाँटा। तुम भी अपने घर के अलग-अलग हिस्सों के नाम लिखो।

__________ __________ __________ __________

__________ __________ __________ __________

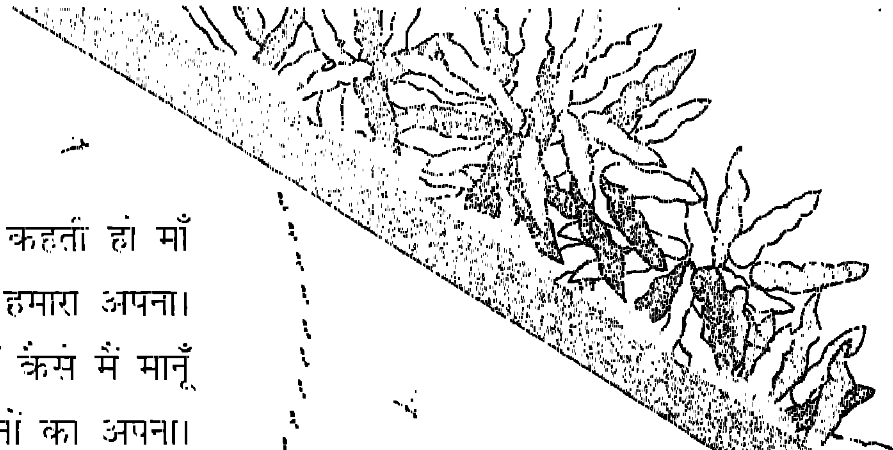


- एक दिन में तुम घर के किस हिस्से में कितना समय बिताते हो?
- क्या घर का कोई ऐसा हिस्सा है जिसमें घर के कुछ लोग ज़्यादा समय रहते हैं?
- क्या घर का कोई ऐसा भी हिस्सा है जिसमें घर का कोई खास व्यक्ति जाता ही नहीं हैं, या बहुत कम जाता है?

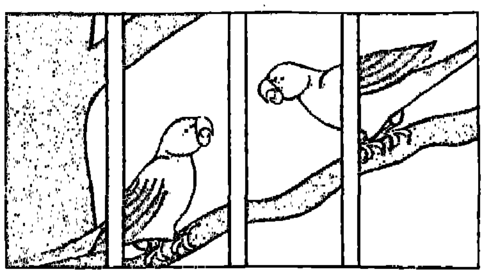
हमारे घरों में हम लोग तो रहते ही हैं, पर हमारे साथ-साथ कुछ जानवर भी रहते हैं – कुछ हमारी मर्ज़ी से, कुछ हमारी इज़ाज़त के बगैर!

बच्चों से उनके घर की बातचीत को संवेदनशीलता से करने की ज़रूरत है। घर अलग-अलग तरह के होते हैं। यह बात ध्यान में रखते हुए पाठ में कमरों के बजाए 'घर के हिस्सों' का प्रयोग किया गया है। घर के हिस्सों में विशिष्ट व्यक्तियों का जाना या न जाना उनके घर के तौर-तरीकों को दर्शाता है।



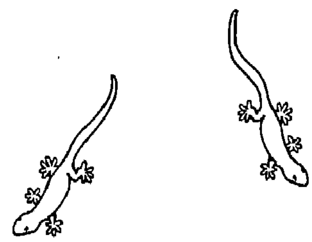


सदा यही तो कहती हो माँ
घर यह सिर्फ हमारा अपना।
लेकिन माँ कैसे मैं मानूँ
घर तो यह कितनों का अपना।

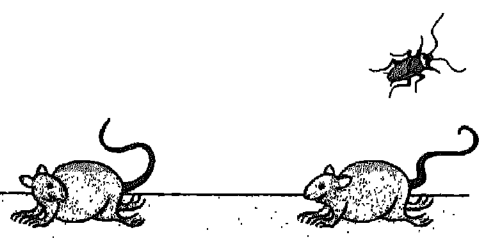


देखो तो कैसे ये चूहे
खेल रहे हैं पकड़म-पकड़ी।
कैसे मच्छर टहल रहे हैं
कैसे मस्त पड़ी है मकड़ी!

और छिपकली को तो देखो
चलती है जो गश्त लगाती!
अरे कतारें बाँधें-बाँधें
कहाँ चीटियाँ दौड़ी जातीं।



और उधर आँगन में देखो
पंछी कैसे झपट रहे हैं।
बिल्कुल दीदी और मुझ जैसे
किसी बात पर झगड़ रहे हैं।



इसीलिए तो कहता हूँ माँ
घर ना समझो सिर्फ हमारा
सदा-सदा से जो भी रहता
सबका ही है घर यह प्यारा।

बच्चा टोली (भारत ज्ञान विज्ञान समिति)



❋ ऐसे दो जानवरों के चित्र बनाओ, जो हमारी इजाज़त के बिना हमारे घर में रहते हैं। चित्र के नीचे उनका नाम भी लिखो।

____________________	____________________

❋ तुम अपने घर को कैसे साफ़ रखते हो?

____

____

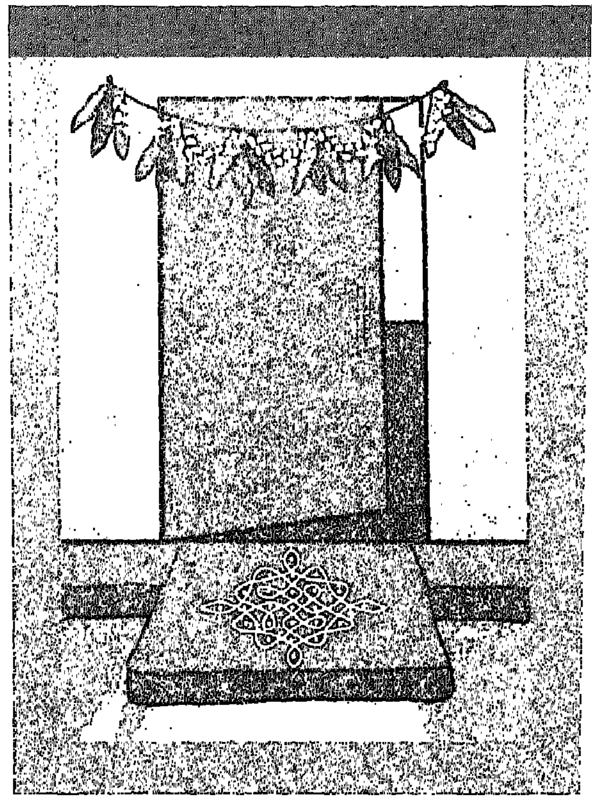
____

❋ तुम्हारे घर में सफ़ाई का काम कौन-कौन करते हैं?

❋ तुम अपने घर का कूड़ा-कचरा कहाँ डालते हो?

❋ क्या तुम्हारे घर के आस-पास सफ़ाई रहती है?

लता का घर इस तरह से सजा है।

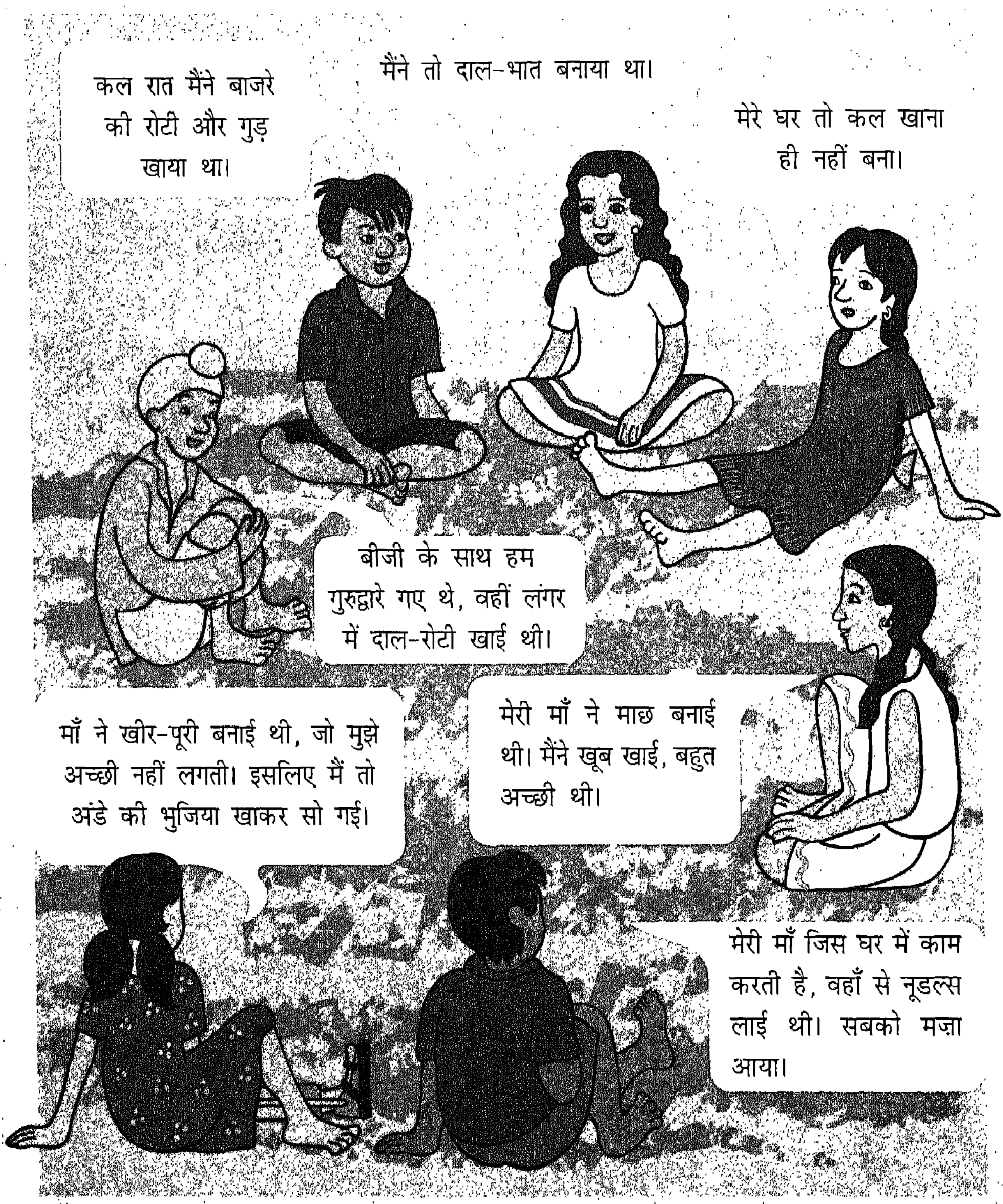


क्या तुम अपने घर को किसी खास तरह से सजाते हो? कब और कैसे सजाते हो?

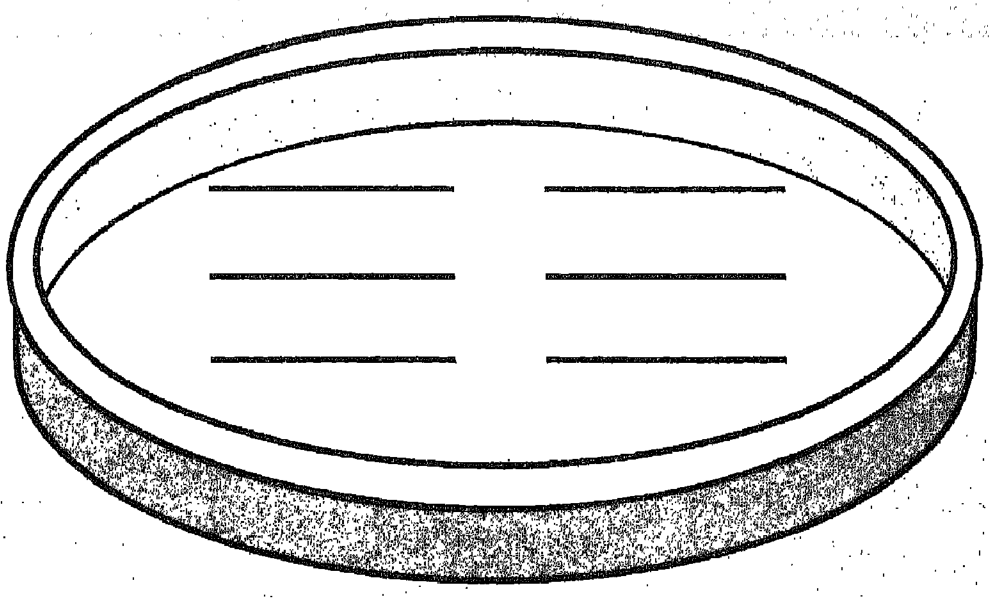
अपने साथियों से पता करो कि वे अपने घर को कैसे और कब सजाते हैं?

तुम अपने घर को किन-किन चीज़ों से सजाते हो? उनके नाम लिखो।

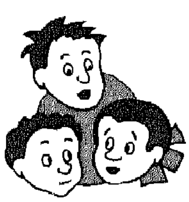
पाठ में प्रत्येक बच्चे से उसके घर की सजावट के बारे में पूछा गया है। बच्चों से घर सजाने की प्रकिया पर बातचीत से, स्थानीय सामग्री के उपयोग तथा त्योहार मनाने के महत्त्व को उभारा जा सकता है।


कल रात मैंने बाजरे की रोटी और गुड़ खाया था।
मैंने तो दाल-भात बनाया था।
मेरे घर तो कल खाना ही नहीं बना।
बीजी के साथ हम गुरुद्वारे गए थे, वहीं लंगर में दाल-रोटी खाई थी।
माँ ने खीर-पूरी बनाई थी, जो मुझे अच्छी नहीं लगती। इसलिए मैं तो अंडे की भुजिया खाकर सो गई।
मेरी माँ ने माछ बनाई थी। मैंने खूब खाई, बहुत अच्छी थी।
मेरी माँ जिस घर में काम करती है, वहाँ से नूडल्स लाई थी। सबको मज़ा आया।

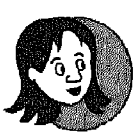
तुमने कल क्या-क्या खाया? थाली में उनके नाम लिखो।



अपनी-अपनी थाली में जो लिखा है, उसे ब्लैकबोर्ड पर लिखो।



- क्या तुम्हारी कक्षा में कल सबने एक जैसा खाना खाया था? ऐसा क्यों?
- चित्र में तुमने देखा कि एक बच्चे के घर खाना बना ही नहीं। यह किन कारणों से हो सकता है?



- क्या तुम्हारे साथ कभी ऐसा हुआ है कि भूख लगी हो और कुछ भी खाने को नहीं मिला? अगर 'हाँ' तो क्यों?
- तुम्हें कैसे पता चलता है कि भूख लगी है?
- जब तुम्हें भूख लगती है तब तुम्हें कैसा महसूस होता है?

बच्चे एक खुले माहौल में अपनी बात बेझिझक कहते हैं। एक-दूसरे के खाने के बारे में सुनकर हम अपने खाने से जुड़ी संकुचित सोच से हट सकते हैं। इसी से दूसरे लोगों के बारे में हमारी समझ बढ़ेगी। बच्चों से संबंध बनाना और ऐसा माहौल बनाना ज़रूरी है जहाँ उनकी बात संवेदनशीलता से सुनी जाए।

विपुल के परिवार में कुछ लोग कई चीज़ें नहीं खाते, जो वह खाता है। सोचो उसके परिवार के लोग वे चीजें खाते ही नहीं या खा नहीं सकते?

आओ विपुल के परिवार के बारे में पढ़ें –

स्कूल से घर जाते-जाते विपुल ने एक भुट्टा खरीदा। भुट्टा खाते-खाते विपुल घर में घुसा और माँ से पूछा – माँ छुटकी कहाँ है? पहले तो मैं उसे ही देखूँगा।

माँ ने हँसते हुए कहा – छुटकी ऊपर कमरे में है।

विपुल ने दादी का हाथ पकड़कर कहा – दादी, तुम भी चलो न!

माँ ने कहा – रूको, मैंने बा की रोटी दाल में डालकर रखी है। पहले वो खा तो लें।

बेटा आज तो दाल में शक्कर ठीक से डाली है न? यहाँ नागपुर आकर तुम लोग अपना खाना भूलते जा रहे हो – दादी ने माँ से कहा।

माँ ने जवाब दिया – बा, मैनें चख कर देखी है, बढ़िया बनी है।

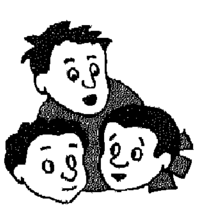
मैं दादी का खाना भी ऊपर ले जाता हूँ – कहते हुए विपुल ने थाली उठाई और फटाफट सीढ़ियाँ चढ़ गया। दादी जल्दी चढ़ो न! – विपुल ने पुकारा।

दादी ने कहा – जब मैं तुम्हारी उम्र की थी तब मैं इतनी देर में सीढ़ियाँ तो क्या, पहाड़ भी चढ़ जाती थी।

विपुल ने अंदर जाकर अपना भुट्टा मामी को थमाया और हाथ धोकर छुटकी को उठा लिया।

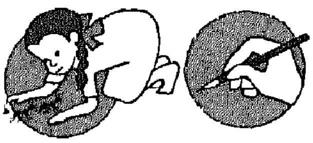
अचानक छुटकी ने रोना शुरू कर दिया।

यह अब ऐसे चुप नहीं होगी, इसे भूख लगी है – कहते हुए मामी छुटकी को दूध पिलाने बैठ गई।



- दादी सीढ़ियाँ जल्दी क्यों नहीं चढ़ पाईं?
- दादी को दाल किस तरह से खाना पसंद है?

- कहानी में जितने लोग आए, उनमें से कितने लोग भुट्टा खा पाएँगे? और क्यों?
- क्या सभी बूढ़े लोग भुट्टा नहीं खा पाते?
- चार महीने तक छुटकी केवल अपनी माँ का ही दूध पीएगी। वह ही उसका खाना है। सोचो, क्यों?

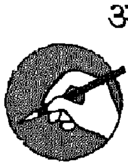


अपने आस-पास के बड़ों से पूछकर तालिका भरो –

		क्या-क्या खा पाते हैं	क्या-क्या नहीं खा पाते
	बच्चा	______________	______________
		______________	______________
	जवान	______________	______________
		______________	______________
	बूढ़ा	______________	______________
		______________	______________

यह तो थी कुछ चीज़ों को 'खा सकने' और 'नहीं खा सकने' की बात। क्या हम वे सभी चीज़ें खाते हैं जो हम खा सकते हैं? नहीं न!

आओ बात करें उन चीज़ों की जिन्हें हम खाते हैं।



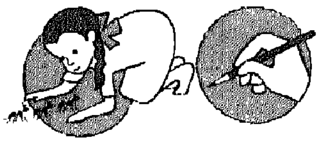
- जिन चीज़ों को तुम ज़्यादा खाते हो उन पर ◯ लगाओ।

चावल	रागी	मक्का	बाजरा
गेहूँ	जई	कप्पा (टैपिओका)	जौ

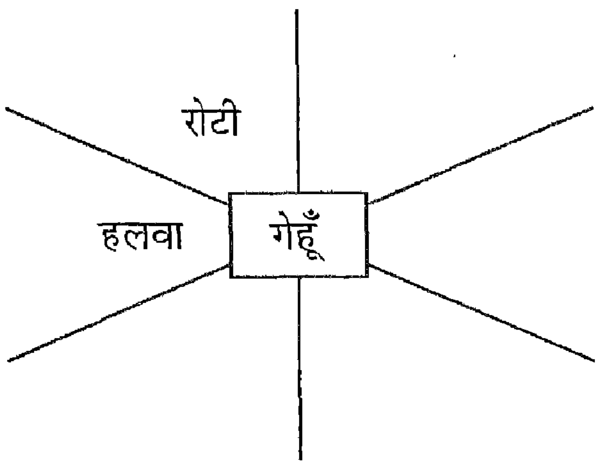
हमारा भोजन ज़्यादातर इन्हीं चीज़ों से बनता है। अलग-अलग जगहों पर इनमें से कुछ चीज़ों को अधिक खाया जाता है। जो चीज़ें जहाँ आसानी से पैदा होती हैं, वहाँ पर वे ज़्यादा खाई जाती हैं।

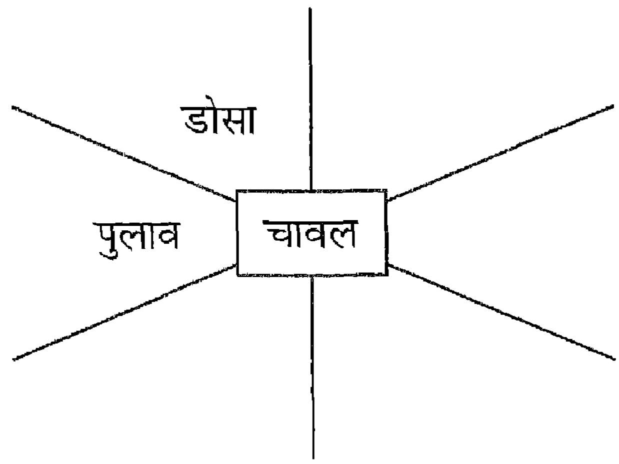


पता लगाओ, इनमें से कौन-कौन सी चीज़ कहाँ-कहाँ अधिक खाई जाती है।



हम लोग अलग-अलग चीज़ें तो खाते ही हैं। एक ही चीज़ का इस्तेमाल करके अलग-अलग भोजन भी बनाते हैं। पता करो और लिखो कि गेहूँ और चावल से क्या-क्या बनता है?





क्यों, कितनी चीज़ें लिखीं? इसी तरह अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरह की दालें, सब्ज़ियाँ, फल, माँस आदि खाया ज़ाता है। कुछ लोग कुछ पसंद करते हैं, तो कुछ लोग कुछ और। अब बात करते हैं 'पसंद' और 'नापसंद' की।

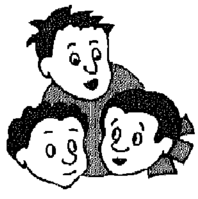


पसंद अपनी-अपनी

उन तीन चीज़ों के नाम लिखो जो तुम्हे खाने में पसंद है, और तीन चीज़ें जो तुम्हें नापसंद हैं।

पसंद ______________ ______________ ______________

नापसंद ______________ ______________ ______________



- क्या तुम्हारी पसंद-नापसंद तुम्हारे परिवार के लोगों से मिलती है?
- क्या तुम्हारी पसंद-नापसंद तुम्हारे दोस्त की पसंद-नापसंद से मिलती है?

आओ अब कुछ लोगों से बात करें और पता लगाएँ उन्हें क्या खाना अच्छा लगता है?



मैं हांगकांग में रहती हूँ। मुझे और मेरी माँ को साँप खाना बहुत पसंद है। जब भी हमारी साँप खाने की इच्छा होती है, तो हम पास के एक होटल में जाकर 'लिंग-हू-फेन' खाते हैं।



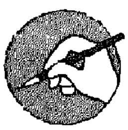
मैं कश्मीर में रहती हूँ। सरसों के तेल में बनी मछली मुझे बहुत पसंद है। एक बार हम गोवा गए थे। वहाँ हमने मछली खाई, पर स्वाद बहुत ही अलग था। माँ ने कहा – अरे यह तो नारियल के तेल में बनी समुंदर की मछली है। स्वाद तो अलग होगा ही!



मैं केरल में रहता हूँ। मुझे सबसे अच्छी दो चीज़ें लगती हैं। वे चीज़ें मेरे घर के आँगन में ही उगती हैं। एक ऊपर ऊँचे पेड़ पर और दूसरी ज़मीन के नीचे। बस नारियल डली हुई किसी भी करी के साथ उबला हुआ टैपिओका मिल जाए तो क्या मज़ा आता है।

कहाँ क्या खाया जाता है यह आखिर निर्भर किस पर होता है? दिए गए कारणों में से जो तुम्हें सही लगे उस पर '✓' लगाओ। इसके अलावा जो कारण और हो सकते हैं वे खाली जगह में लिखो।

- वहाँ क्या आसानी से मिलता है।
- क्या खरीद सकते हैं।
- रीति-रिवाज़ पर।
- ________________
- ________________



जो चीज़ें खाई जाती हैं उन पर '✓' का निशान लगाओ। किसी के बारे में नहीं पता तो शिक्षक से पूछ लो।

केले के फूल	☐	मुर्गी का अंडा	☐	गोभी	☐
सैंजन के फूल	☐	अरवी के पत्ते	☐	माँस	☐
खुंबी	☐	चूहा	☐	कलौंजी	☐
कमल डंडी	☐	मछली	☐	केकड़ा	☐
लाल चींटी	☐	बाजरे की रोटी	☐	घास	☐
पिछले दिन की रोटी	☐	मेंढक	☐	आंवला	☐
नारियल का तेल	☐	ऊँटनी का दूध	☐	चने की रोटी	☐

खाने की कुछ ऐसी चीज़ों के नाम लिखो, जो तुमने कभी नहीं खाईं, लेकिन खाने का मन करता है।

____________ ____________ ____________ ____________

____________ ____________ ____________ ____________

चुप तुम रहो, चुप हम रहें

चलो, एक खेल खेलें। इस खेल में सब को बिना बोले अपनी बात दूसरों तक पहुँचानी है। सभी बच्चे सात-सात के गुटों में बँट जाओ।

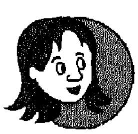
इस खेल में तुम्हारी टीचर सभी गुटों को एक-एक कागज़ की पर्ची देगी। हर पर्ची में कुछ लिखा होगा। सभी अपने-अपने गुट में पर्ची पढ़ेंगे। सभी गुटों को पर्ची के अनुसार मूक-नाटक तैयार करना है। इस बात का ध्यान रखना है कि बिना बोले ही सभी को अपनी बात दूसरों तक पहुँचानी है। तुम्हें अपने शरीर के अलग-अलग अंगों से ही अपनी बात कहनी है, जैसे – आँखों से, चेहरे के हाव-भाव से, हाथ के इशारों से।

जब सबका नाटक तैयार हो जाए तब सभी गुट एक-एक करके आएँ और सबके सामने अपना मूक-नाटक करें। सभी देखने वालों को यह बूझना होगा कि नाटक में क्या हो रहा है।

कैसा लगा यह खेल?

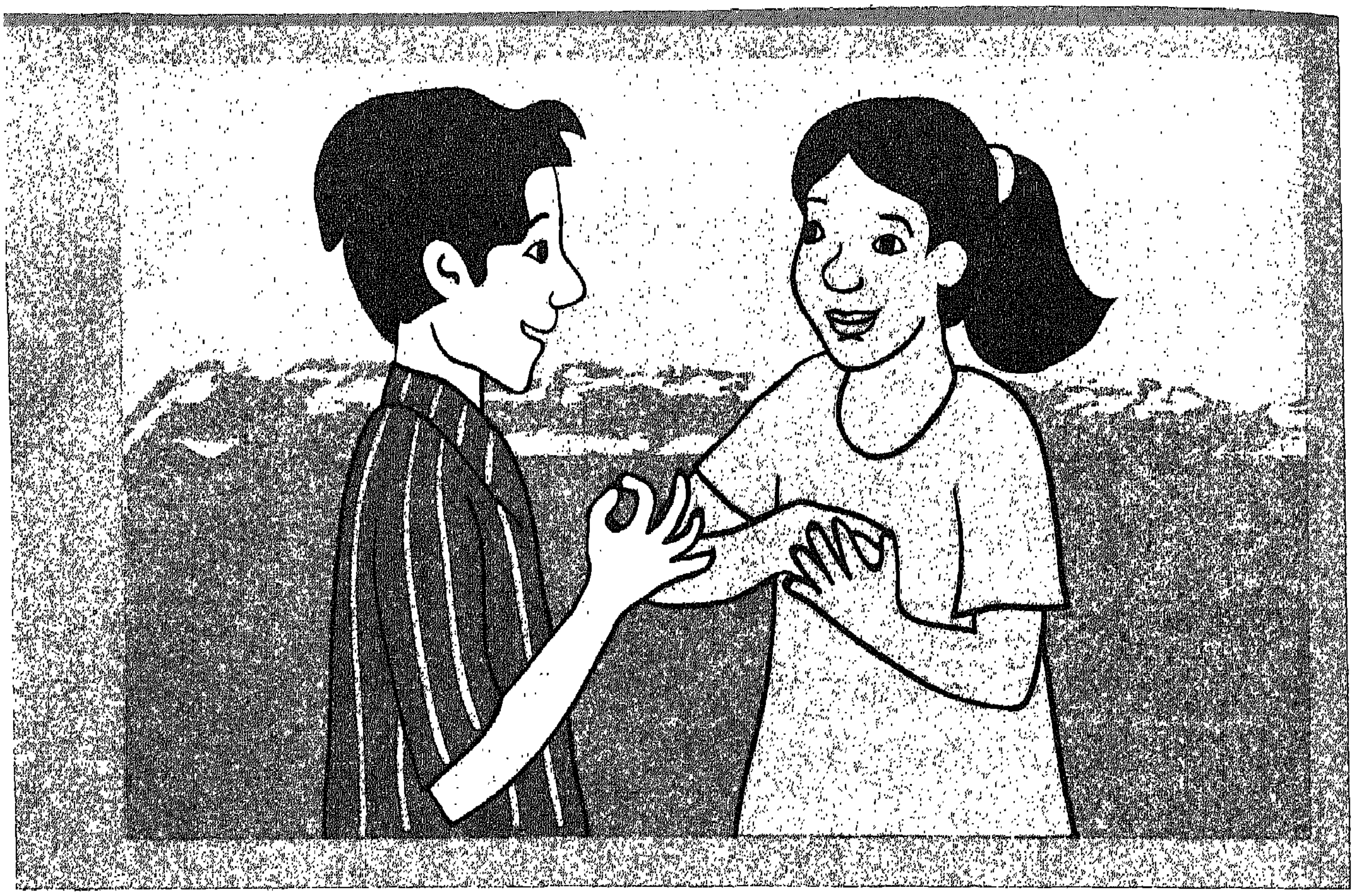
क्या बिना बोले नाटक करने में मुश्किल आई?

अगले पृष्ठ पर दिए गए चित्र को देखो। चित्र में बच्चे इशारों से बातें कर रहे हैं।



- क्या तुमने कभी किसी को इशारों से बातें करते देखा है?
- लोगों को इशारों में बात करने की ज़रूरत कब पड़ती है?

जिन घटनाओं को बच्चे समझ पाएँ, जिनसे स्वयं को जोड़ पाएँ, उनको चुनें ताकि बच्चे उन्हें प्रभावी ढंग से नाटक के रूप में प्रस्तुत कर पाएँ।



हम में से ज़्यादातर लोग बोल और सुन सकते हैं। पर कुछ ऐसे भी लोग हैं जो बोल और सुन नहीं सकते। ऐसे लोग दूसरों को अपनी बातें इशारों से समझाते हैं। दूसरों की बातें वह उनके होठों को देखकर समझने की कोशिश करते हैं।

हम सब भी तो सब कुछ नहीं कर पाते। हममें से कोई गाता अच्छा है, तो कोई कविता अच्छी लिखती है। कुछ बच्चे झट से पेड़ पर चढ़ जाते हैं, तो कुछ बहुत तेज़ दौड़ते हैं। कोई चित्र अच्छे बनाता है, तो कोई सुर में नहीं गा पाती। हम सब अपनी-अपनी तरह से खास हैं। स्कूल इसीलिए तो हैं कि सभी को एक-दूसरे से कुछ-न-कुछ सीखने का मौका मिले। सबकी तरह जो बच्चे बोल-सुन नहीं सकते, वे भी स्कूल जाकर पढ़ते-लिखते हैं। इन बच्चों को स्कूलों में इशारों से बातें करने की भाषा सिखाई जाती है।

आओ, अब एक बच्ची के बारे में पढ़े जो सुन नहीं सकती। वह बच्ची फिर भी कितना कुछ कर पाती है।

मेरी बहन सुन नहीं सकती

मेरी एक बहन है।
मेरी बहन सुन नहीं सकती।
मेरी बहन अनूठी है।
बहुत कम लोगों की बहनें ही मेरी बहन
की तरह होंगी।
मेरी बहन **पियानो** बजा सकती है।
वो पियानो के सुरों को
महसूस कर सकती है।
वो उंगलियों से छूकर पता कर लेती है
कि रेडियो चल रहा है या वो बंद है।
कूदने, उछलने और
कलाबाज़ियां लगाने में
उसे बड़ा आनंद आता है।
मेरी बहन अब मेरे ही
स्कूल में जाने लगी है।



वैसे माँ, उसे घर पर बोलने की और
होंठ पढ़ने की ट्रेनिंग देती हैं।
क्लास में टीचर और अन्य बच्चे मेरी
बहन के कहे
सभी शब्दों को समझ नहीं पाते हैं।
वो जो कुछ कहना चाहती है उसे वो
अच्छी तरह नहीं कह पाती है।
कल मैंने धूप का चश्मा पहन रखा था।
उसका फ्रेम काफ़ी बड़ा था।
उसके काँच भी एकदम काले थे।
जब मैं बोल रही थी तो मेरी बहन ने
मुझ से चश्मा उतारने को कहा।
मेरी भूरी आँखे, उसकी भूरी आँखों से,
न जाने क्या-क्या कहती हैं?

जॉन वाइटहाउस पीटरसन की
कविता के कुछ अंश
(अनुवाद : अरविंद गुप्ता)

इस पाठ में चर्चा हो सकती है कि हम सब में अलग अलग तरह की क्षमताएँ हैं। बच्चों के अपने अनुभवों को शामिल करते हुए इस विषय पर संवेदनशीलता बढ़ाई जा सकती है।

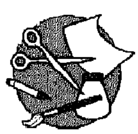
हम अपनी आँखों से बहुत कुछ कहते हैं। छोटे बच्चे तो बोलना सीखने से पहले ही कितना कुछ कहते हैं – चेहरे से, हाथों से। वे कितना कुछ समझते भी हैं।



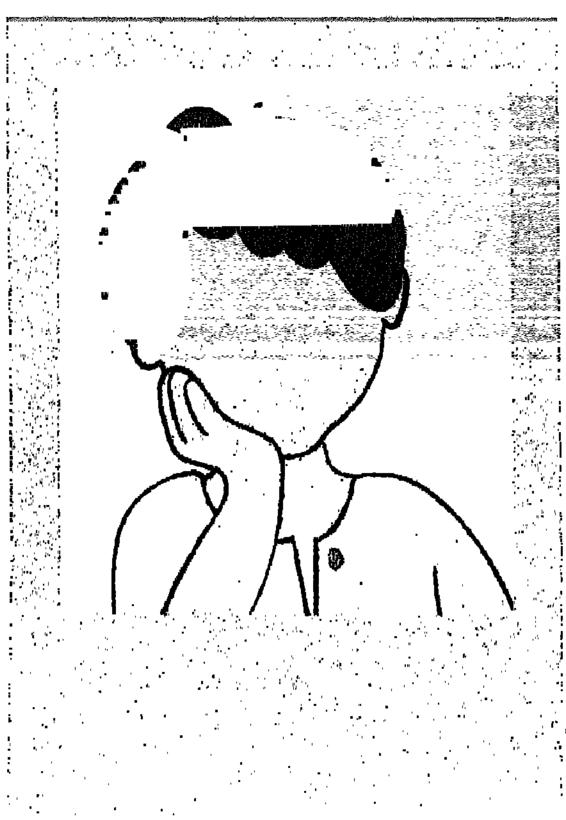
चेहरा है आईना



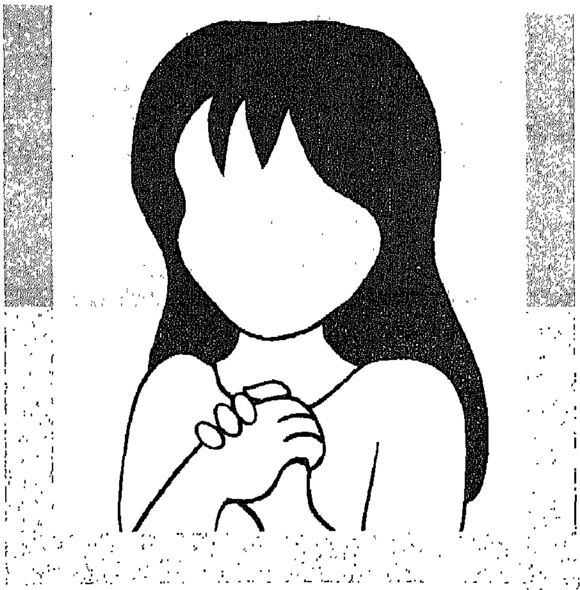
अपने आस-पास के छोटे बच्चों (करीब 6-8 महीनों) को देखो। वे अपनी बात बिना बोले कैसे कहते हैं?



तुम सोच रहे होगे, कि ये कैसे चेहरे हैं? न इनमें आँखें हैं, न नाक और न ही मुँह। ये सब तो तुम्हें बनाने हैं, पर साथ में जो लिखा है, उसे पढ़कर।

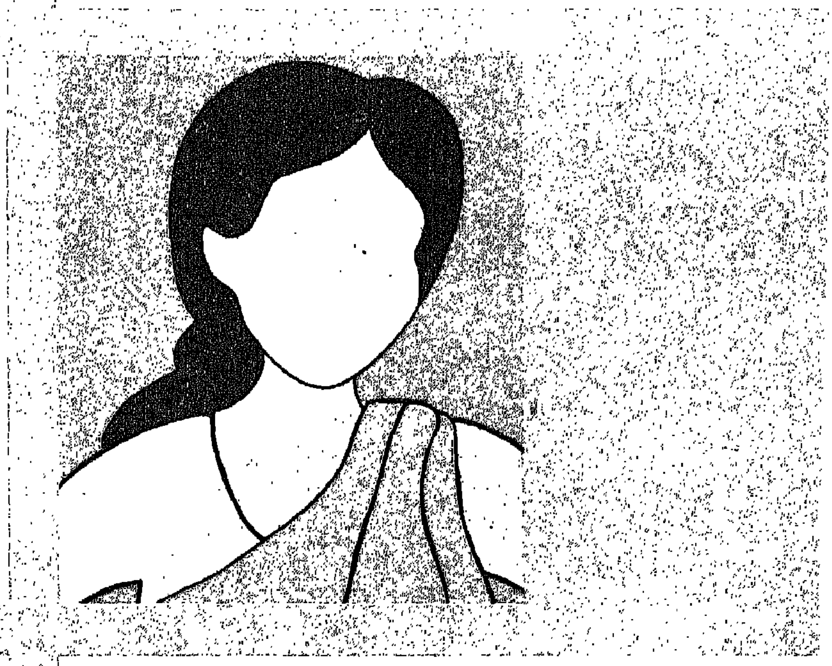


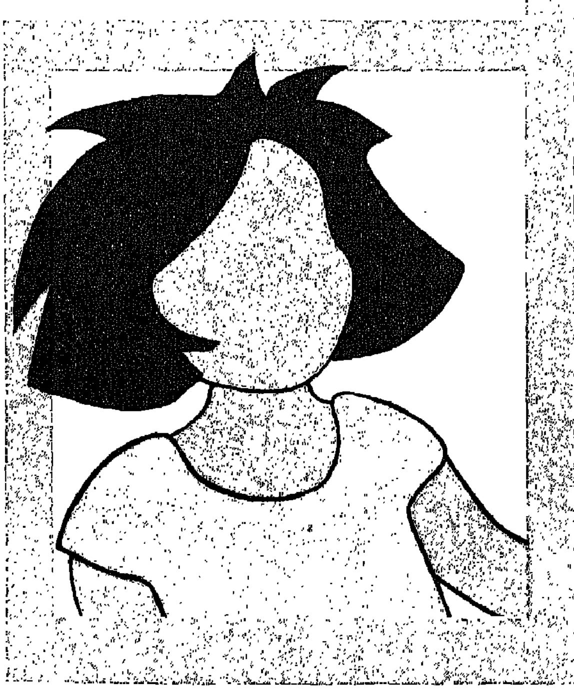
यह आफ़ताब है। उसका खिलौना गिर कर टूट गया है। वह दुखी है। कैसा होगा उसका चेहरा?



यह जूली है। कल ही उसकी छोटी बहन पैदा हुई है। वह बहुत खुश है। उसका चेहरा बनाओ।

यह यामिनी की अम्मा है। आज यामिनी ने जब रसोई से अचार की शीशी निकाली, शीशी गिर कर टूट गई। अम्मा का चेहरा बनाओ।



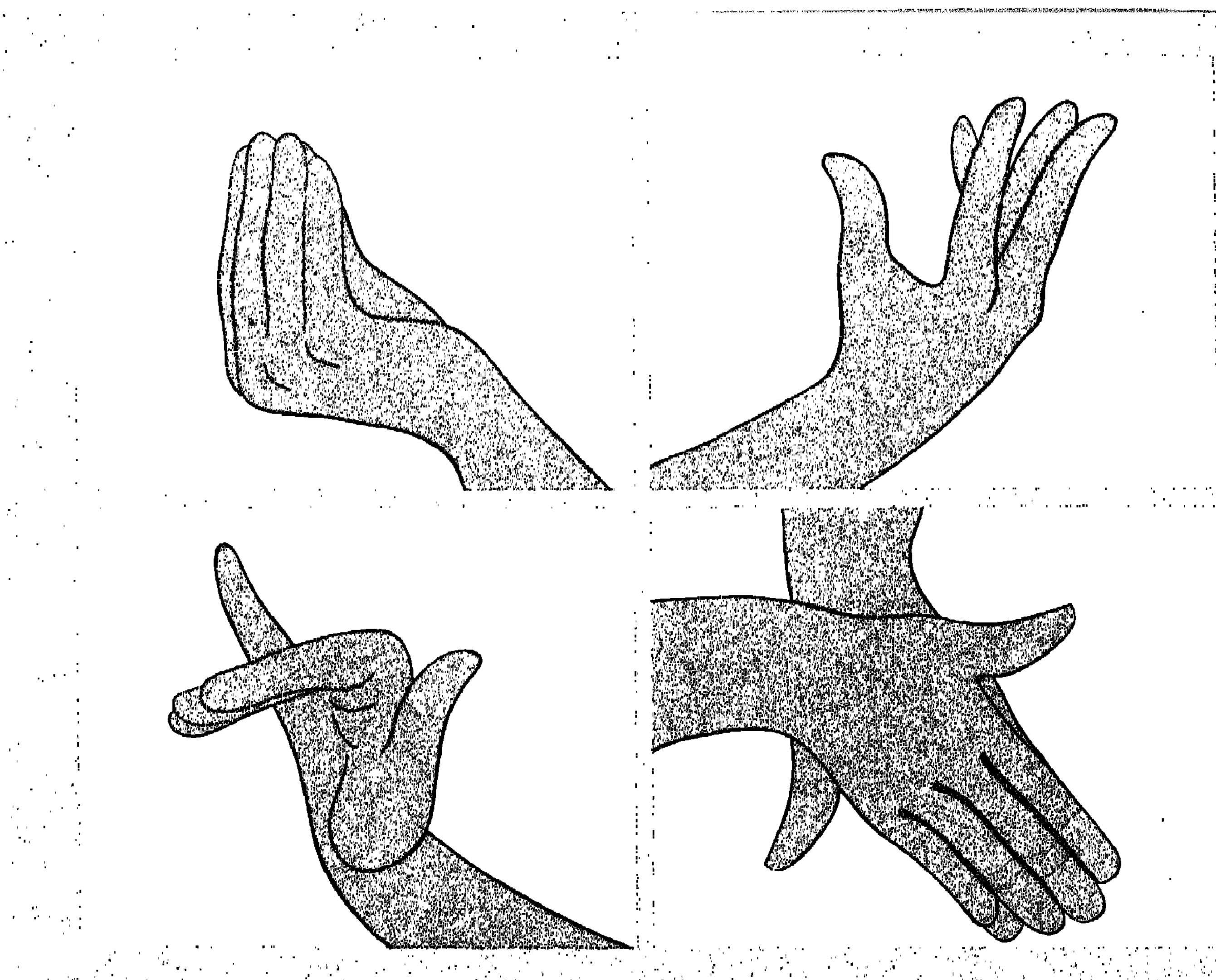


यह रेहाना है। रेहाना को कुत्तों से बहुत डर लगता है। वह खेल रही थी। अचानक से उसके सामने एक कुत्ता आ गया। कैसा होगा रेहाना का चेहरा?

चेहरे को देखकर हमें पता चल जाता है कि कौन दुखी है, कौन खुश है और कौन गुस्से में। तुम्हारे साथ कभी ऐसा हुआ है कि तुमने कोई शरारत की हो और माँ को तुम्हारा चेहरा देखकर ही समझ में आ गया हो?

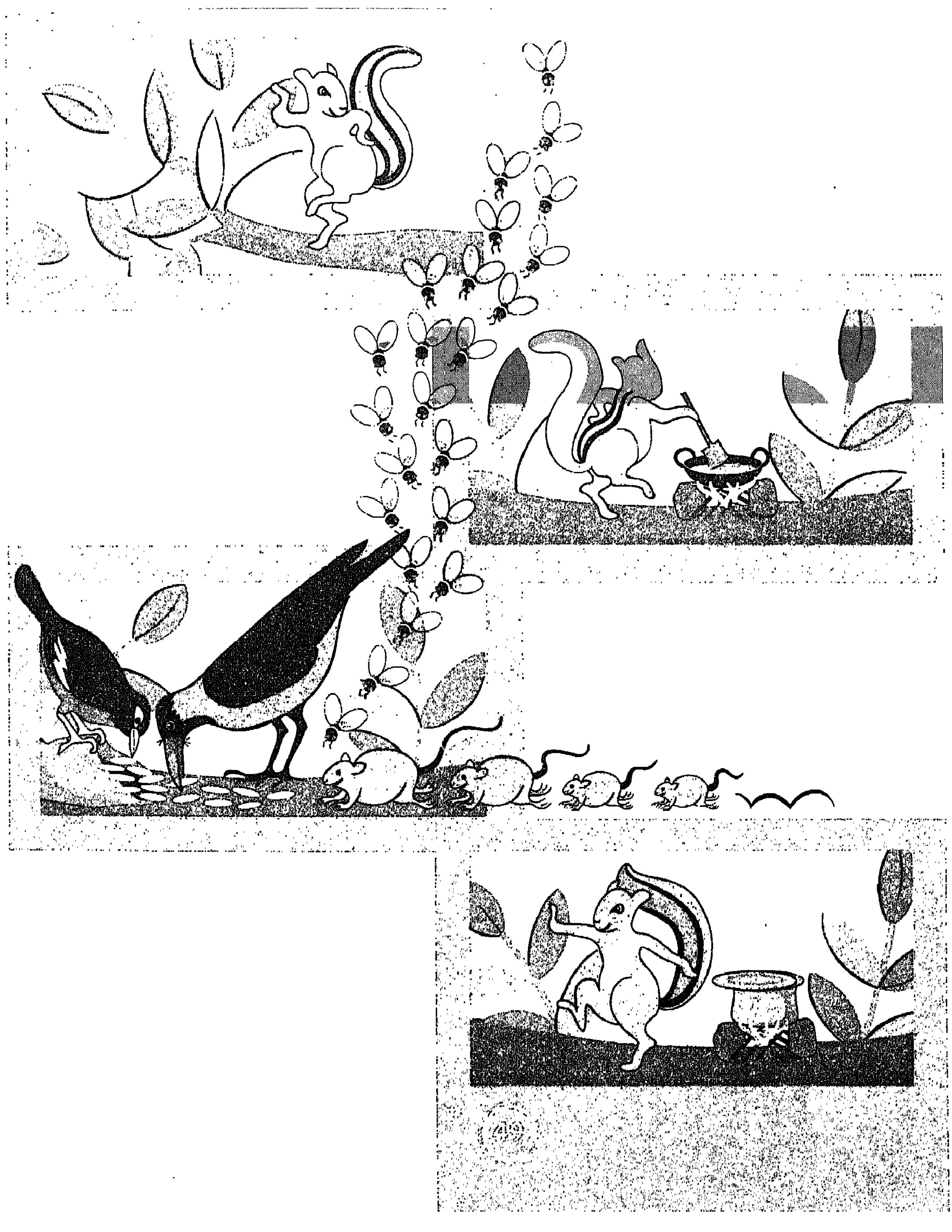
नाच से भी हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। नाच में इशारों और चेहरे के हाव-भाव का इस्तेमाल करते हैं। इन्हें मुद्राएँ कहते हैं।

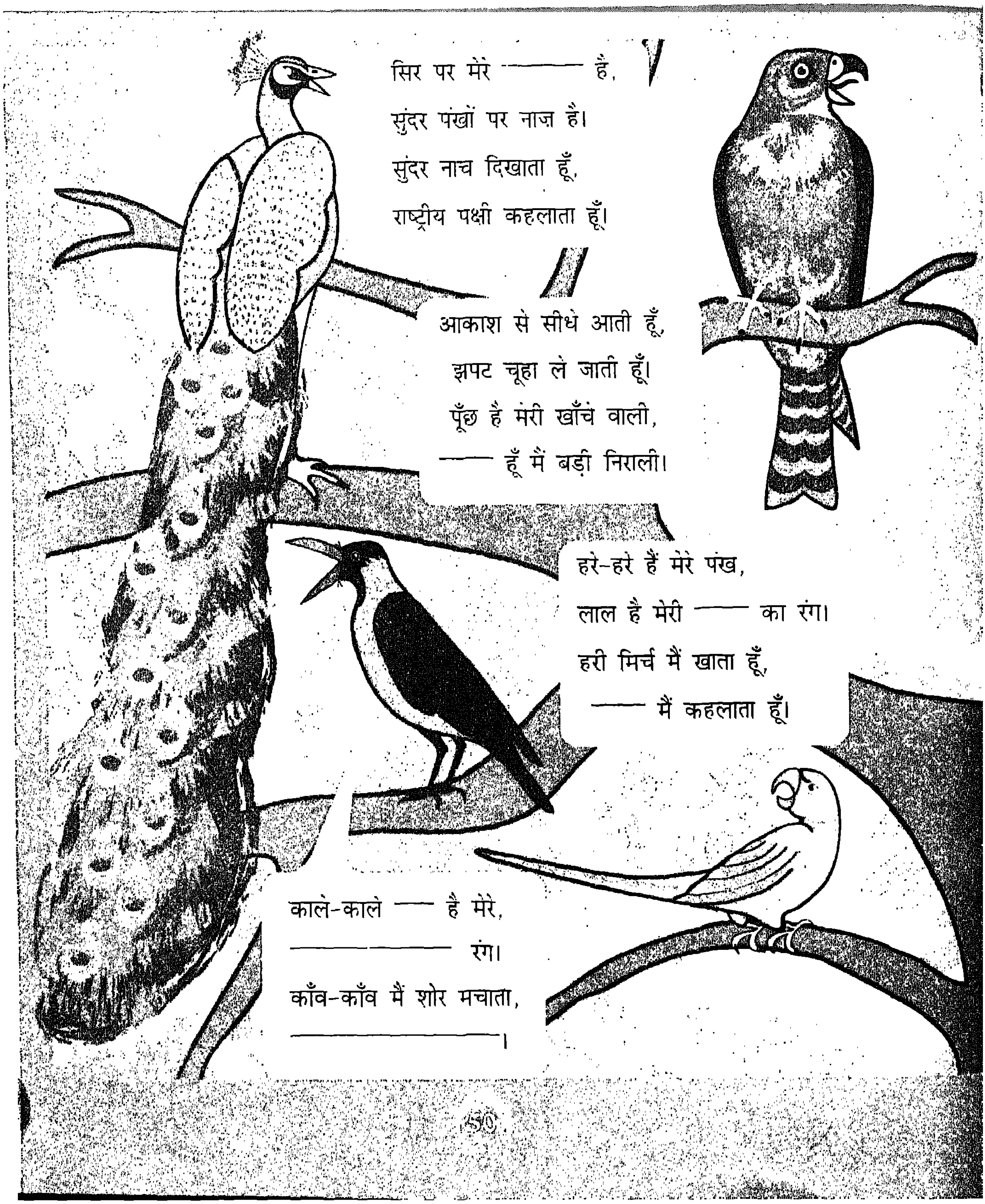
नीचे नाच की कुछ मुद्राएँ दी हैं। बताओ, ये मुद्राएँ क्या दिखा रही हैं?

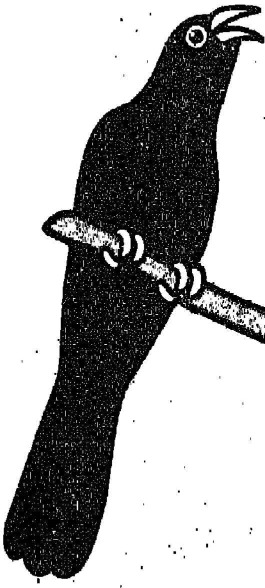


नाच की कुछ मुद्राएँ तुम भी सीखो और करके दिखाओ।

चित्र को देखकर, अपने मन से कहानी बनाओ और अपने साथियों को सुनाओ।




सिर पर मेरे ——— है,
सुंदर पंखों पर नाज़ है।
सुंदर नाच दिखाता हूँ,
राष्ट्रीय पक्षी कहलाता हूँ।
आकाश से सीधे आती हूँ,
झपट चूहा ले जाती हूँ।
पूँछ है मेरी खाँचे वाली,
—— हूँ मैं बड़ी निराली।
हरे-हरे हैं मेरे पंख,
लाल है मेरी —— का रंग।
हरी मिर्च मैं खाता हूँ,
—— मैं कहलाता हूँ।
काले-काले —— है मेरे,
———— रंग।
काँव-काँव मैं शोर मचाता,
————।



कुहू-कुहू आवाज़ लगाती,
मधुर-मधुर मैं गीत सुनाती।
सबके मन को हूँ मैं भाती,
देखो ——— मैं कहलाती।

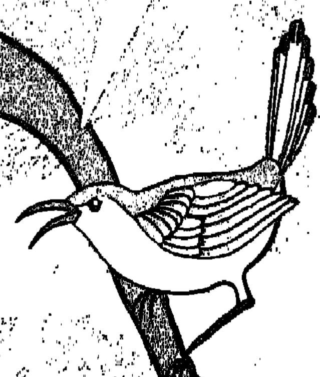


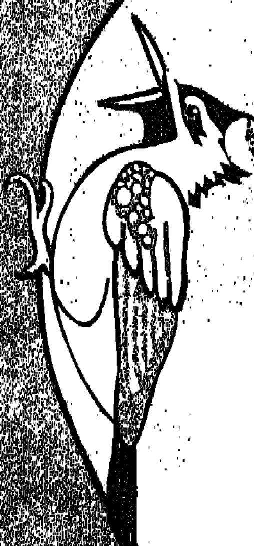
मरे जानवर खाकर मैं,
जगह साफ़ कर देता हूँ।
ऊँचे ——— में उड़ता हूँ,
गिद्ध मैं कहलाता हूँ।



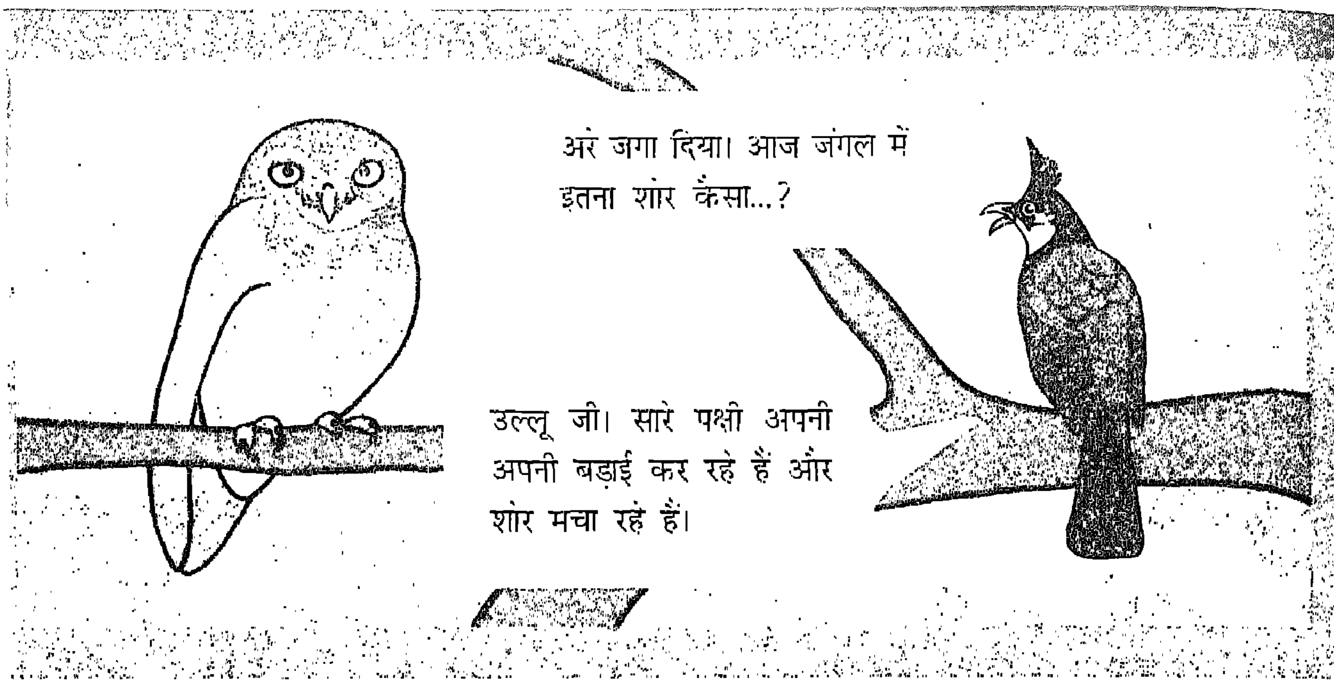
रंग सलेटी, पंजे ——— ,
गुटर गूँ की भर कर चाबी।
दिन भर शोर मचाता हूँ,
——— मैं कहलाता हूँ।

चोंच है मेरी बड़ी निराली,
सुई हो जैसे सिलने वाली।
पत्ते सिल कर घर बनाऊँ,
—— चिड़िया मैं कहलाऊँ।





पेड़ के —— में छेद बनाऊँ,
उसमें छिपे कीड़े मैं खाऊँ।
टुक-टुक करता जाता हूँ,
कठफोड़वा कहलाता हूँ।



उल्लू बोला – अब, बंद क्यों नहीं करते यह शोरगुल? यह कैसा झगड़ा? हम सभी में कुछ-न-कुछ खास है। हमारे पंख, पैर, चोंच और बोली चाहे अलग-अलग हैं, पर हम सभी पक्षी हैं। सोचो, अगर हम सब एक जैसे दिखते और एक-सा खाते। बोली भी यदि एक-सी होती, तो कितनी नीरस होती हमारी यह दुनिया!

- पाठ में आए पक्षियों में से तुमने किन-किन को देखा है? उनके नाम लिखो।

________ ________ ________ ________

________ ________ ________ ________

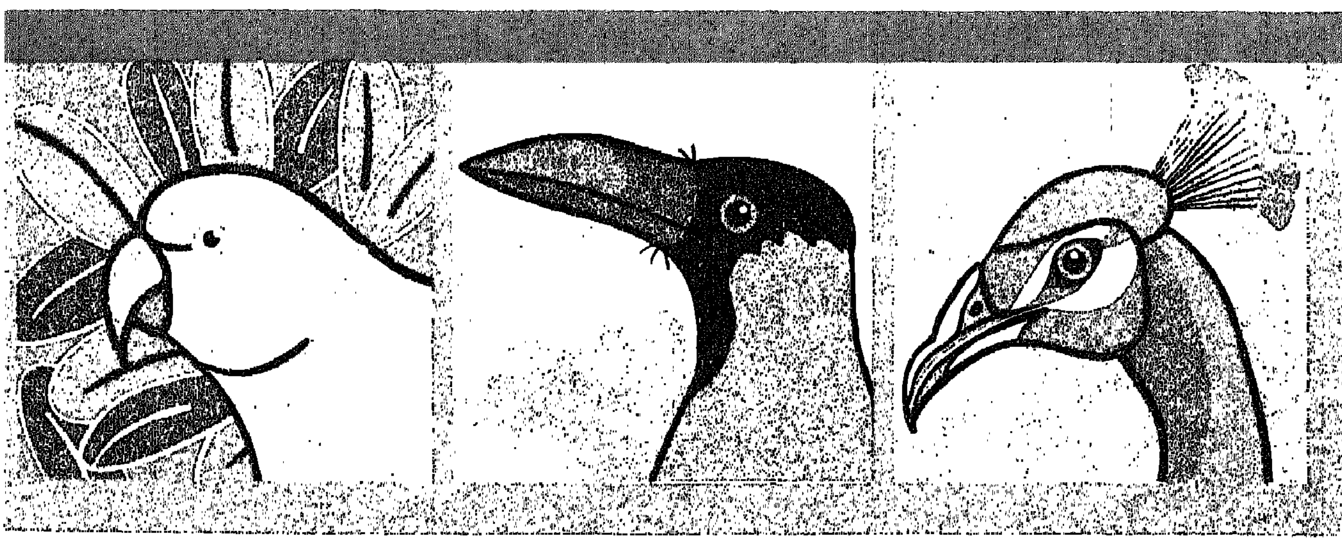
अब बाहर जाकर देखो तुम्हें कितने पक्षी दिखते हैं। पेड़ पर ही नहीं, मैदान में, पानी में, पानी के आस-पास तथा झाड़ियों में भी देखना।

- पक्षियों के नाम भरो तथा सही जगह पर '✓' निशान लगाओ। यदि नाम नहीं जानते तो उनकी कोई पहचान लिखो।

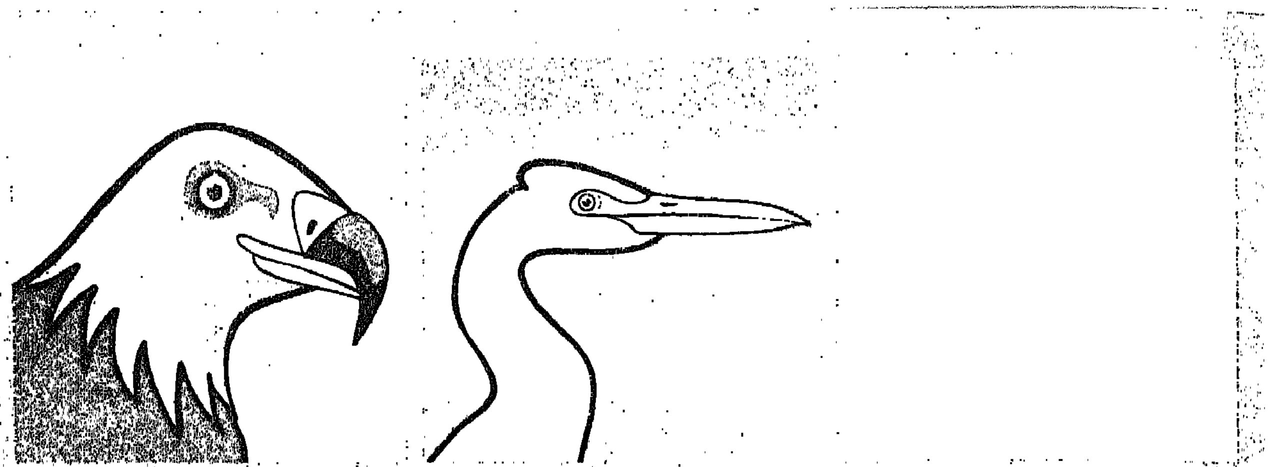
बच्चे बाहर पक्षियों को देखेंगे तो कागज पर आसानी से पहचान कर पाएँगे। कविता को बढ़ाने के लिए बच्चों को पक्षियों के गुण पता होने से मदद मिलेगी, चाहे वे उनके नाम न भी जानते हों।

पक्षी का नाम	जहाँ देखा है				
	पानी में	पेड़ पर	ज़मीन पर	घर में	उड़ते हुए

क्या तुमने कभी ध्यान दिया है कि अलग-अलग पक्षियों की चोंच भी अलग-अलग तरह की होती हैं? नीचे कुछ पक्षियों की चोंच के चित्र हैं। इनको ध्यान से देखो और पहचानो – ये किन पक्षियों की चोंच हैं। नीचे उनके नाम लिखो। खाली खाने में किसी अन्य पक्षी की चोंच बनाओ, उसमें भी रंग भरो। उसका नाम भी लिखो।



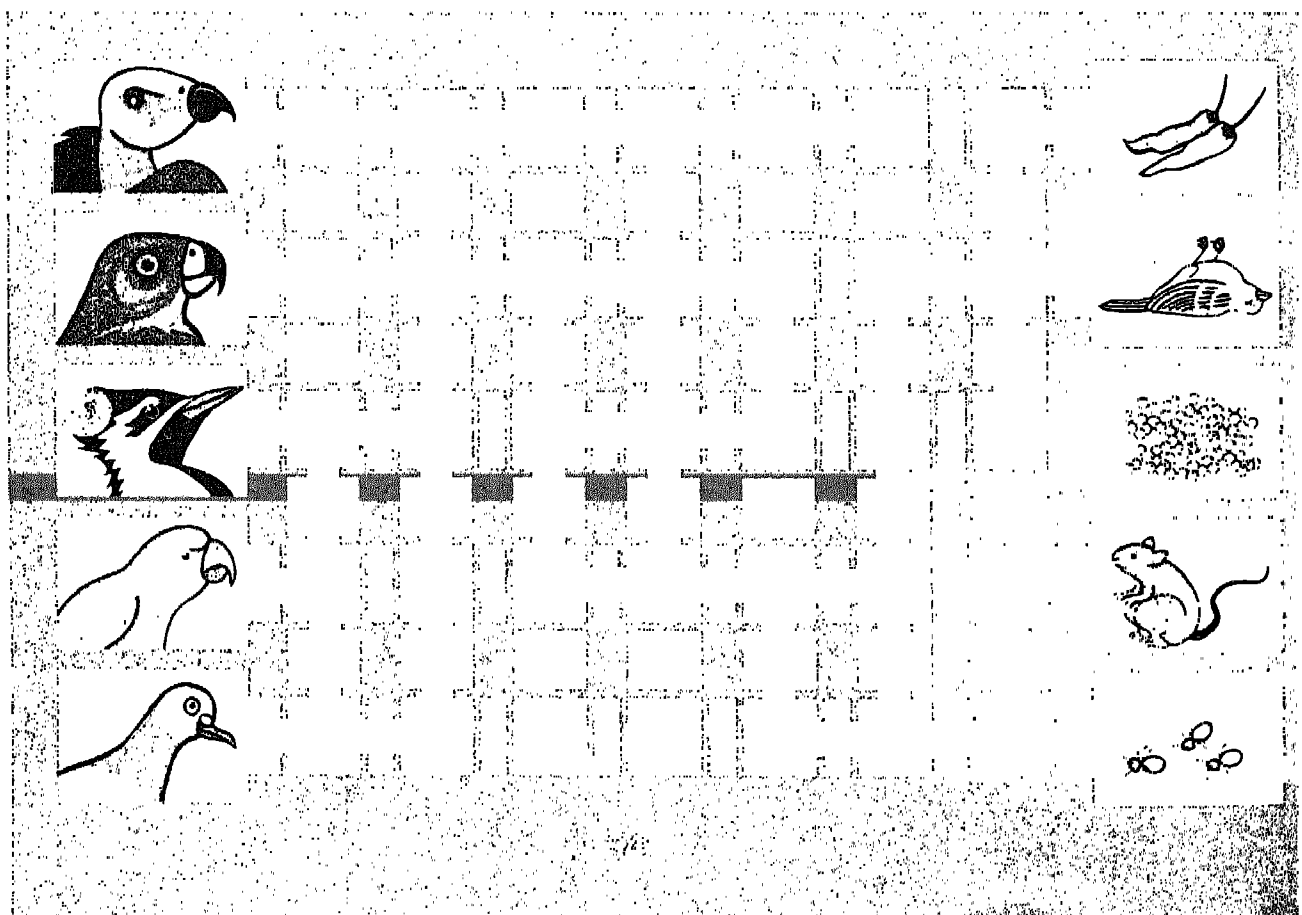
बच्चों की पक्षियों में रुचि बढ़ाने के लिए, बच्चे चुपचाप बैठकर पक्षियों को देखें तथा अपने अवलोकनों को नोट करना भी सीखें।



____________ ____________ ____________

देखा, पक्षियों की चोंच कितनी अलग-अलग तरह की होती है। उतना ही अलग-अलग तरह का होता है उनका भोजन! पक्षी तरह-तरह की चीज़ें खाते हैं। कोई फल खाता है, तो कोई बीज। कोई कीड़े-मकौड़े खाता है, तो कोई मछली।

चित्र में दिए गए पक्षियों को उनके भोजन के साथ जोड़ो।



क्या तुमने कभी ध्यान दिया है कि पक्षियों के उड़ने, चलने और गर्दन घुमाने के तरीके अलग-अलग हैं। मैना झटके से अपनी गर्दन आगे-पीछे करती है। उल्लू तो अपनी गर्दन पीछे तक घुमा सकता है। क्या तुम भी ऐसा कर सकते हो?

कई पक्षी ऐसे हैं, जो हमारी बोली की नकल कर सकते हैं। क्या तुम ऐसे किसी पक्षी का नाम जानते हो? उसका चित्र अपनी कॉपी में बनाओ और उसका नाम भी लिखो।

बाहर खुले में जाओ। पक्षियों को देखो कि वे कैसे चलते हैं, उनके पंख कैसे हैं और गर्दन कैसे हिलाते हैं। पक्षियों की आवाज़ें भी सुनो। किन्ही तीन पक्षियों की आवाज़ों की नकल करो। उनके गर्दन को हिलाने की भी नकल करो। अपने साथियों से कहो कि वे पहचानें तुमने किस पक्षी की नकल की है।

पक्षियों के पंख अलग-अलग रंगों व डिज़ाइन के होते हैं। उनके पंख उड़ने में मदद करते हैं। इतना ही नहीं, पंख उनके शरीर को गर्म भी रखते हैं। समय-समय पर पक्षियों के पुराने पंख झड़ जाते हैं और नए पंख आ जाते हैं। तुमने भी कई बार पक्षियों के गिरे हुए पंखों को देखा होगा।

पक्षियों के गिरे हुए पंखों को इकट्ठा करो और उनके रंग, आकार और आकृति पर चर्चा करो। एक पक्षी का चित्र अपनी कॉपी में बनाओ और उस पर पंख चिपकाओ। उसका नाम भी लिखो।

- पक्षियों के अलावा और कौन-कौन से जानवर उड़ सकते हैं?

_______________ _______________ _______________

_______________ _______________ _______________

⁘ अगर तुम भी पक्षियों की तरह उड़ सकते, तो तुम कहाँ-कहाँ जाते? क्या-क्या करते?

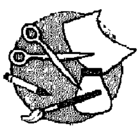
____

____

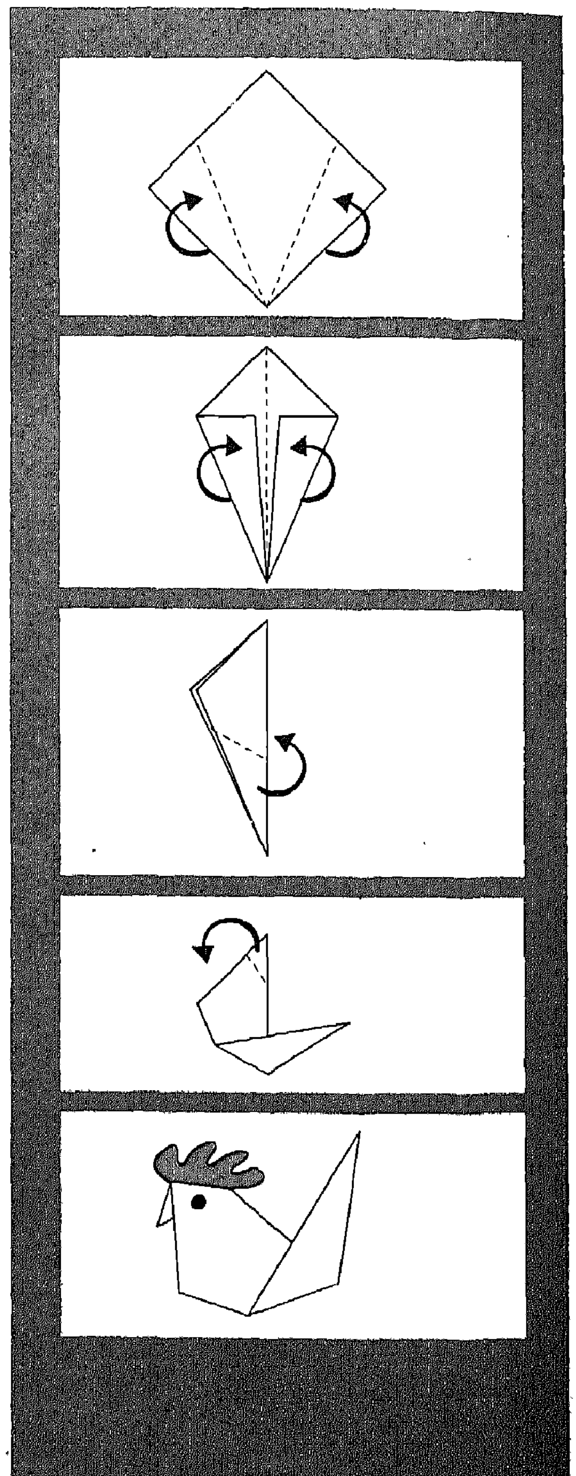
____



यदि पक्षी उड़ न सकें, बस अपने पैरों पर ही चलें तो क्या होगा?



आओ बनाएँ मुर्गा

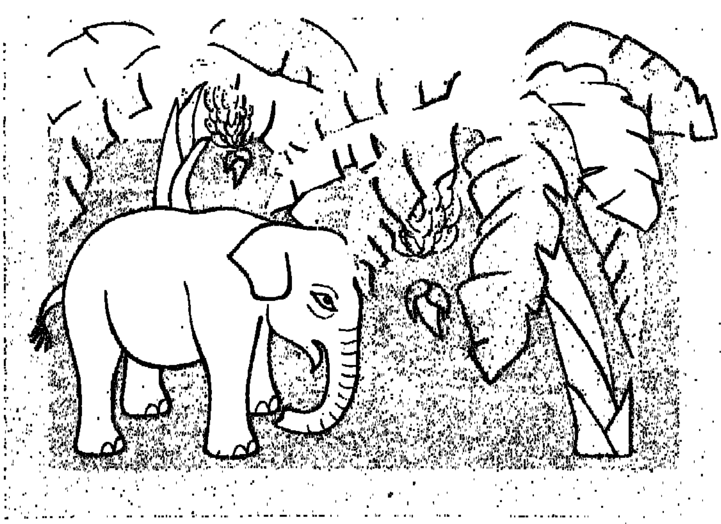


एक चौकोर कागज़ लो। इसे चित्र के अनुसार बिंदुओं की जगह से मोड़ो।

1. चित्र में दिखाए गए बिंदुओं से कागज़ को आधा मोड़ो।
2. अब कागज़ को बिंदु-रेखा से तीर के निशान की ओर मोड़ो।
3. चित्र में दिखाए गए तरीके से कागज़ को मोड़ कर मुर्गे की चोंच बनाओ।
4. अब एक लाल रंग के कागज़ को मुर्गे की कलगी के आकार में काटकर उसके सिर के ऊपर चिपका दो।
5. एक छोटे से काले कागज़ को गोल काटकर मुर्गे की आँख की जगह चिपका दो।

बस, हो गया तुम्हारा मुर्गा तैयार!

९ बादल आए, बारिश लाए



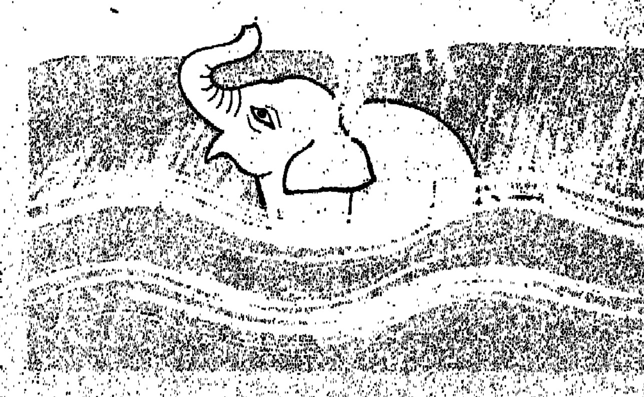
अप्पू हाथी को केले बहुत पसंद हैं। वह रोज़ केले के पेड़ों से केले तोड़कर खाता है।

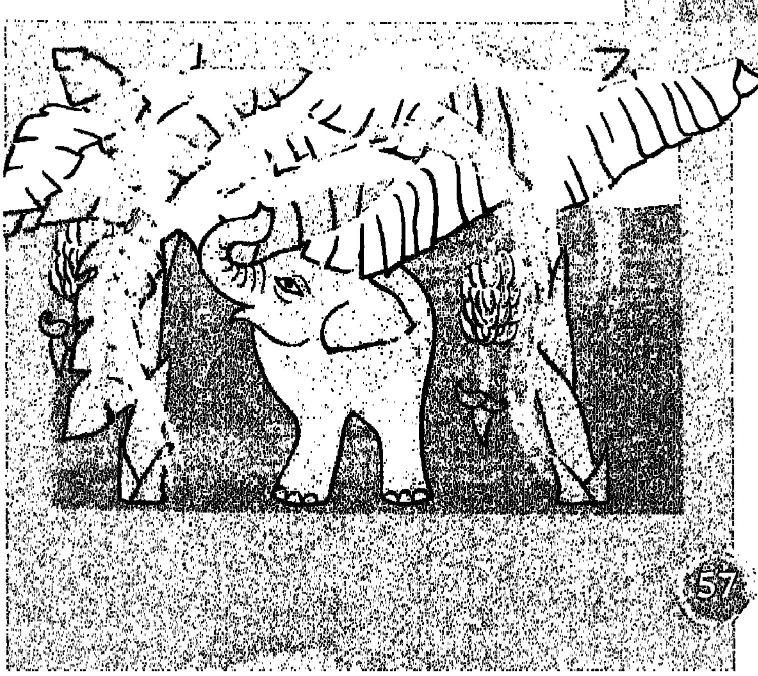
एक दिन उसने देखा कि केले के पेड़ मुरझा रहे हैं। बहुत दिनों से बारिश जो नहीं हुई थी।

अप्पू बोला – मैं अभी अपनी सूँड़ में पानी भरकर लाता हूँ।

वह नदी की ओर चल पड़ा।

नदी से अप्पू ने जी भरकर पानी पिया। सूँड़ में पानी भर-भर कर वह खूब नहाया।





फिर सूँड़ में पानी भरा और जाकर केले के पेड़ों को भी नहला दिया।

पानी मिलते ही केले के पेड़ खिल उठे। अप्पू बोला – अब मैं रोज़ तुम्हारे लिए पानी लाऊँगा, तुम मुझे मीठे-मीठे केले जो देते हो।

- अप्पू को कैसे पता लगा कि केले के पेड़ों को पानी चाहिए?

- तुम्हारे घर के आस-पास के पेड़-पौधों को पानी कहाँ से मिलता है?

- अप्पू हाथी ने नदी से जी भर कर पानी पिया। तुमने जानवरों को कहाँ-कहाँ पानी पीते देखा है?

- क्या तुमने कभी किसी जानवर को पानी पिलाया है? अगर हाँ, तो किसको?

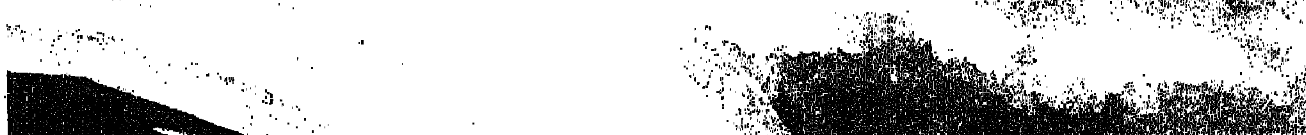
- जिन जानवरों को कोई पानी नहीं पिलाता, वे पानी कहाँ से पीते हैं?

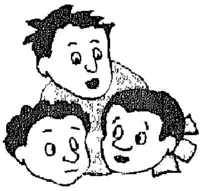
कहानी में तुमने पढ़ा कि केले के पेड़ को अप्पू हाथी ने पानी दिया। असल में तो हाथी पेड़ों को ऐसे पानी नहीं देते। तो फिर उन पेड़-पौधों को पानी कहाँ से मिलता है, जिन्हें कोई पानी नहीं देता?

पेड़-पौधों को ज़्यादातर पानी बारिश से मिलता है। बारिश आते ही पेड़-पौधे खिल उठते हैं। आओ, बारिश के बारे में एक कविता पढ़ें।

गोरे-गोरे, काले-काले,
बादल आए जादू वाले।
कुत्ता-गइया
हाथी-घोड़ा
और कभी
हंसों का जोड़ा
या फिर बनकर अरना भैंसे
दौड़ेंगे हो कर मतवाले।
पल में आते
पल में जाते
महीनों कभी
नज़र ना आते
और कभी जम जाते ऐसे
हफ़्तों तक ना टलते टाले।
कभी गरजते
कभी बरसते
इंद्रधनुष के
रंग परसते
और कभी ओले बरसा के
तोड़ गए हैं शीशे-प्याले।

— [illegible]

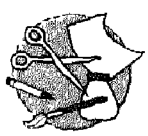




कवि को बादलों में बहुत कुछ दिखा। क्या तुम्हें भी बादलों में कभी कुछ दिखा है? क्या?

- बादल क्या-क्या करते हैं?
- बारिश आने पर तुम्हें कैसा लगता है?
- बारिश आने पर बादलों के अलावा और क्या-क्या दिखाई देता है?
- क्या तुमने कभी इंद्रधनुष देखा है? इंद्रधनुष कब दिखाई देता है?
- बारिश होने पर क्या-क्या होता है?

बारिश होने पर नाव बनाने और उसे पानी में चलाने में मज़ा आता है ना? कागज़ की नाव बनाओ और उसे पानी में तैराओ।



क्या तुमने बारिश में कोई परेशानी झेली है या देखी है? अपने अनुभवों के आधार पर चित्र बनाओ।

वाह रे बारिश तेरी शान, कोई है खुश, कोई परेशान।

बच्चों के बारिश से जुड़ें अनुभवों को सुनने से, बारिश से होने वाले प्रभावों – अच्छे या बुरे – दोनों पर गहराई से चर्चा हो सकती है।



चित्र में जिन जगहों में बिंदु (•) लगे हैं, उनमें रंग भरो। क्या-क्या उभर कर आया?

_____________ _____________ _____________ _____________

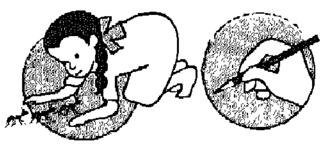
_____________ _____________ _____________ _____________

तुमने चित्र में खाना पकाने के कई बर्तन ढूँढ़ लिए होंगे। क्या तुम्हारे घर में इनके अलावा कुछ अन्य बर्तनों का भी इस्तेमाल होता है? कौन-से?

_______________ _______________ _______________

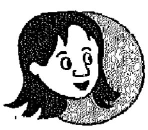
_______________ _______________ _______________

_______________ _______________ _______________

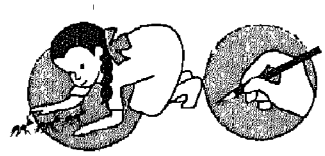


बर्तन किन-किन चीज़ों के बने होते हैं?

_______________ _______________ _______________



अपने बुज़ुर्गों से पता करो कि पहले किस तरह के बर्तन ज़्यादा काम में आते थे। वे किस चीज़ के बने होते थे?



हम खाने की हर चीज़ को तो पकाकर नहीं खाते। पता करो कि हम किन चीज़ों को कच्चा खाते हैं और किन को पकाकर। किन चीज़ों को, कच्चा या पकाकर, दोनों तरह से खाया जाता है। दी गई तालिका में भरो।

कच्ची खाई जाने वाली चीज़ें	पकाकर खाई जाने वाली चीज़ें	कच्ची और पकाकर खाई जाने वाली चीज़ें

तुमने कभी रोटी बनते देखी है? इसके लिए कितने काम करने पड़ते हैं – आटे को बर्तन में निकालना, उसे गूँधना, आटे के छोटे-छोटे गोले बनाना, गोले को बेलना और फिर सेकना। इतने सारे काम करने के बाद रोटी थाली में आती है।

अब तुम रसोई में जाकर किसी एक चीज़ को पकते देखो। उसे पकाने के लिए क्या-क्या किया गया? क्रम से लिखो। चीज़ का नाम लिखना मत भूलना। अपने कुछ साथियों की कॉपी भी देखो। समूह में इस पर चर्चा करो।

चीज़ का नाम ______________

1. ______________ 2. ______________ 3. ______________

4. ______________ 5. ______________ 6. ______________

तुमने देखा, खाने की चीज़ें तरह-तरह से पकाई गईं हैं। कोई सेककर तो कोई तलकर। किसी को भूनते हैं, तो किसी को भाप में पकाते हैं।

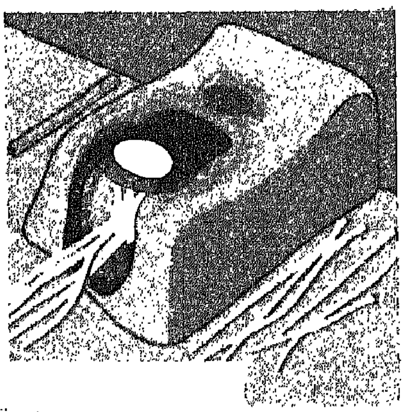
दिए गए पकाने के तरीके के सामने दो-दो चीज़ों के नाम लिखो, जो उस तरीके से पकाई जाती हैं। खाली जगह में कुछ अन्य तरीके भी जोड़ो और उनके उदाहरण भी लिखो।

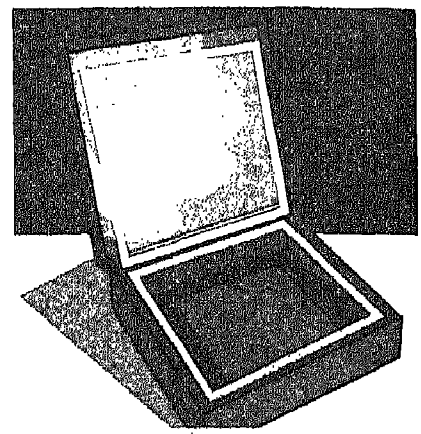
पकाने का तरीका	चीज़ों के नाम	
भूनकर	______________	______________
उबालकर	______________	______________
तलकर	______________	______________
सेककर	______________	______________
______________	______________	______________
______________	______________	______________

घर के लोगों से बात करके बच्चे अपनी जानकारी बढ़ाएँ, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि शिक्षिका के अलावा और व्यक्ति भी जानकारी के स्रोत हो सकते हैं।

⁘ तुम्हारे घर में भोजन किस पर पकाया जाता है? उसका चित्र कॉपी में बनाओ और उसका नाम लिखो।

⁘ नीचे दिए गए चित्रों को पहचान कर उनके नाम लिखो। इनको जलाने के लिए क्या-क्या इस्तेमाल होता है – उससे उसका मिलान करो। मिलान एक से ज़्यादा चीज़ों से हो सकता है।





मिट्टी का तेल

कोयला

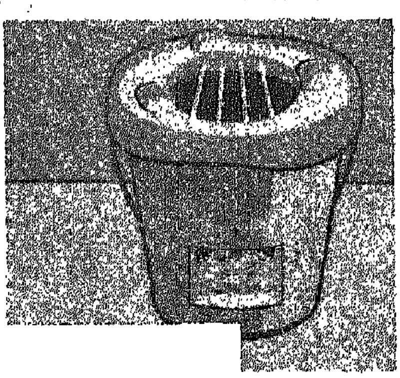
बिजली

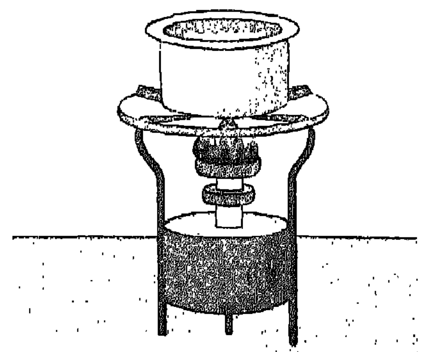
गैस

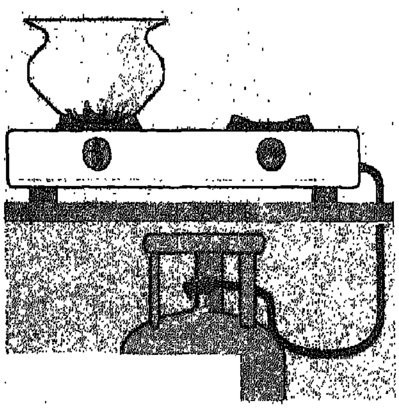
धूप

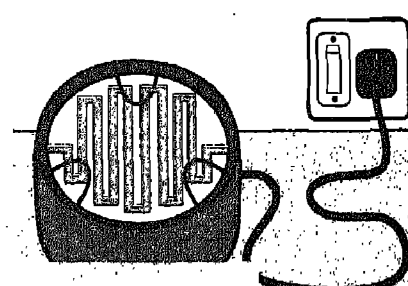
लकड़ी

उपले









खाना पकाने के अलग-अलग तरीकों पर बच्चों के अपने अनुभव रुचिकर हो सकते हैं। घरों में प्रयोग किए जाने वाले ईंधन से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर चर्चा भी हो सकती है।

साबुत मूंग को पानी में रात भर भिगो दो। सुबह उन्हें गीले कपड़े में लपेटो और ढक कर किसी बर्तन में रखो। एक-दो दिन बाद उन्हें खोलकर देखो। क्या उनमें कुछ अंतर दिखता है?

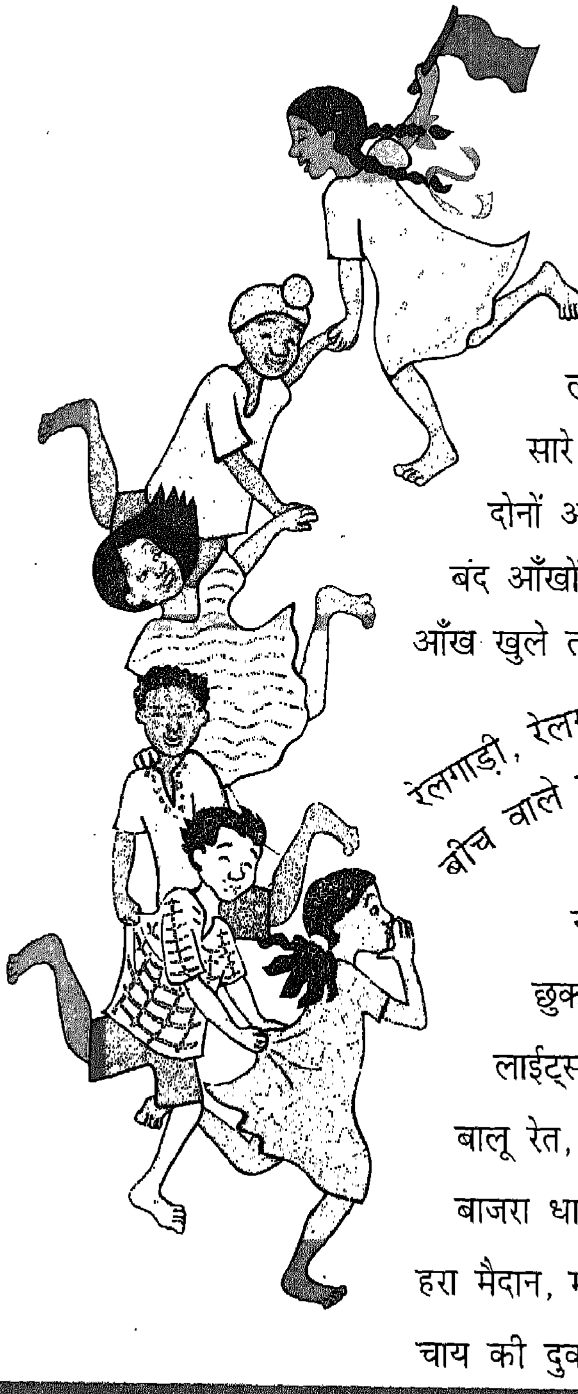
इनमें कुछ कटा हुआ प्याज़, टमाटर, नमक और नींबू का रस मिलाओ। कक्षा में मिल बाँट कर खाओ।

ऐसी और कौन-सी चीज़ें हैं, जिन्हें तुम बिना पकाए तैयार कर सकते हो? नीचे उनके नाम और तरीके भी लिखो।

1. नींबू की शिकंजी	पानी में शक्कर घोलना	→	नींबू का रस डालना	→	छानना	→	शिकंजी तैयार है।
2. ________		→		→		→	
3. ________		→		→		→	

बच्चों को मिलजुल कर खाने की चीज़ें बनाने में मज़ा आता है। वे अपने परिवेश के अनुसार कुछ चीज़ें बना सकते हैं।

रेलगाड़ी



आओ बच्चों खेल दिखाएँ,
छुक-छुक करती रेल चलाएँ।
सीटी देकर सीट पर बैठो,
एक-दूजे की पीठ पर बैठो।
आगे-पीछे, पीछे-आगे,
लाइन से लेकिन कोई ना भागे।
सारे सीधी लाइन में चलना,
दोनों आँखें मीचे रखना।
बंद आँखों से देखा जाए,
आँख खुले तो कुछ न पाए।
रेलगाड़ी, रेलगाड़ी, छुक-छुक छुक-छुक, छुक-छुक-छुक-छुक-छुक।
बीच वाले स्टेशन बोले, रुक-रुक-रुक-रुक, रुक-रुक-रुक-रुक-रुक।
तड़क-भड़क, लोहे की सड़क,
यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ।
छुक-छुक, छुक-छुक,
लाईट्स आती, पार कर जाती।
बालू रेत, आलू का खेत,
बाजरा धान, बुड्ढा किसान।
हरा मैदान, मंदिर मकान,
चाय की दुकान...

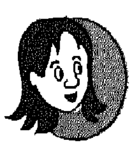
रेलगाड़ी, रेलगाड़ी, छुक-छुक छुक-छुक, छुक-छुक-छुक-छुक।
बीच वाले स्टेशन बोले, रुक-रुक-रुक-रुक, रुक-रुक-रुक-रुक।

पुल पगडंडी, टीले पे झंडी,
पानी का कुंड, पंछी का झुंड।
झोंपड़ी-झाड़ी, खेती-बाड़ी,
बादल धुआँ, मोठ कुआँ।
कुएँ के पीछे, बाग बगीचे,
धोबी का घाट, मंगल की हाट।
गाँव में मेला, भीड़ झमेला,
टूटी दीवार, टट्टू सवार...

रेलगाड़ी, रेलगाड़ी, छुक-छुक छुक-छुक, छुक-छुक-छुक-छुक।
बीच वाले स्टेशन बोले, रुक-रुक-रुक-रुक, रुक-रुक-रुक-रुक।

– हरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय की कविता के कुछ अंश

तो कैसी लगी यह कविता!



- क्या तुम रेलगाड़ी में बैठे हो? कब-कब?
- क्या रेलगाड़ी कहीं भी चल सकती है? क्यों?
- इस कविता में 'लोहे की सड़क' किसको कहा गया है?



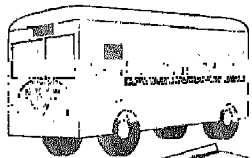
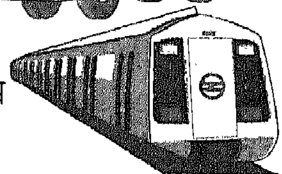
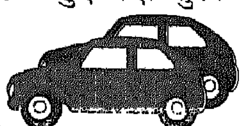
- कविता में रेलगाड़ी कहाँ-कहाँ से होकर गई है? सूची बनाओ।

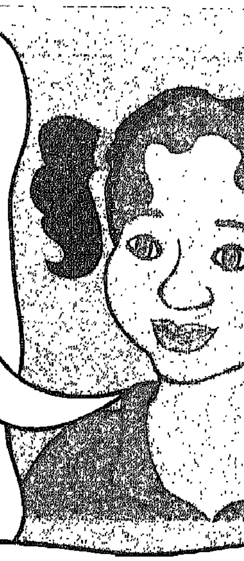
_______________ _______________ _______________

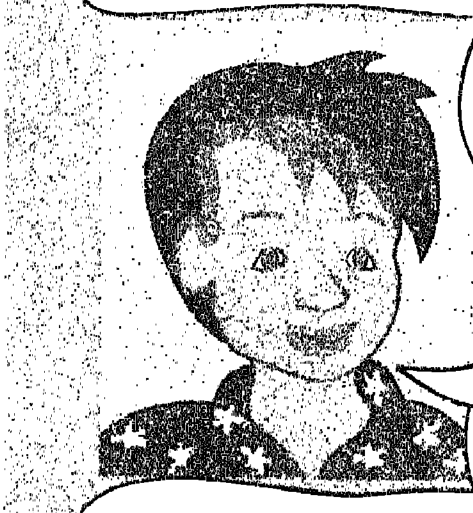
_______________ _______________ _______________

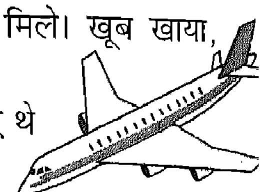
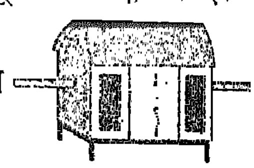
- तुम किस-किस वाहन पर बैठे हो? उनके नाम अपनी कॉपी में लिखो।

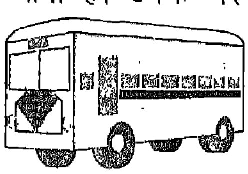
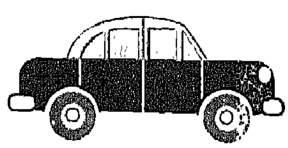
आओ, तुम्हें कुछ बच्चों से मिलवाएँ और पता करें कि उन्होंने अपनी छुट्टियाँ कैसे बिताईं।

मैं चाचाजी के पास दिल्ली गई थी। रेलवे स्टेशन से उनके घर पहले तो  से जाते थे, पर इस बार तो मज़ा आ गया। हम  में बैठ कर ज़मीन के नीचे सुरंग से होते हुए गए। सुरंग में जाते हुए अहसास ही नहीं हुआ कि ऊपर  सरपट भाग रहीं होंगी।



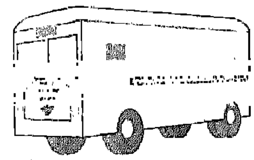
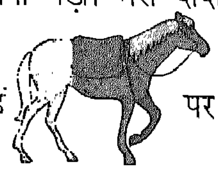


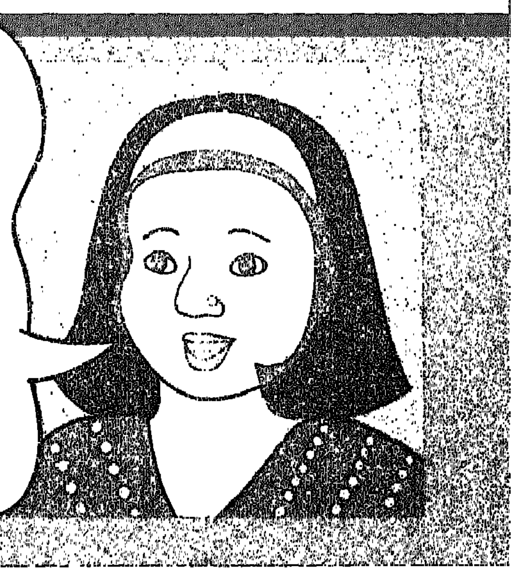
मेरी तो बुआ की शादी थी। इतने सारे रिश्तेदार मिले। खूब खाया, पिया और खेले। बड़े भैया भी अमेरिका से आए थे  में बैठकर। सोचो तो अजीब लगता है – इतनी दूर से आए, पर एक ही दिन में पहुँच गए। दुल्हन बनी बुआ को जब  में ले जा रहे थे, वह बहुत सुंदर लग रहीं थी।

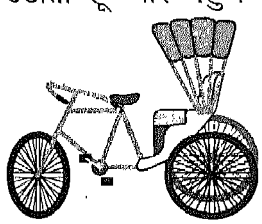
मैं अपनी नानी के घर केरल गई थी। वे जहाँ रहती हैं, आस-पास पानी ही पानी है। उनके घर जाने के लिए घूम कर जाते तो स्टेशन से  या  ले सकते थे। पर हम सीधे  में गए। कुछ अजीब लगा पर अच्छा भी!

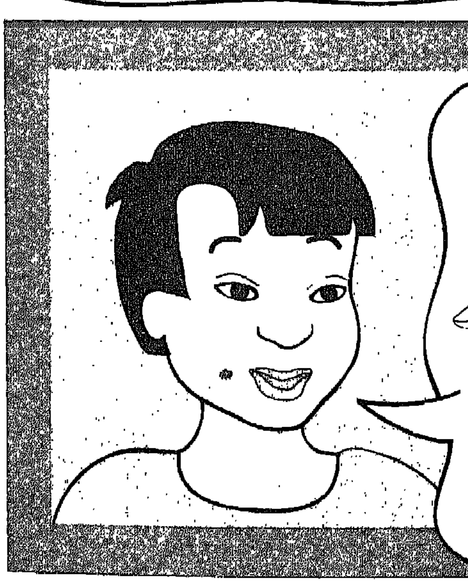


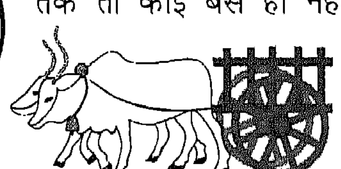


हम लोग छुट्टियों में शिमला घूमने गए। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर जब टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होकर  चलती है, तब नीचे देखकर बहुत डर लगता है। शिमला में हमें बहुत पैदल चलना पड़ा। मेरी दादी तो जल्दी ही थक जाती थी। हम उन्हें  पर बिठा देते थे। मैं तो मज़े से पैदल चलता था। थकता भी नहीं था।



मेरी खाला तो मेरे घर के पास ही रहती है। जब भी खाला के पास जाने का मन करता है, मैं झट अपनी  उठाती हूँ और पहुँच जाती हूँ उनके पास। माँ और छोटू तो  पर बैठकर नानी के घर जाते हैं।



इन छुट्टियों में मैं अपने मामाजी के गाँव गया था। उनके गाँव तक तो कोई बस ही नहीं जाती। हम लोग रेलवे स्टेशन से  में बैठकर लहलहाते खेतों के बीच में से होकर गाँव तक गए। मुझे तो बैलों के गले में बंधी घंटियों की आवाज़ सुनना बहुत अच्छा लगा।

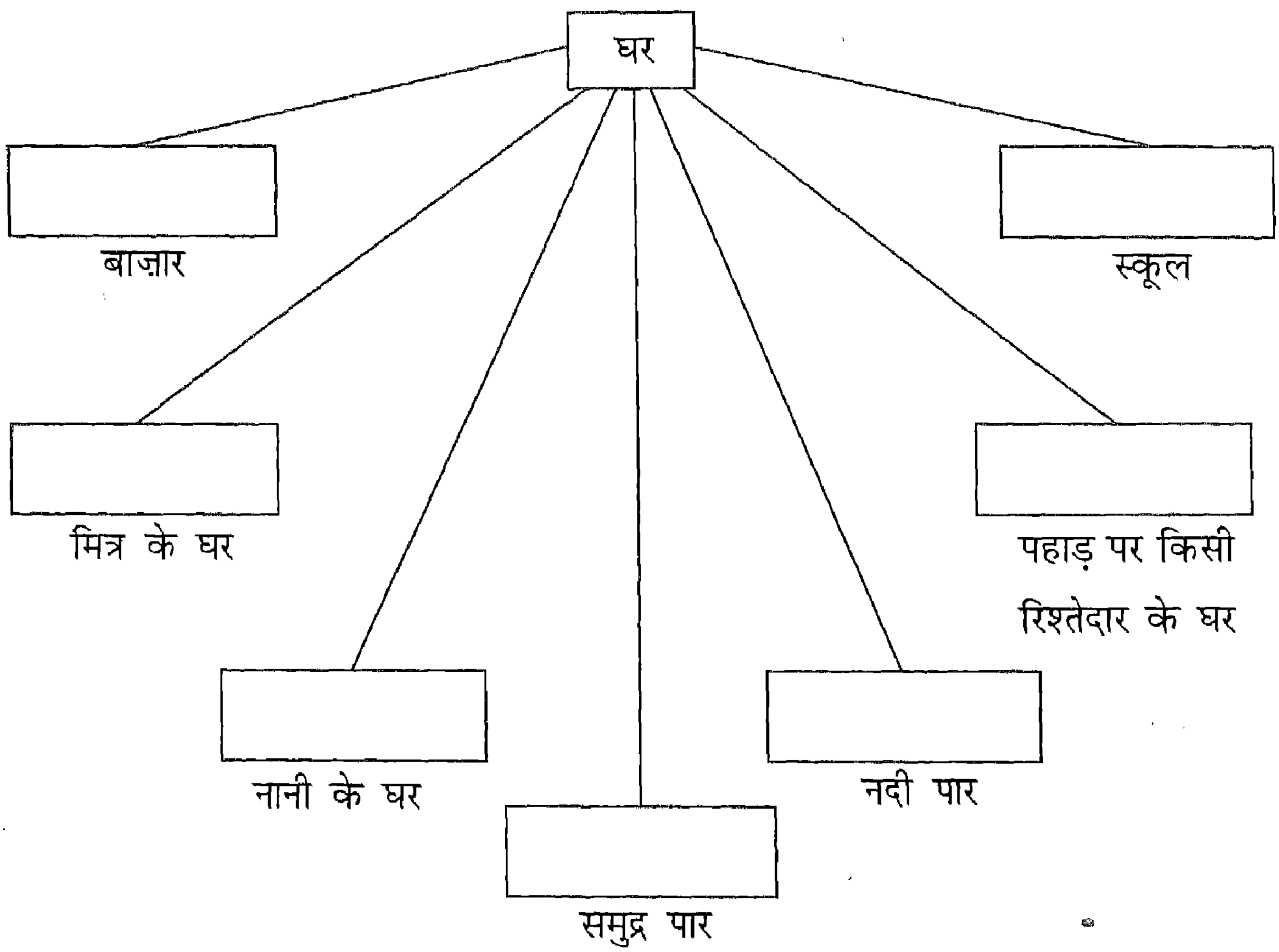
❖ बच्चों ने किन-किन वाहनों के नाम लिए?

________________ ________________ ________________

________________ ________________ ________________

________________ ________________ ________________

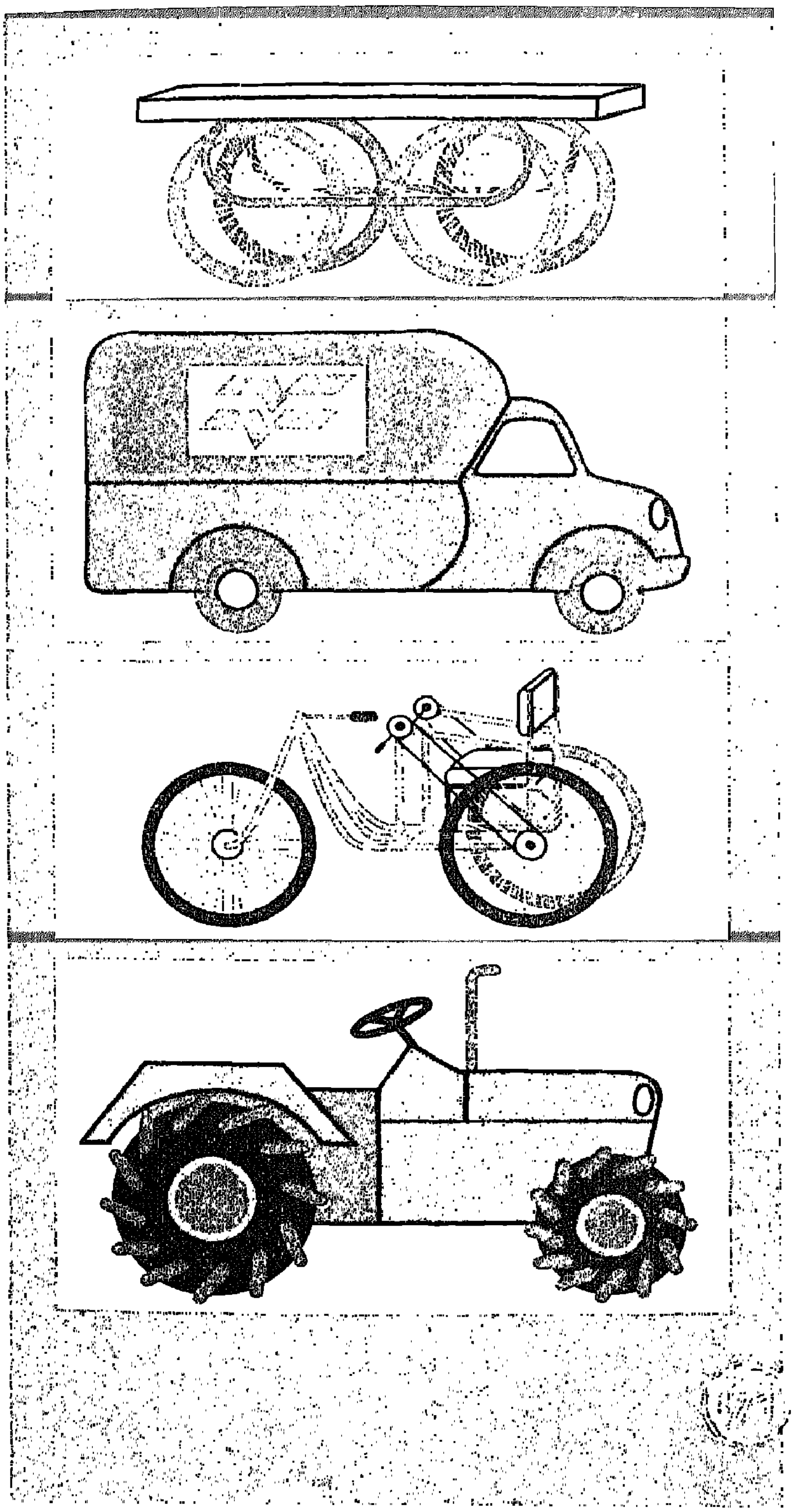
❖ नीचे लिखी जगहों पर अपने घर से कैसे जाना चाहोगे? वाहन का नाम डिब्बे में लिखो।

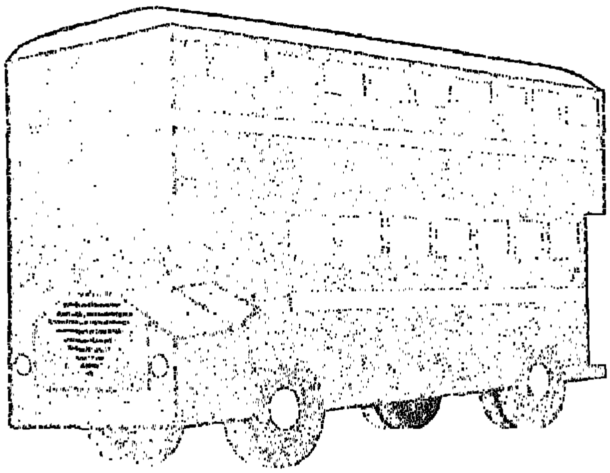
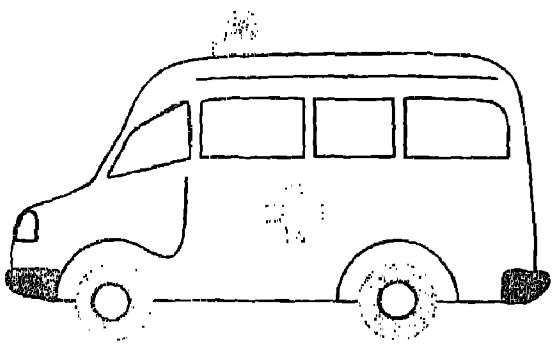


बच्चों ने कई वाहनों को या तो वास्तव में या किताबों, फिल्मों आदि में देखा होगा। यह सभी अनुभव बच्चों से चर्चा करने में मदद कर सकते हैं।

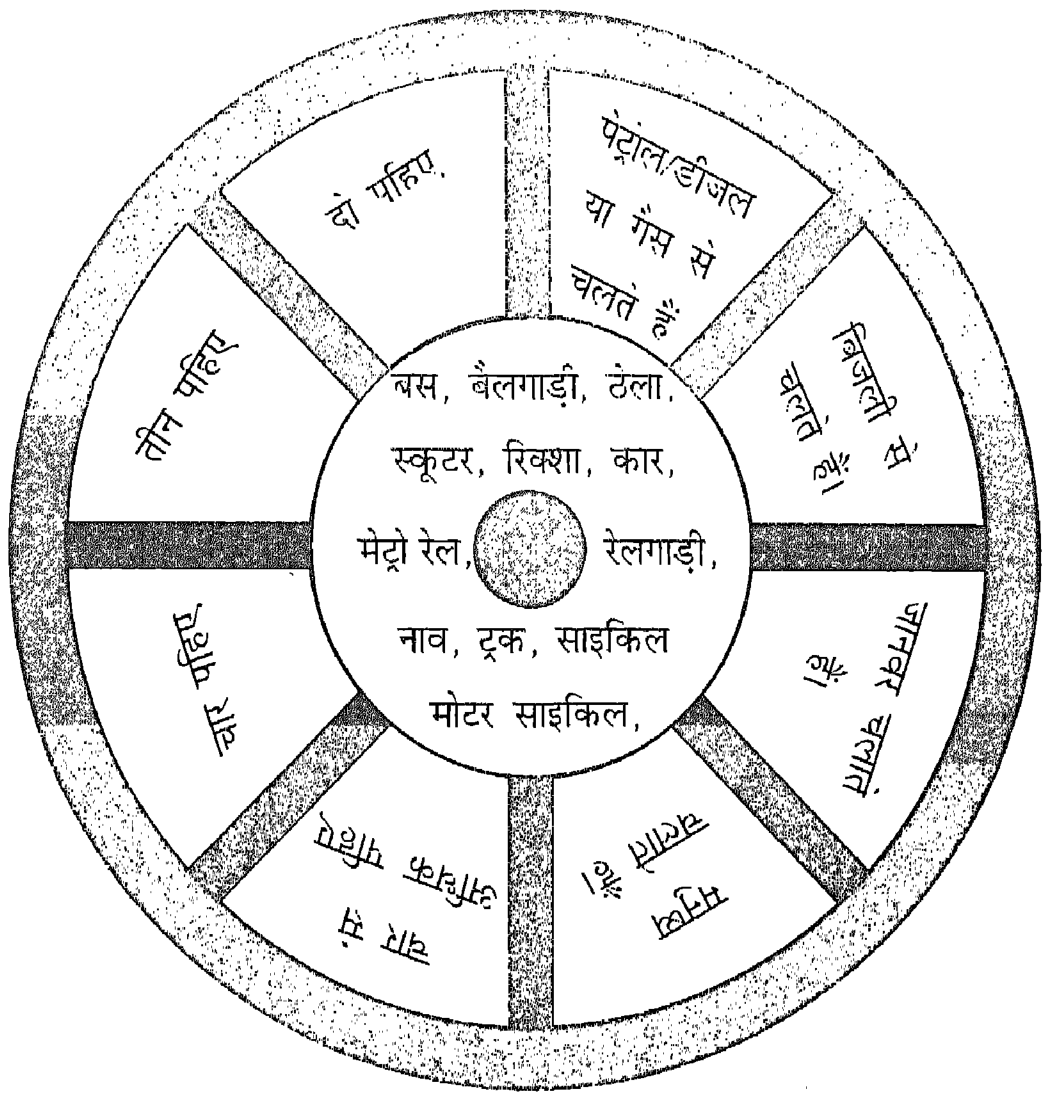
कुछ वाहनों के चित्र बने हैं। चित्र के सामने उनके नाम तथा वे किस काम आते हैं लिखो। खाली जगह में अन्य वाहनों के चित्र बनाओ। उनके नाम और काम भी लिखो। क्या ये सभी वाहन केवल हमारे आने-जाने के काम आते हैं?

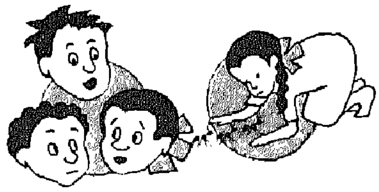
वाहन	काम



वाहन	काम
	
	

नीचे दिए चित्र में कुछ वाहनों के नाम लिखे हैं। तुम्हें हर वाहन को एक तरफ़ उसके पहिए की संख्या से जोड़ना है। दूसरी तरफ़ उसी वाहन को वह जिससे चलता है, उससे जोड़ना है।





बड़ों से पूछ कर पता लगाओ – आज से पचास साल पहले लोग कैसे आते-जाते थे? क्या तब भी यही सब साधन थे?



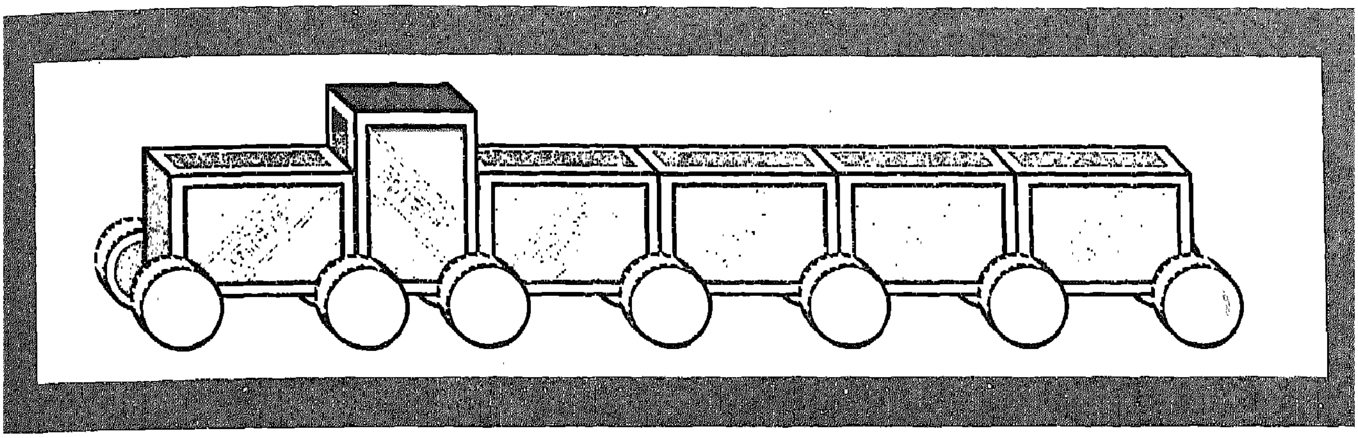
क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि बीस साल बाद लोग आने-जाने के लिए किस-किस तरह के वाहन का प्रयोग करेंगे? अपने घर के लोगों और दोस्तों से पूछ कर दी गई तालिका भरो।

किससे पूछा	क्या कहा
स्वयं से (मैं)	________________
दोस्त	________________
चाचा	________________
शिक्षिका	________________
________________	________________
________________	________________
________________	________________
________________	________________
________________	________________
________________	________________
________________	________________

बड़ों से प्राप्त जानकारी पर आधारित चर्चा बच्चों को वाहनों में आए बदलावों को समझने में सहायता करेगी। किताब में बुर्जुर्गों – नाना-नानी, दादा-दादी से इसीलिए बार-बार पूछने को कहा गया है ताकि उस समय के और अभी के बीच के अंतर को बच्चे पहचान सकें।

तुम्हारी अपनी रेलगाड़ी

दिए गए चित्र की मदद लेकर माचिस से रेलगाड़ी बनाओ।



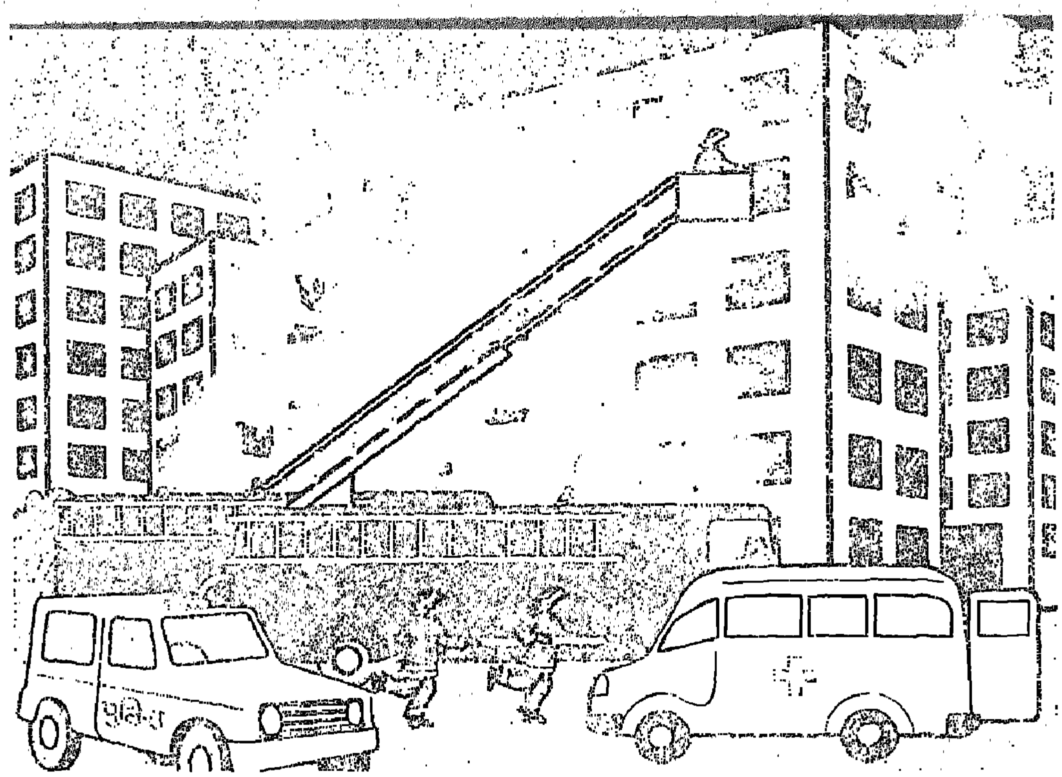
अगर कोई छुक-छुक की आवाज़ करे तो तुम झटपट पहचान ही जाते हो कि वे रेलगाड़ी के लिए कह रहें हैं।

क्या तुम इन आवाज़ों से वाहन को पहचान सकते हो? लिखो।

छुक-छुक	-	रेलगाड़ी	पीं-पीं	-	__________
पौं-पौं	-	__________	टप-टप	-	__________
घर्र-घर्र	-	__________	ट्रिन-ट्रिन	-	__________

- यह तो थी एक-एक वाहन की आवाज़। जब सड़क पर एक साथ कई वाहन आवाज़ें करते हुए चलते हैं, तो कैसा लगता है? मचता है न कितना शोर!
- तुमने सबसे ज़्यादा शोर कहाँ सुना है?
- क्या तुम्हें इतना शोर अच्छा लगता है? क्यों?

रेलगाड़ी का मॉडल बनाने के लिए माचिस के अलावा टिन के डिब्बे भी इस्तेमाल में लाए जा सकते हैं और पहिए बोतल के ढक्कन या बटन से भी बनाए जा सकते हैं।



चित्र में तुम्हें क्या-क्या दिखाई दे रहा है?

____

____

तुम्हें कौन-कौन से वाहन दिखाई दे रहे हैं?

____

____

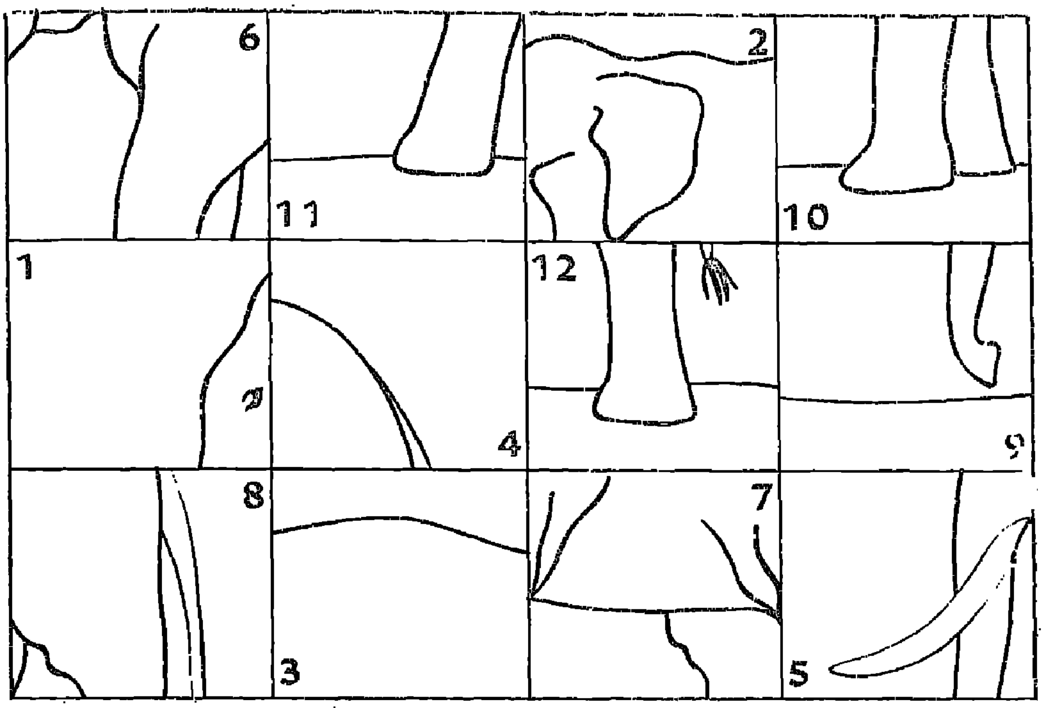
ये वाहन क्या-क्या काम कर रहे हैं?

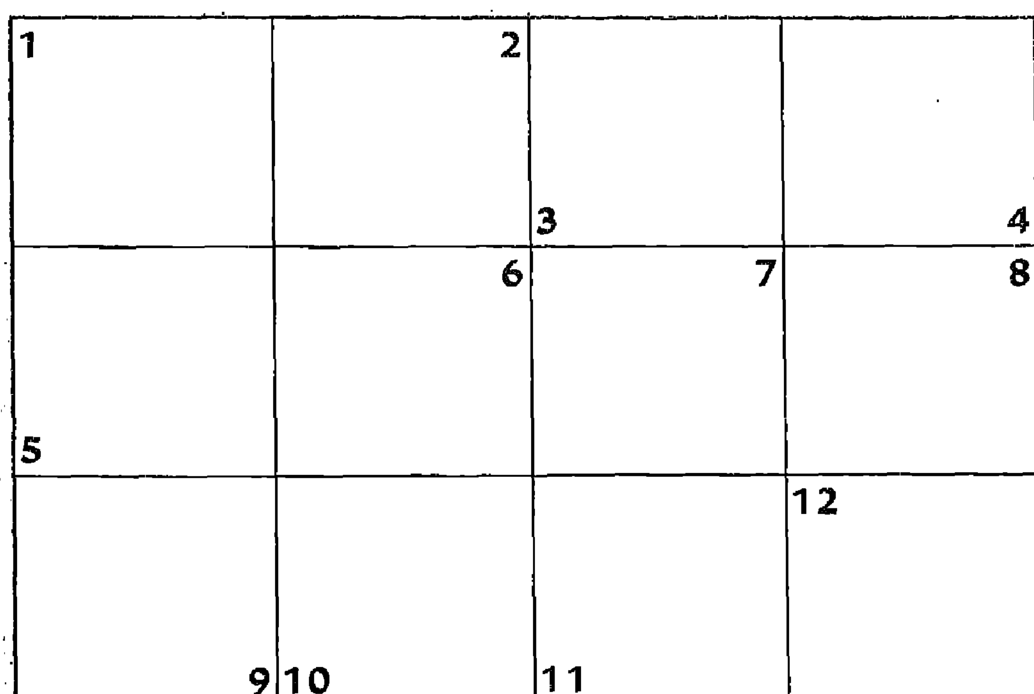
____

____

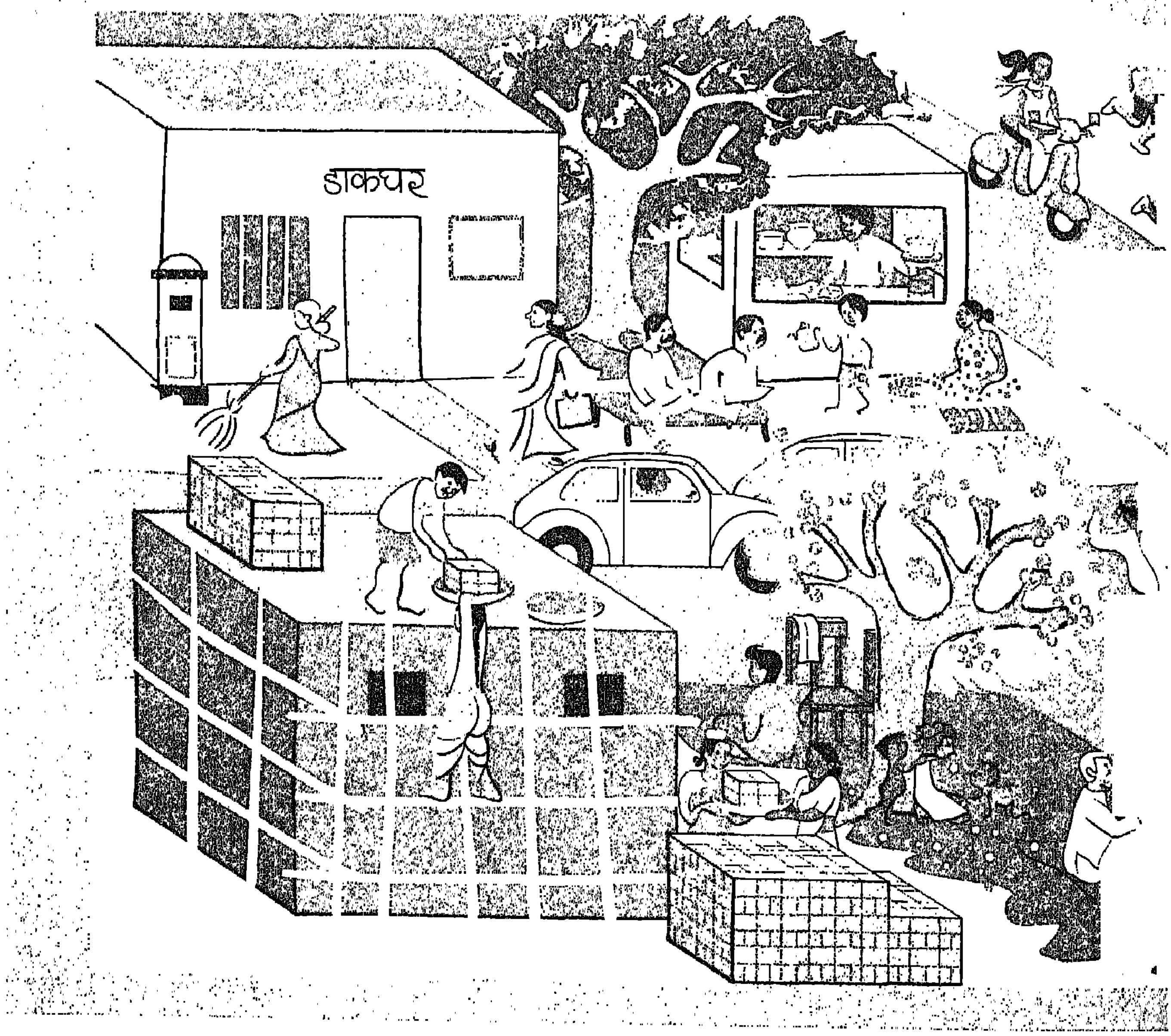
चित्र की मदद से आपातकालीन स्थितियों पर चर्चा की शुरुआत की जा सकती है।

ऊपर के खानों को देखकर नीचे उन्हें क्रम से बनाओ और रंग भरो। देखो क्या बनता है! उसका नाम भी लिखो।



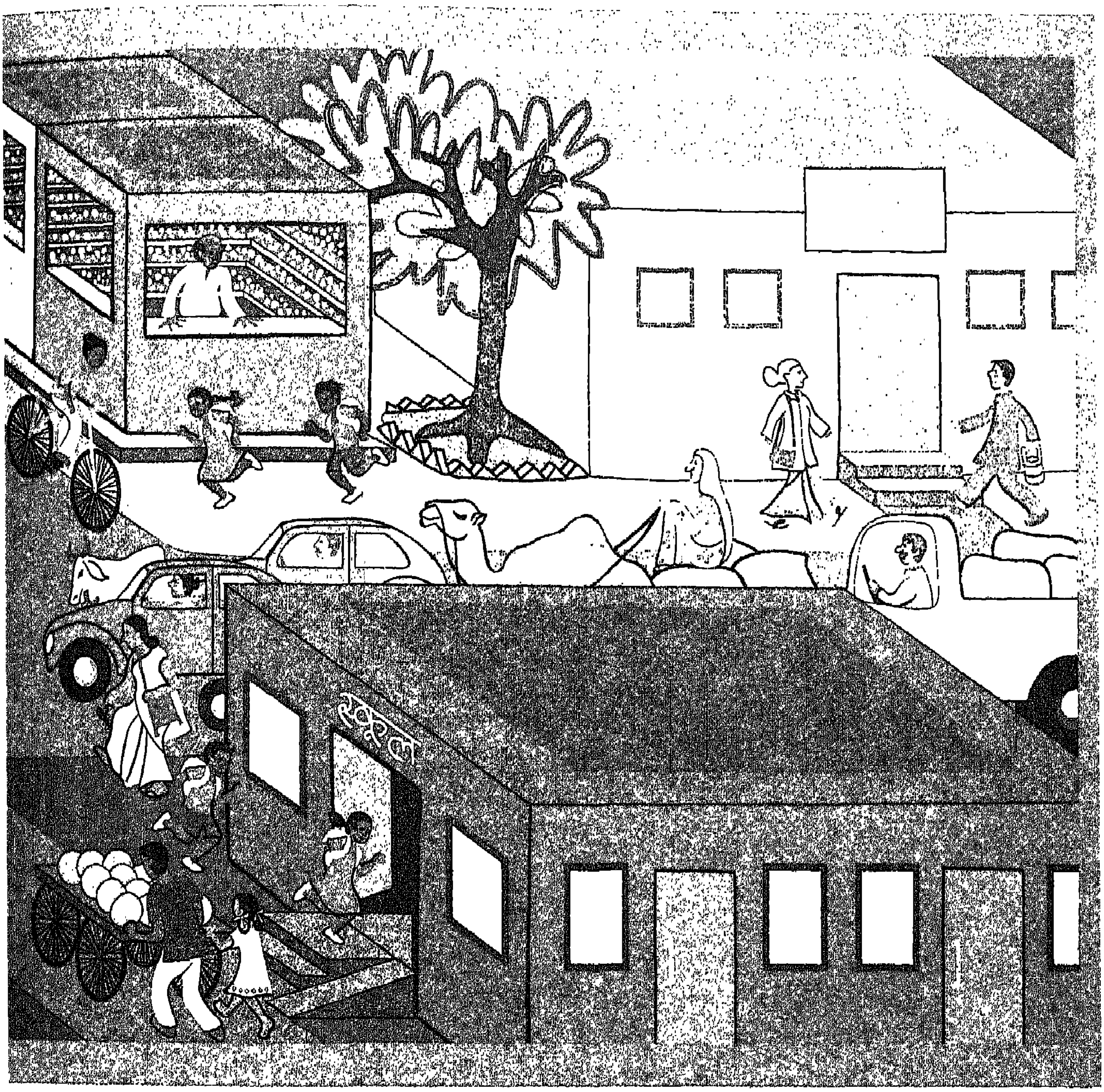


12 काम अपने अपने



रोज़ की तरह बलबीर नाश्ता कर के पहुँच गया चाय की दुकान पर। आज उसके साथ गाँव से आया उसका भाई सतविंदर भी था। चाय वाले ने चाय पकड़ाते हुए कहा – लो अखबार भी पढ़ो।

आप यहाँ दिन भर समय कैसे काटते हो? बैठे-बैठे ऊब नहीं जाते? – सतविंदर ने पूछा।



अरे, समय तो यूँ निकल जाता है, पता ही नहीं चलता! वहाँ देखो, बच्चों को रोज़ की तरह स्कूल पहुँचने में देर हो गई है। भाग रहें हैं सब! वह मैडम भी आज देर से आई हैं। अरे! लगता है, उनकी सैंडल टूट गई है। अब जा रही हैं, जग्गू भाई के पास, सैंडल ठीक करवाने। अच्छा है, जग्गू की सुबह-सुबह कमाई हो गई।

पाठ पढ़ने से पहले यदि बच्चों को ध्यान से चित्र देखने और समझने का मौका दिया जाए तो उनमें चित्र अवलोकन का कौशल विकसित होगा।

वहाँ चंपा बैठी है, अपनी फूलों की टोकरी सजाकर। पोस्टऑफिस में काम करने वाली मैडम रोज़ सुबह उससे फूल खरीदती हैं।

ट्रक में सामान आ रहा है। मकान का काम फिर से शुरू हो गया है। मज़दूर फिर से दिन भर काम में लगे रहेंगे।

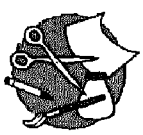
उधर अस्पताल की तरफ़ देखो, डॉक्टर और नर्स साथ-साथ आ रहे हैं।

उस रामुलू को देखो, फल के ठेले के साथ। आजकल वह चिनम्मा को भी अपने साथ काम पर लाता है। चिनम्मा दौड़कर फल पहुँचाती है, पैसे इकट्ठे करती है।

वहाँ नानू नाई अपनी दुकान खोलकर हजामत करने के लिए तैयार बैठा है – पर किस की करे?

चौराहे के बीच खड़ा है इकबाल सिंह, जो दिन-भर सीटी बजाता है। पी ई ई... ऐ, गाड़ी इधर से निकालो... सुना नहीं... ठेला इधर...।

इतना कहकर बलबीर ने चाय का खाली कप रखा और चल दिया पास की दुकान की तरफ़।



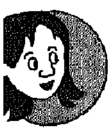
एक्टिंग करके दिखाओ – किसी चौराहे पर, हाट-बाज़ार पर लोग क्या-क्या कर रहे होते हैं।



❋ अब ध्यान से चित्र देखकर लिखो कि क्या-क्या काम हो रहे हैं।

❋ तुम्हारे घर के आस-पड़ोस में होने वाले कोई पाँच काम लिखो। इन काम करने वालों को क्या कहते हैं उनके काम के सामने लिखो।

काम	क्या कहलाते हैं
स्कूटर-कार ठीक करना	मैकेनिक



पहले चित्र में कुछ इमारतें दिखाई गई हैं। यहाँ उन इमारतों के नाम पर लाल रंग से ◯ बनाओ। अब इनमें से तुम्हारे आस-पास जो इमारतें हैं, उन पर हरे या किसी और रंग से ◯ बनाओ।

डाकघर	अस्पताल	मंदिर
टेलीफोन बूथ	स्कूल	कॉलेज
सरकारी दफ्तर	गिरजाघर	बहुमंजिला मकान
मस्जिद	होटल	बस अड्डा
सिनेमाघर	पुलिस थाना	बैंक
पेट्रोल पंप	दुकान	गुरुद्वारा
धर्मशाला	रेलवे स्टेशन	कचहरी

※ किन्हीं पाँच इमारतों के नाम और उनमें क्या काम होते हैं, लिखो।

इमारत का नाम	क्या-क्या काम होता है
अस्पताल	बीमारों का इलाज, बच्चों का टीका
__________	__________
__________	__________
__________	__________
__________	__________
__________	__________

तुमने चित्र में देखा कि नई इमारत बनाने के लिए बहुत सारे लोग एक साथ काम करते हैं।

※ स्कूल भी ऐसी जगह है, जहाँ कई लोग काम करते हैं। लिखो, स्कूल में क्या-क्या काम होते हैं।

__________ __________

__________ __________

__________ __________

※ क्या चित्र में ऐसे बच्चे भी हैं, जो स्कूल नहीं जा रहे? वे क्या कर रहे हैं?

____

____

घर का काम

दीपाली भी ऐसी ही एक लड़की है जो स्कूल नहीं जाती। आओ, उसके बारे में जानें। दीपाली अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी है। उसके पिताजी सब्ज़ी की रेहड़ी लगाते हैं।

वे सुबह चार बजे ही मंडी चले जाते हैं । उसकी माँ लोगों के घर बर्तन साफ़ करती है। वह भी सुबह जल्दी घर से चली जाती है। दीपाली अपने भाई-बहनों के लिए खाना बनाती है। घर की सफ़ाई के साथ-साथ वह बर्तन भी माँजती है। उसे रेडियो सुनने का बहुत शौक है। काम करते समय वह साथ-साथ गाने भी सुनती रहती है। काम खत्म करके वह अपने छोटे भाई राजू को पिताजी की रेहड़ी पर छोड़ती है। फिर अपनी छोटी बहनों, सुमन और शीला को स्कूल ले जाती है।



उसके बाद दीपाली अपनी माँ के साथ काम में हाथ बँटाती है। दोपहर को वह अपने भाई-बहनों को घर लाती है। शाम को वह सभी बच्चों के साथ गली में खेलती है। शाम ढलने पर उसकी माँ घर आती है। दीपाली खाना पकाने में माँ की मदद करती है। उसके पिताजी देर रात को ही घर लौटते हैं।

दीपाली रात को बिस्तर पर लेटकर अपनी बहनों की स्कूल की किताबें पढ़ती है। वह भी तो तीसरी कक्षा तक पढ़ी है। तीन साल पहले जब उसका छोटा भाई पैदा हुआ, तब से दीपाली को घर पर रहना पड़ा उसका ध्यान रखने के लिए। वह फिर आगे नहीं पढ़ पाई। दीपाली को लगता है कि किताबें पढ़ने से उसकी दिन भर की थकावट दूर हो जाती है। शायद आज भी उसे मौका मिले, तो वह स्कूल जाना चाहेगी।

❊ दीपाली अपने घर के क्या-क्या काम करती है?

________ ________ ________

________ ________ ________

❖ क्या तुम भी अपने घर के काम करते हो? यदि हाँ, तो कौन-कौन से?

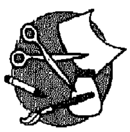
__________ __________ __________

__________ __________ __________

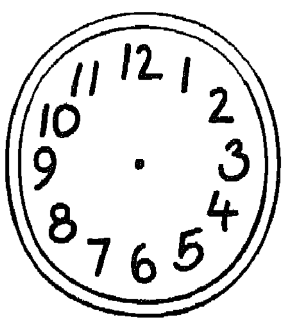
❖ क्या तुम घर के काम के अलावा कोई और काम भी करते हो? क्या?

____

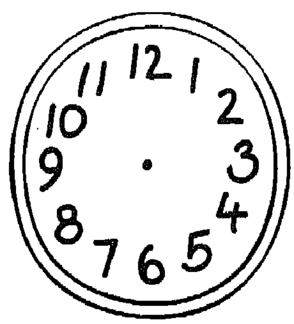
____



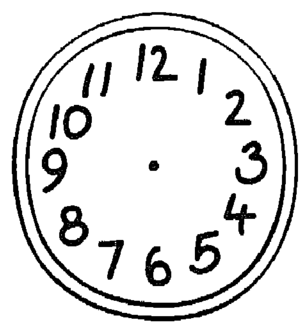
नीचे कुछ काम लिखे हैं। तुम ये काम जिस समय करते हो, घड़ी में दिखाओ।



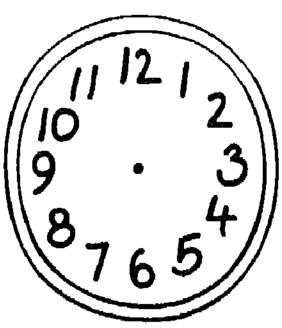
सुबह उठते हो



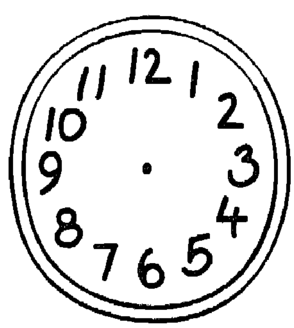
स्कूल जाते हो



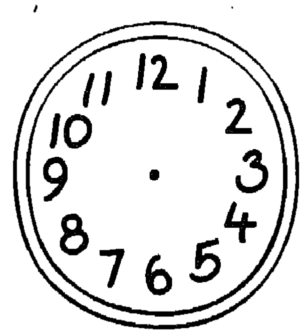
स्कूल से आते हो



घर में पढ़ाई करने बैठते हो



खेलने जाते हो



रात को सोते हो

❋ तुम्हारे परिवार के कौन-कौन से लोग घर के काम करते हैं? वे क्या-क्या काम करते हैं? तालिका में भरो।

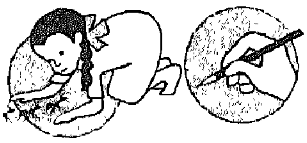
परिवार के लोग	क्या-क्या काम करते हैं
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________

❋ तुम्हारे परिवार के कौन-कौन से लोग पैसा कमाने के लिए काम करते हैं?

परिवार के लोग	क्या-क्या काम करते हैं
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________
______________________	______________________

तुम्हारे परिवार में कौन-कौन से लोग ऐसे हैं जो काम करते हैं पर उन्हें पैसा नहीं मिलता?

बातचीत के दौरान यह संदेश मिलना आवश्यक है कि सभी काम महत्त्वपूर्ण हैं – कोई भी काम बड़ा या छोटा नहीं होता। यदि बच्चों द्वारा बताए गए कामों में लिंग विषमता दिखाई दे तो उनके कारणों पर चर्चा करना अच्छा रहेगा।



पता लगाओ – तुम्हारे घर के बड़े लोग (दादा–दादी, नाना–नानी) जब बच्चे थे, तब वे क्या-क्या काम करते थे?

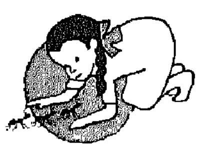
________________ ________________ ________________

________________ ________________ ________________

साराम्मा ने घर जाकर अपनी नानी से यही सवाल पूछा। नानी ने कहा कि वह बचपन में लकड़ी इकट्ठा करना, गोबर इकट्ठा कर उसके उपले बनाना, कभी गोबर से घर की लिपाई–पुताई करना – जैसे कामों में बड़ों का हाथ बँटाती थी। मगर अब तो घर में गोबर गैस का चूल्हा है। सीमेंट की दीवारें और फर्श हैं। सारम्मा अब अपने घर के कई ऐसे काम नहीं करती, जो उसकी नानी अपने बचपन में करती थीं।



तुमने पहले लिखा कि तुम क्या काम करते हो और तुम्हारे घर के बड़े लोग अपने बचपन में क्या काम करते थे। ये काम एक जैसे हैं या अलग–अलग?



दीपाली को घर पर काम करने के लिए स्कूल छोड़ना पड़ा। पता करो क्या तुम्हारे घर के आस–पास पाँच साल से बड़ी उम्र के बच्चे रहते हैं, जो स्कूल नहीं जाते।



ऐसे दो बच्चों से बात करके लिखो, वे स्कूल क्यों नहीं जाते।

पहले बच्चे का नाम ________________

स्कूल न जाने का कारण ________________

____

दूसरे बच्चे का नाम ________________

स्कूल न जाने का कारण ________________

____

मैं स्कूल से लौट रही थी। घर पर दो लोगों को अपनी बात सबसे पहले बताना चाहती थी। वे मेरी बातों से सबसे ज़्यादा खुश होते हैं।

पहली तो हैं मेरी नानी। वे उत्सुक रहती हैं मेरी बात सुनने को। मेरे स्कूल से लौटने का इंतजार करती हैं। उनकी उम्र कुछ ज़्यादा है और उनकी कमर में भी दर्द रहता है। नानी ऊँचा सुनती हैं और दिखता भी कम है। रोज़ सुबह पापा उनको अखबार ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुनाते हैं। नानी अपना बाकी सारा काम खुद करती हैं। उनकी कोई मदद करे, तो वे परेशान हो जाती हैं। दिखता है कम पर सब्ज़ी काटने का बहुत शौक है। कहती हैं – आजकल के बच्चों को सब्ज़ी भी काटनी नहीं आती। मोटा-मोटा और टेढ़ा-मेढ़ा काटकर रख देते हैं।



दूसरे हैं, मेरे रवि भैया। रवि भैया हमारे घर में ही रहते हैं। मैं उन्हें रवि भैया कहती हूँ और वे मेरे पापा-मम्मी को कहते हैं – भैया-भाभी। हमारा क्या रिश्ता है, मैं नहीं जानती पर वे हैं मेरे प्यारे भैया। वे मेरे सवालों का उत्तर देने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। कभी नहीं कहा – बाद में बताऊँगा।

रवि भैया कॉलेज में पढ़ाते हैं। कॉलेज के बच्चे उनकी बहुत इज़्ज़त करते हैं। कुछ तो उनसे पढ़ने घर भी आते हैं। रवि भैया को संगीत सुनने, नाटकों में भाग लेने, दोस्तों के साथ घूमने और बातें करने का बहुत शौक है। खूब हँसते-हँसाते भी हैं।

भैया जब घर के बाहर जाते हैं, तब एक सफ़ेद छड़ी ले जाते हैं। उनको घर

के अंदर घूमता देख कोई नहीं कह सकता कि उन्हें दिखता नहीं है। वे अपना काम स्वयं करना चाहते हैं। कोई उन्हें ज़बरदस्ती सहारा दे तो वे नाराज़ हो जाते हैं। जब कभी उन्हें मदद की ज़रूरत होती है तो वे माँग लेते हैं।

कुछ बच्चे रवि भैया से कॉलेज की किताबें ले जाते हैं और कुछ दिन बाद किताबों के साथ उन्हें टेप दे जाते हैं। रवि भैया टेप पर ही उन किताबों को सुनते रहते हैं। भैया के पास मोटे कागज़ की भी कई किताबें हैं, जिनमें बहुत सारे उभरे बिंदु हैं। उन पर वे हाथ फेरकर पढ़ते हैं।

भैया को छेड़ने के लिए मैं कभी-कभी उनकी छड़ी की जगह बदल देती हूँ। वे परेशान तो होते हैं, पर नाराज़ नहीं। मैं उनकी प्यारी बहन सीमा जो ठहरी!

मैं अभी दरवाज़े पर पहुँची ही थी कि भैया बोल उठे – क्यों सीमा, बहुत खुश हो?

भैया मुझे ही नहीं, घर के सभी लोगों को उनकी आहट से पहचान लेते हैं। अक्सर यह भी भाँप लेते हैं कि मैं खुश हूँ या उदास।

भैया! आखिर मैं फुटबॉल टीम में शामिल हो ही गई हूँ – मैंने भैया को अपनी खबर सुनाई। भैया मेरी पीठ थपथपाकर बोले – आज से तुम ही हो मेरी फुटबॉल की उस्ताद!

- सीमा के पापा उसकी नानी को अखबार ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुनाते हैं। तुम बड़ी उम्र वाले लोगों की कैसे मदद करते हो?

- जब कोई व्यक्ति बूढ़ा हो जाता है, तब उनको क्या-क्या तकलीफ़ें हो सकती हैं?

- रवि भैया बिना देखे कई सारी बातें कैसे जान जाते हैं?

कहानियों में बच्चे रुचि लेते हैं तथा कहानी के पात्रों की मदद से संवेदनशीलता पैदा की जा सकती है।

❋ क्या तुम्हें कभी छड़ी की ज़रूरत पड़ी है? कब?

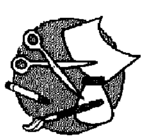
❋ क्या तुम सोच सकते हो तुम्हें छड़ी की ज़रूरत कब पड़ सकती है?

❋ हम उन लोगों की मदद कैसे कर सकते हैं, जिन्हें दिखता नहीं है?



क्या तुम्हारे परिवार में कोई ऐसा सदस्य है, जो देख, बोल या सुन नहीं सकता? क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो? इनके काम में लोग कैसे मदद करते हैं?

तुमने कहानी में पढ़ा कि रवि भैया देख नहीं सकते। लेकिन वे अपने सारे काम खुद ही करते हैं। वे अलग तरह की किताबें पढ़ते हैं। वे कैसे अपना काम करते होंगे – यह समझने के लिए पहले आँखें बंद करके पहचानने का खेल खेलो।

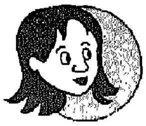


आँख मिचौनी

समूह में एक बच्चा अपनी आँखों पर पट्टी बाँधे। फिर बाकी बच्चे एक-एक करके चुपचाप उस बच्चे के पास आएँ। आँखें बंद किया बच्चा दूसरे पर हाथ फेरकर उसे पहचानने की कोशिश करे। ध्यान रहे कोई आवाज़ न करे। क्यों?

इसी तरह बारी-बारी सभी बच्चों की आँखों पर पट्टी बाँधो ताकि वे दूसरे बच्चों को पहचानने की कोशिश करें।

स्वयं को किसी और की परिस्थिति में रखने से हम उनकी समस्याओं को बेहतर समझ पाते हैं।



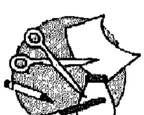
अब आपस में बात करो और बताओ –

- कितने बच्चे छूकर किसी को पहचान पाए?
- कितने बच्चे आवाज़ सुनकर बच्चों को पहचान पाए?
- दोनों में से क्या ज़्यादा आसान था?



- छू कर बताओ तुम्हारे मुँह में कितने दाँत हैं। कक्षा में किन बच्चों के सबसे ज़्यादा दाँत हैं?
- क्या-क्या चीज़ें तुम केवल छूकर जान सकते हो?
- आँख बंद करके बैठो और सुनो। किस-किस की आवाज़ें सुनाई देती हैं? किन लोगों की आहट पहचान सकते हो?
- केवल सूँघ कर क्या तुम किसी व्यक्ति को या किसी जानवर को पहचान सकते हो?

जो लोग देख नहीं सकते उनके पढ़ने का एक खास तरीका है, जिसे ब्रेल कहते हैं। ब्रेल एक मोटे कागज़ पर एक नुकीले औज़ार से बिंदु बना कर लिखा जाता है। ब्रेल कागज़ पर हाथ फेर कर पढ़ा जाता है कि उस पर क्या लिखा है।



आओ, अब यह देखते हैं कि बिना देखे किसी आकार को पहचानना मुश्किल है या आसान।

एक रेगमाल की शीट लो। उस पर मोटे ऊन या सुतली को दबाकर किसी चीज़ का आकार बनाओ। अपने दोस्त को कहो कि वह आँखें बंद करके, हाथ फेरकर बताए कि तुमने क्या आकार बनाया है।

क्या यह बच्चों के लिए पहचानना आसान था या मुश्किल?

चलो, अब तुम देखो कि क्या तुम हाथ फेर कर पढ़ सकते हो।

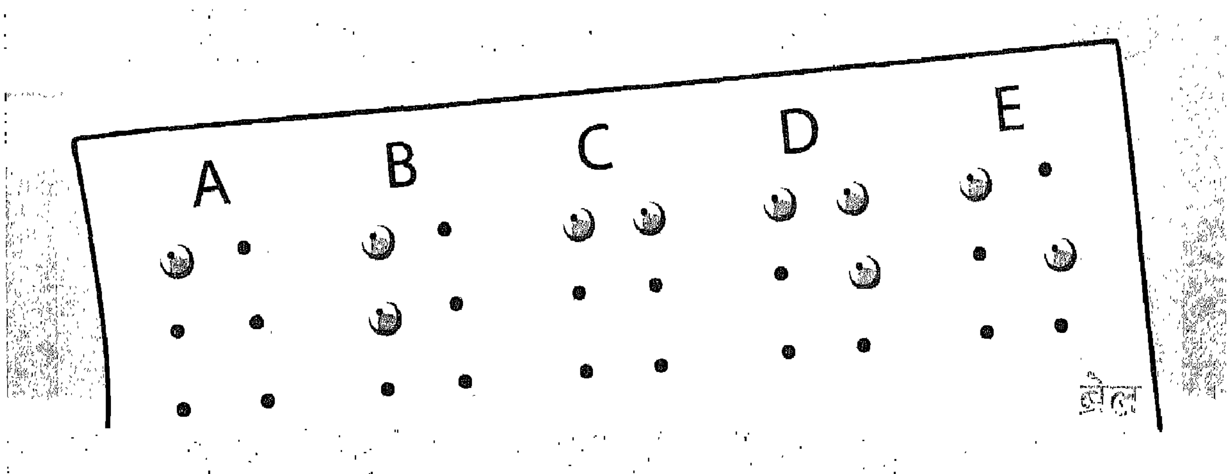
एक मोटे कागज़ का टुकड़ा लो। उस पर एक प्रकार या कील की नोक से कोई खास आकार बनाते हुए थोड़ी-थोड़ी दूरी पर छेद कर दो। तुम देखोगे कि कागज़ एक तरफ़ से उभरा है। अब अपने दोस्त से कहो कि वह आँखें बंद करके तुम्हारे कागज़

पर हाथ फेरे और बताए कि तुमने क्या बनाया है। है न मुश्किल यह बताना? सोचो कि लोग देखे बगैर कैसे इतना पढ़ लेते हैं।

आओ ब्रेल के बारे में जाने

तुमने देखा कि रवि भैया एक खास तरह की किताबें ही पढ़ सकते हैं। यह किताबें कैसे बनीं? इसके बारे में सबसे पहले किसने सोचा होगा?

आओ इसके बारे में कुछ बातें जानें।



लुई ब्रेल फ्राँस देश का रहने वाला था। वह जब तीन साल का था, एक दिन अपने पिता के औजारों से खेल रहा था। अचानक एक नुकीले औजार से उसकी आँख में चोट लग गई और आँखें खराब हो गई। उसे आँखों से दिखना बिल्कुल बंद हो गया। उसकी पढ़ने में बहुत रुचि थी। उसने हार नहीं मानी। वह पढ़ने के लिए तरह-तरह की तरकीबें सोचता रहता था। उसने आखिर ढूँढ़ ही लिया एक तरीका – छूकर पढ़ने का। यह बाद में ब्रेल लिपि के नाम से जानी जाने लगी।

इस तरह की लिपि में मोटे कागज़ पर उभरे हुए बिंदु बने होते हैं। उभरे होने के कारण इन्हें छूकर पढ़ा जा सकता है। यह लिपि छः बिंदुओं पर आधारित होती है।

आजकल ब्रेल में नए-नए परिवर्तन हुए हैं, जिससे इसे पढ़ना-लिखना और भी आसान हो गया है। ब्रेल लिपि अब कंप्यूटर के द्वारा भी लिखी जा सकती है।

बच्चे ब्रेल लिपि को देखेगें तो बेहतर ढंग से समझ पाएँगें। ब्रेल लिपि की जानकारी देते समय बच्चों को वास्तविक ब्रेल शीट दिखाना अच्छा रहेगा।

वेणु का परिवार

रानी का परिवार



दोनों परिवारों में कौन किस तरह के काम कर रहा है?

- क्या तुम्हारा परिवार इन दोनों में से किसी एक परिवार जैसा है? यदि हाँ तो किसके जैसा? तुम्हारा परिवार उस परिवार से कैसे मिलता है?

रूढ़िबद्ध धारणाओं जैसे लड़का-लड़की में भेदभाव (लिंग विषमता) पर चर्चा संवेदनशीलता से होनी चाहिए ताकि बच्चे उन पर सवाल तो कर सकें और किसी की भावनाओं को ठेस भी न पहुँचे।

❊ यदि नहीं तो अपने परिवार के बारे में बताओ।

❊ क्या तुम्हारे घर में सब एक साथ खाना खाते हैं? यदि नहीं तो क्यों?

____

____

❊ सबसे आखिर में खाना कौन खाता है?

____

❊ खाना बनाने में कौन मदद नहीं करता और क्यों?

____

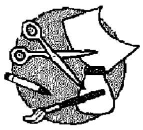
____

❊ तुम्हारे घर में और तुम्हारे एक दोस्त के घर में तालिका में दिए गए काम कौन करता है – पता लगाओ और लिखो। कुछ और काम तालिका में जोड़ो।

काम	कौन करता है	
	तुम्हारे घर में	तुम्हारे दोस्त के घर में
1. खाना बनाना		
2. बाज़ार से सामान खरीदना		
3. झाड़ू लगाना		
4. बर्तन साफ़ करना		
5. पानी भरना		
6.		
7.		
8.		

❊ घर में ज़्यादा काम कौन करता है?

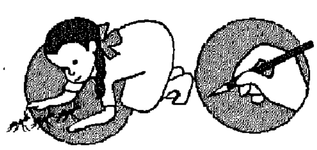
तुम्हारे	______
दोस्त के	______



जो खाया कहाँ से आया?

नीचे कुछ खाने–पीने की चीज़ों के नाम लिखे हैं। जो चीज़ें हम पेड़–पौधों से लेते हैं उन पर हरे रंग से ◯ लगाओ। जो चीज़ें हमें जानवरों से मिलती हैं उन पर लाल रंग से ◯ लगाओ। खाली जगह में कुछ नाम तुम भी जोड़ो।

शहद	हल्दी	मछली	______
मक्का	दूध	नींबू	______
पालक	आलू	अजवाइन	______
अंडा	माँस	केला	______
टमाटर	प्याज	______	______



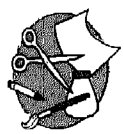
जब तुम बीमार होते हो तो क्या पेड़–पौधों से मिलने वाली चीज़ों को दवाई के रूप में लेते हो? कब कौन–सी चीज़ लेते हो –

- चोट लगने पर ______
- पेट दर्द होने पर ______

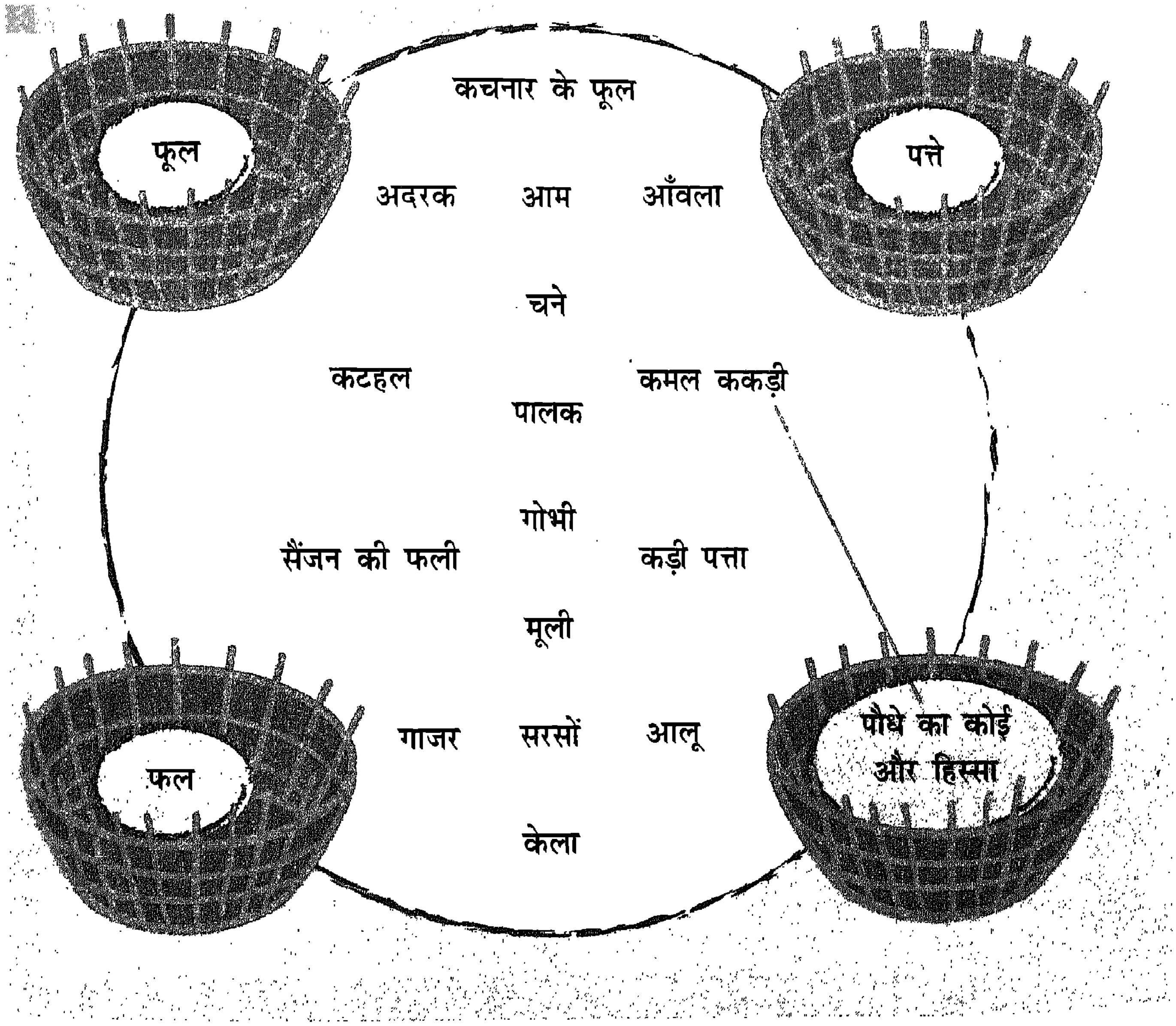
बच्चों के परिवेश में दवाई के रूप में प्रयोग किए जाने वाले पेड़-पौधों की पहचान व उनका उपयोग पारंपरिक ज्ञान की परख और समझ का मौका देगा।

♦ खाँसी के लिए ______________________

♦ दाँत दर्द होने पर ______________________



हर चीज़ के लिए सही टोकरी चुनो। लाइन बनाकर मिलान करो।



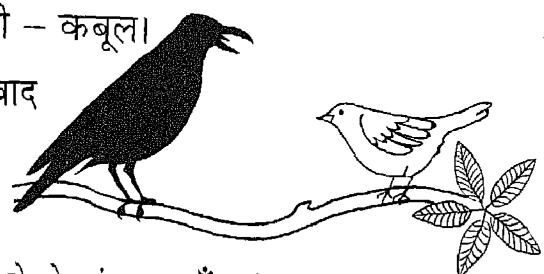
इस अभ्यास में कुछ पौधों के ऐसे भाग दिए गए हैं, जो कि हमारे भोजन का हिस्सा हैं, बातचीत के द्वारा इस सूची को बढ़ाया जा सकता है।

15 आओ बनाएँ बर्तन

एक थी चिड़िया, नाम था फुदगुदी। एक था कौआ, नाम था भनाते। दोनों में गहरी दोस्ती थी। एक दिन भनाते ने कहा – अरे ओ फुदगुदी! अगर पहले तूने अंडे दिए तो मैं खाऊँगा और अगर मैंने पहले अंडे दिए तो तू खा लेना। कबूल?

फुदगुदी बोली – कबूल।

कुछ दिन बाद फुदगुदी ने अंडा दिया।



भनाते बोला – दे-दे अंडा, खाऊँ अंडा, दे-दे, दे-दे, दे-दे।

फुदगुदी गई डर। बोली – ठीक, भाई ठीक। पर पहले चोंच धो आओ नदी में।

भनाते गया नदी तट पर। बोला – हे नदी!

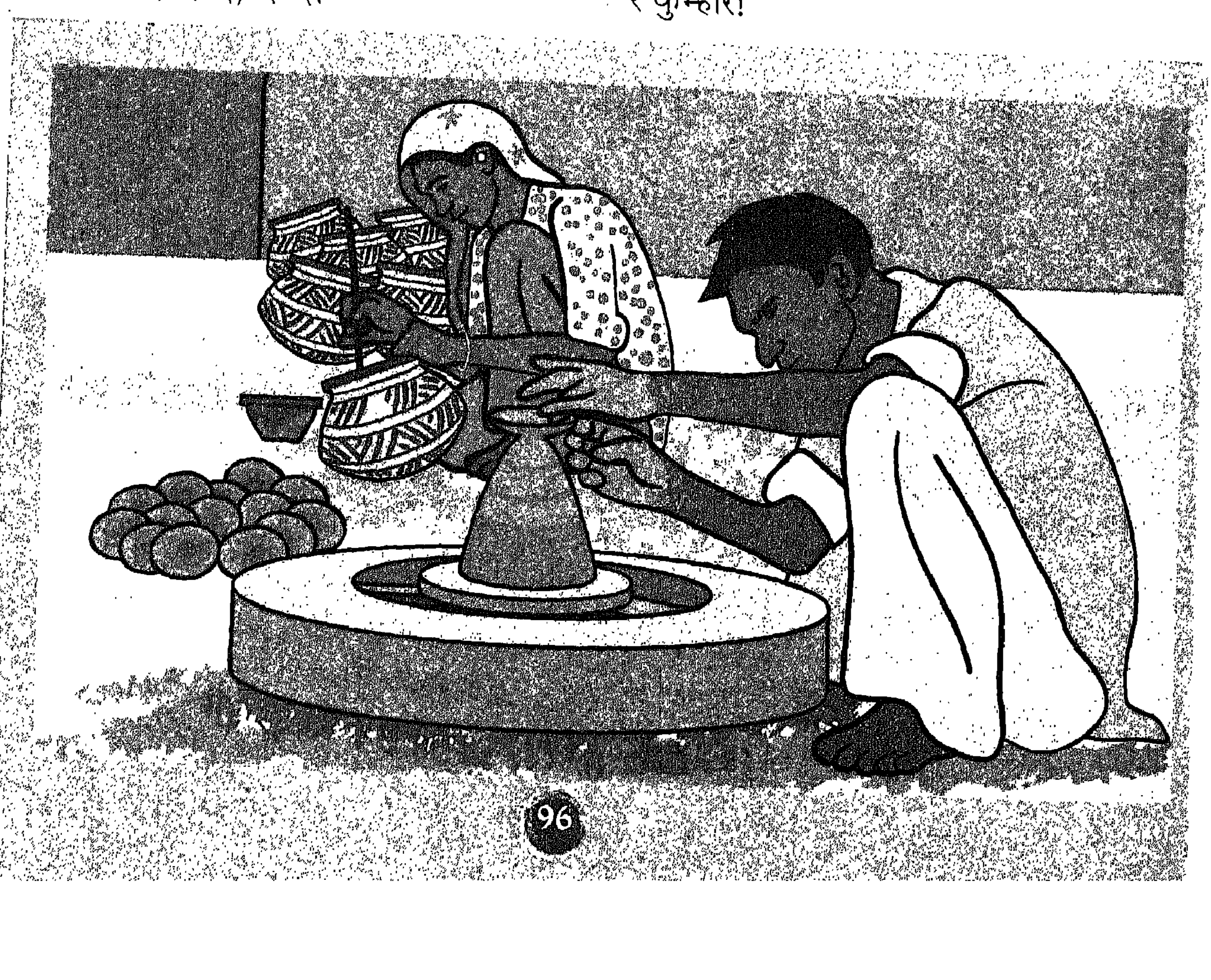
नदी बोली – क्या भाई भनाते?

भनाते बोला – नदी-नदी पानी दे-दे।

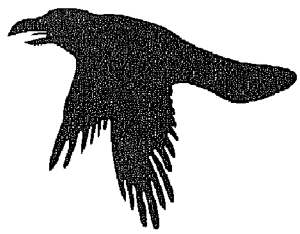
ठंडा पानी लाऊँगा,
चोंच धोकर आऊँगा,
फिर मैं अंडा खाऊँगा।

नदी बोली – पानी भरेगा कैसे? कुल्हड़ तो ला।

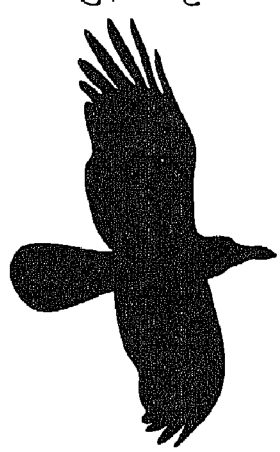
भनाते गया कुम्हार के पास। बोला – रे कुम्हार!



कुम्हार बोला – क्या भाई भनाते?
भनाते बोला – मुझे एक कुल्हड़ दे-दे।
कुल्हड़ लेकर जाऊँगा,
ठंडा पानी लाऊँगा,
चोंच धोकर आऊँगा,
फिर मैं अंडा खाऊँगा।



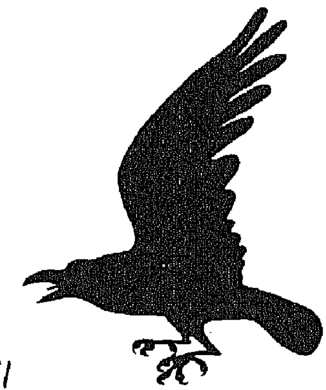
कुम्हार बोला – कुल्हड़ बने कैसे? पहले ला मिट्टी खदान से।
भनाते गया मिट्टी की खदान पर।
बोला – रे मिट्टी-खदान।
मिट्टी-खदान बोला – क्या भाई भनाते?
भनाते बोला – मिट्टी-खदान मुझे मिट्टी दे-दे।
मिट्टी लेकर जाऊँगा,
कुल्हड़ मैं बनवाऊँगा,
ठंडा पानी लाऊँगा,
चोंच धोकर आऊँगा,
फिर मैं अंडा खाऊँगा।



मिट्टी-खदान बोला – खोदें मिट्टी कैसे? पहले ला खुरपी लोहार से।
भनाते गया लोहार के पास।
बोला – रे लोहार!



लोहार बोला – क्या भाई भनाते?
भनाते बोला – लोहार मुझे एक खुरपी दे-दे।
खुरपी लेकर जाऊँगा,
मिट्टी मैं खुदवाऊँगा,
कुल्हड़ मैं बनवाऊँगा,
ठंडा पानी लाऊँगा,
चोंच धोकर आऊँगा,
फिर मैं अंडा खाऊँगा।



लोहार बोला – ले-ले खुरपी प्यार से, पर लाना वापिस याद से।

खुरपी लेकर भनाते गया खदान पर। चिकनी मिट्टी खोदी और कुम्हार को दे दी। कुम्हार ने कुल्हड़ बनाया। कौए ने उसमें पानी भरा और धो ली अपनी चोंच। फिर दौड़ लगाई फुदगुदी का अंडा खाने को।

इसी बीच फुदगुदी चिड़िया का अंडा फूट कर चूज़ा बाहर आ गया था और बच्चा फुर्र हो गया था भनाते कौए की पहुँच से बहुत दूर।



(अन्नपूर्णा सिन्हा द्वारा भोजपुरी में रचित कहानी का हिंदी रुपांतर)

इस कहानी पर नाटक करने में बच्चों को बहुत मजा आएगा और क्रियाओं का क्रम समझने में भी सहायता मिलेगी।

❋ कौए को कुल्हड़ की ज़रूरत क्यों पड़ी?

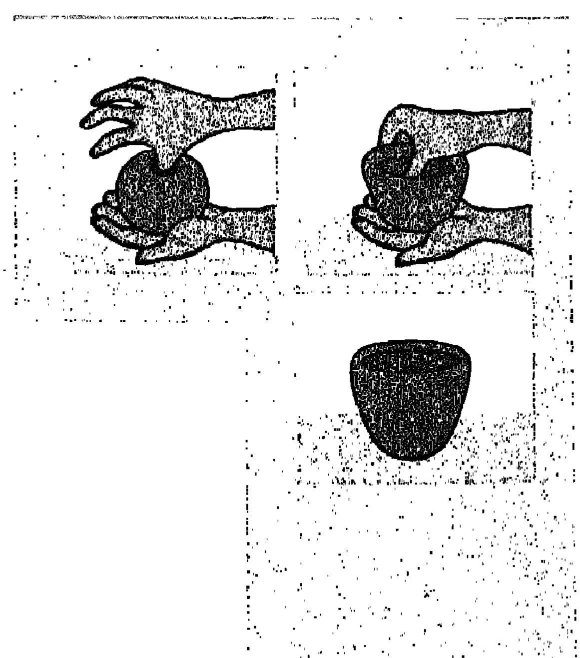
❋ एक कुल्हड़ बनाने में किन-किन लोगों ने कौए की मदद की?

❋ कुल्हड़ बनाने के लिए कुम्हार को किस-किस सामान की ज़रूरत पड़ी?

❋ क्या तुम्हारे घर में मिट्टी के बर्तन हैं? कौन-कौन से?

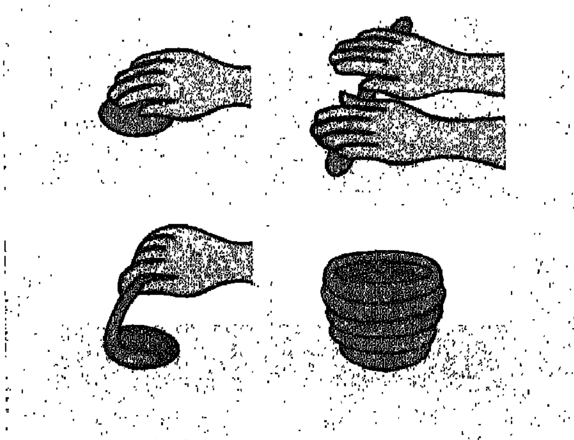
अगर तुम्हें कोई चिकनी मिट्टी दे, तो क्या तुम कोई बर्तन बना पाओगे?

❋ *मिट्टी का लड्डू, लड्डू से कटोरी*



चिकनी मिट्टी को गूँध कर एक बड़ा-सा लड्डू बनाओ। इस लड्डू में गड्ढा बनाकर उसे कटोरी जैसा रूप दो। अपनी कटोरी को सुखाओ और सजाओ। इसमें अपने मन की चीज़ें रखो।

❋ मिट्टी का साँप, साँप का बर्तन



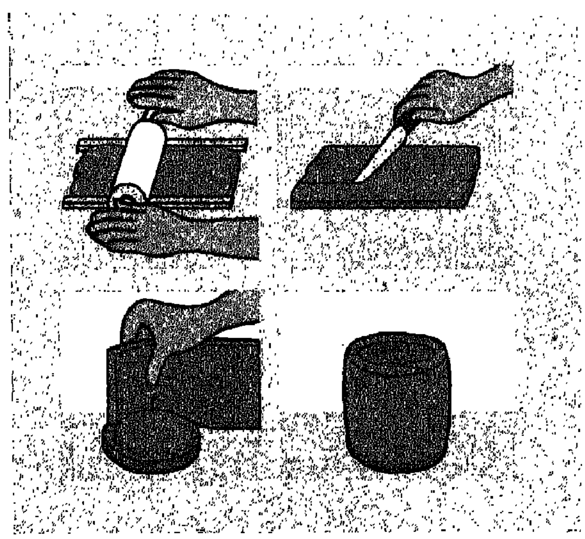
चिकनी मिट्टी को पानी से गूँध लो। थोड़ी मिट्टी को पानी में घोल कर अलग रख लो। यह मिट्टी के दो टुकड़ों को आपस में जोड़ने के काम आएगी।

गुँधी हुई मिट्टी का कुछ भाग लेकर उसे मोटी रोटी की तरह चपटा कर लो। यह बर्तन का तला बन गया। बाकी गुँधी हुई मिट्टी को साँप जैसा लंबा बना लो।

चित्र में देखो और उसी मिट्टी की तरह बने साँप को तले पर चिपकाकर बर्तन बनाओ।

❋ मिट्टी की रोटी, रोटी का बर्तन

चित्र को देखकर इस तरह से बर्तन बनाओ।





❋ अगर इन बर्तनों में पानी डालकर रातभर रखो, तो क्या होगा?

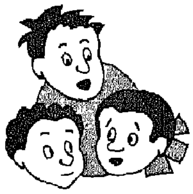
❋ हम अपने घर या स्कूल में मटके में पानी रखते हैं। वह मटका पानी से गल क्यों नहीं जाता?

❋ क्या तुमने कभी ईंट या बर्तनों को भट्टी में पकाते देखा है?

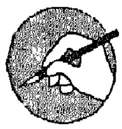


अगर हम सबके पास केवल मिट्टी के बर्तन होते और सारे टूट या गल जाते, तब हम क्या करते?

मिट्टी से बर्तन बनाते हुए कपड़े तो गंदे होंगे पर बच्चों को करके सीखने का आनंद भी मिलेगा।



- यदि हमारे पास मिट्टी के बर्तन हों और वे सभी टूट जाएँ अथवा खराब हो जाएँ तो हम क्या करेंगे।
- सोचो कि बहुत साल पहले जब बर्तन नहीं थे, तब लोग क्या करते थे?
- लोगों ने बर्तन क्यों बनाए होंगे?



मान लो, एक दिन दुनिया से सारे बर्तन गायब हो जाएँ, तो तुम्हारे घर में क्या होगा?

____

____

____

____

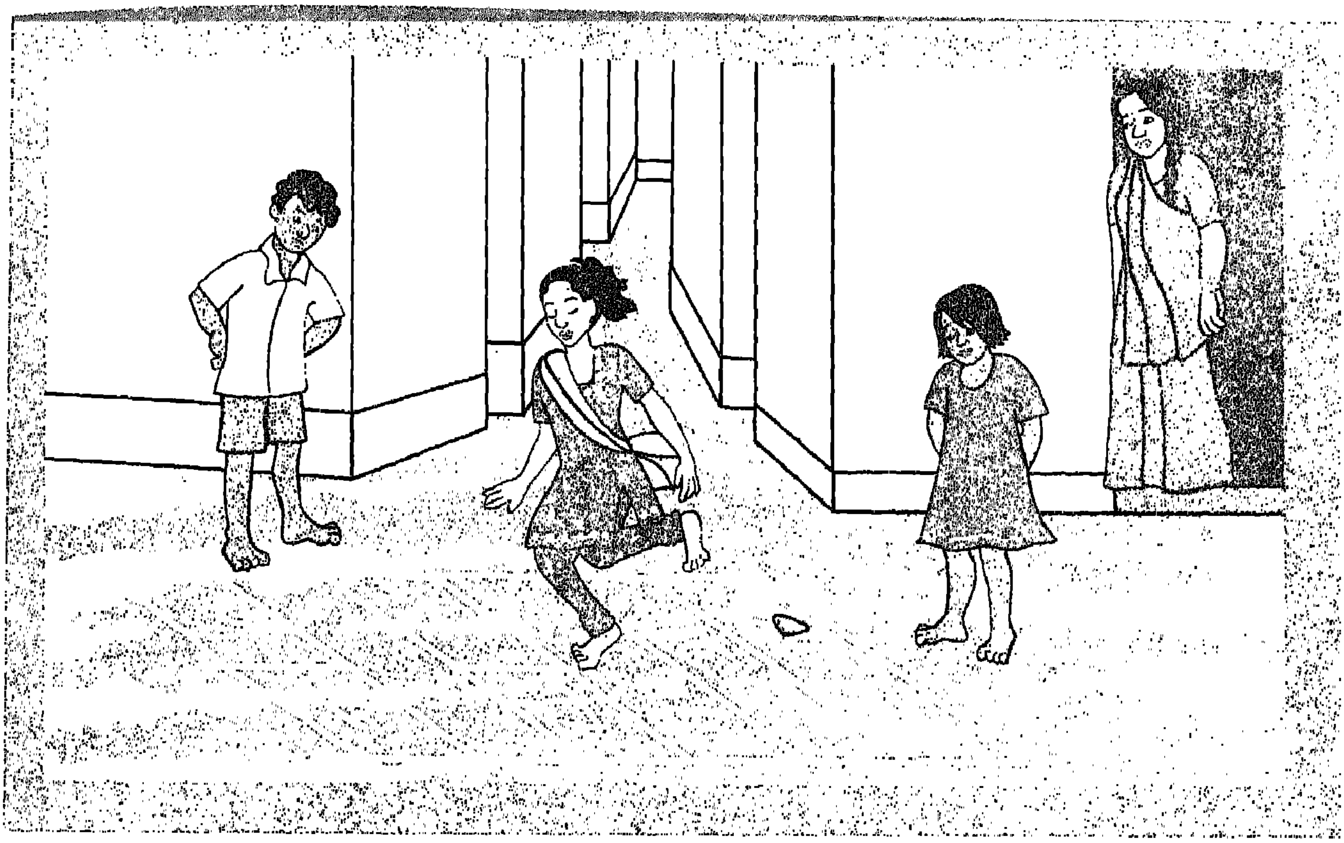
____

____

____

जानते हो?

बहुत, बहुत, बहुत साल पहले एक समय ऐसा था, जब लोगों के पास बर्तन ही नहीं थे। पर लोगों को खाने-पीने की चीज़ों को पकाने और सामान रखने के लिए बर्तन की ज़रूरत पड़ने लगी। बहुत कोशिश करने और दिमाग लगाने के बाद, लोग बर्तन बनाना सीख गए। शुरू में बनाए गए बर्तन पत्थर और मिट्टी के थे। पत्थर के बर्तन हाथों से खोदकर या कुरेद कर और मिट्टी के बर्तन गूँध कर, हाथों से बनाए गए थे। लोगों ने यह भी खोज लिया कि मिट्टी के बर्तनों को मज़बूत बनाने के लिए उन्हें आग में पकाना चाहिए।



गली में सभी बच्चे **स्टापू** खेल रहे थे। अवंतिका भी अपनी बहन नंदिता के साथ वहीं खेल रही थी। पर नंदिता को ठीक से खेलना नहीं आ रहा था।

अवंतिका : अरे नंदिता, सुनो! ठीक से समझ लो। **ठिप्पी** को पहले खाने में डालो। फिर ठिप्पी वाले खाने को छोड़ कर खानों में एक पैर से छलाँग लगाओ। लाइन पर पैर रखोगी तो खेल से बाहर। आखिरी खाने में उछलकर वापिस घूमो। वापसी में ठिप्पी जरूर उठाकर लाना। याद रहे, 4-5 और 7-8 खाने में ही दोनों पाँव रख सकते हैं। अब, दूसरे खाने में ठिप्पी डालो। इसी तरह सभी खानों में बारी-बारी ठिप्पी डालकर खेलो।

पाठ में कुछ स्थानीय खेल जैसे स्टापू, पिट्ठू, अष्टा-चंगा-पे आदि तथा उन्हें खेलने में इस्तेमाल की गई चीज़ें जैसे ठिप्पी के नाम आए हैं। बच्चों से इनके स्थानीय नाम पर बातचीत करवाई जा सकती है।

बच्चे फिर से खेल में लग गए। चाची बहुत देर से उन्हें खेलता देख रही थीं। उनका भी खेलने का मन कर रहा था। जब उनसे रुका नहीं गया तो वे बोल पड़ीं – बच्चों, मैं भी तुम्हारे साथ स्टापू खेलूँ?

यह सुनकर सब बच्चे हँसने लगे।

अवंतिका : चाची, आप खेलेंगीं!

चाची : तुम सोचती हो, मुझे स्टापू खेलना नहीं आता? अरे, तुम्हारी उम्र में तो हम कितने ही खेल खेलते थे।

नंदिता : कौन-कौन से खेल, चाची?

चाची : एक टाँग से दौड़ना, छुपनछुपाई, ऊँच-माँगी-नीच, गिट्टे और न जाने क्या-क्या। और कबड्डी में तो हमारी टीम दस गाँव में सबसे आगे थी।

रजत : चाची, हमें तो खेलने के लिए समय ही नहीं मिलता। आपको खेलने का इतना समय कहाँ से मिलता था?

चाची : तुम्हें टी.वी. देखने से फुरसत मिले, तब न।

नंदिता : चाची, क्या चाचा भी ये सब खेल खेलते थे?

चाची : पूछो मत। तुम्हारे चाचा बताते हैं कि वे सारा दिन गिल्ली-डंडा, कंचे, अष्टा-चंगा-पे, पिट्ठू और न जाने क्या-क्या खेलते रहते थे। पतंग के चक्कर में खाना तक भूल जाते थे।

नंदिता : आओ! खेलो न।

चाची बच्चों के साथ खेलने लगी। अभी कुछ ही देर खेल पाए थे कि बारिश आ गई।

सब बच्चे : उफ हो!

चाची : चलो, हमारे घर चलो, अंदर चलकर खेलते हैं।



यह सुनकर सब बच्चे खुश हो गए।

सब बच्चे : चलो, चलो, चाची के घर चलकर खेलते हैं।

सब बच्चे चाची के घर आ गए। अंदर, चाचा और बुआ शतरंज खेल रहे थे।

अवंतिका : चाची, क्या खेलें?

रजत : चाची, घर-घर खेलते हैं।

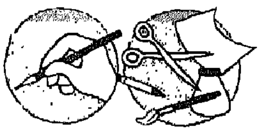
कुछ बच्चे : हाँ, हाँ, घर-घर का खेल खेलते हैं।

रजत : अगर गुड़िया होती तो हम गुड़िया से खेलते।

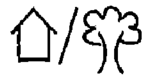
चाची : गुड़िया चाहिए? अभी बना लेते हैं गुड़िया।

चाची ने एक पुराना कपड़ा लिया और बच्चों ने चाची की मदद से गुड़िया बना ली।

कुछ बच्चे गिट्टे खेलना चाहते थे और कुछ अष्टा-चंगा-पे। सब अपने-अपने समूह बनाकर खेलने लगे।



पाठ में जिन-जिन खेलों के नाम आए हैं उनके नाम तालिका में लिखो। इनमें से जो खेल घर के अंदर खेले जाते हैं उनके सामने  बनाओ। घर के बाहर खेले जाने वाले खेल के सामने  बनाओ। खेल के सामने खिलाड़ियों की संख्या लिखना मत भूलना। खेल के खेलने में अगर कुछ चीज़ों की ज़रूरत होती है तो उनके नाम भी लिखो।

पाठ में आए खेलों के नाम		कितने खिलाड़ी	किन चीज़ों की ज़रूरत

तालिका के भरने में कुछ बच्चों को मदद की आवश्यकता हो सकती है। बच्चों को एक-दूसरे की मदद करने का मौका दें। एक-दूसरे से बच्चे सहजता से बहुत कुछ सीखते हैं।

❋ क्या तुम अपने इलाके के किसी मशहूर खिलाड़ी का नाम जानते हो? यदि हाँ तो उसका नाम और वह किस खेल से जुड़ा है, लिखो।

____

____

❋ तुम गेंद से खेले जाने वाले कितने खेल जानते हो? दी गई गेंद में उनकी सूची बनाओ।

____

____

____

____

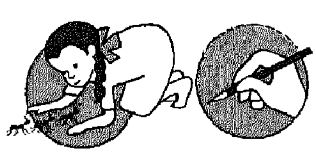
____

❋ क्या तुमने सानिया मिर्ज़ा का नाम सुना है? वे भी गेंद से ही एक खेल खेलती हैं। पता करो और लिखो कौन-सा।

____

❋ तुम्हें कौन-सा खेल सबसे ज़्यादा पसंद है?

____

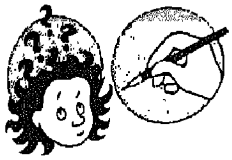


अपने घर या आस-पास के किसी बड़े व्यक्ति से पता करो – जब वे छोटे बच्चे थे तब वे क्या-क्या खेल खेलते थे?

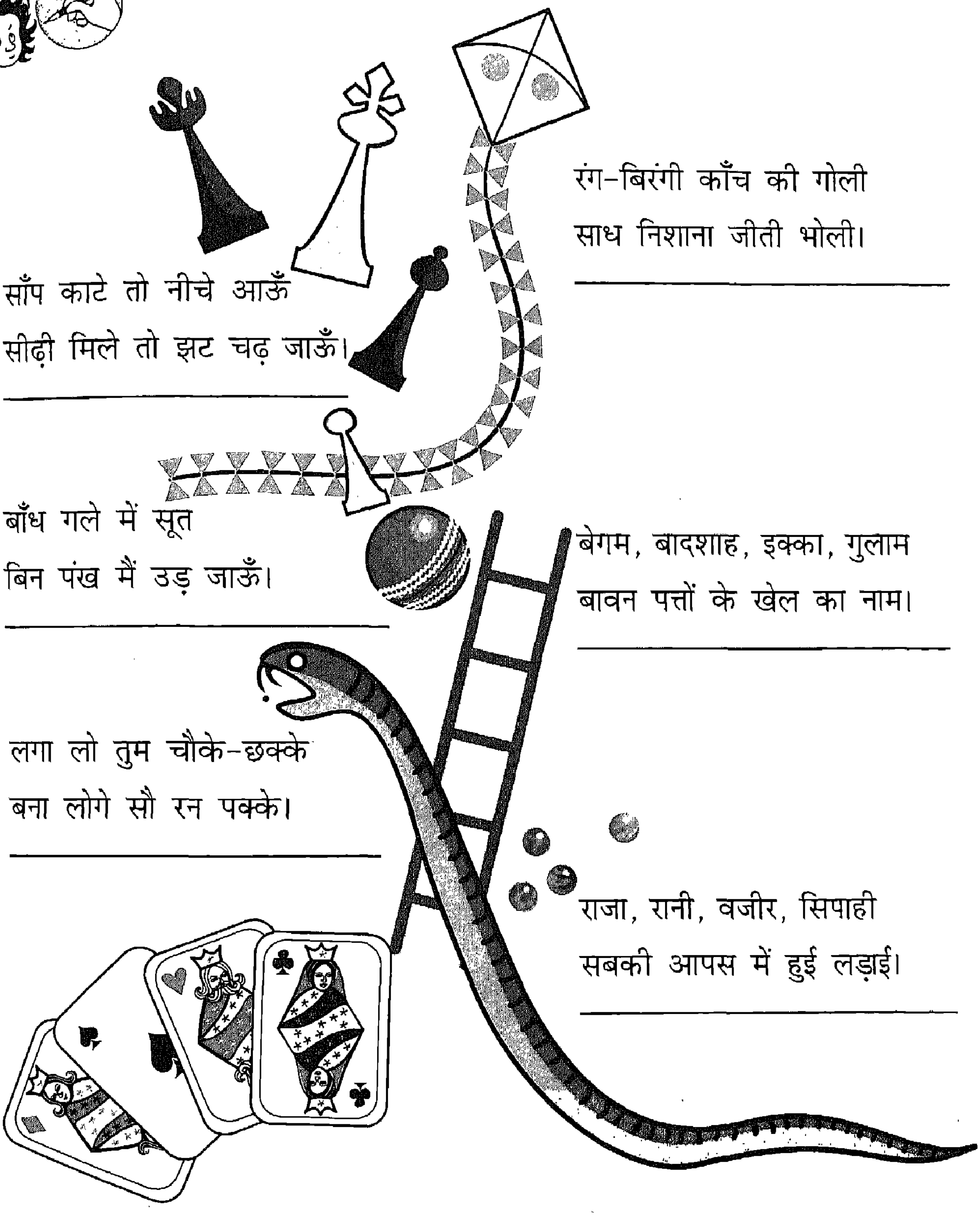
____________ ____________ ____________

____________ ____________ ____________

स्थानीय मशहूर खिलाड़ियों पर जानकारी एकत्रित करवाएँ जो बच्चों को खेलों के बारे में ज्ञान और खिलाड़ियों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देगा।



पहेली को चित्र से जोड़ो और खेल का नाम लिखो।



रंग-बिरंगी काँच की गोली
साध निशाना जीती भोली।

____

साँप काटे तो नीचे आऊँ
सीढ़ी मिले तो झट चढ़ जाऊँ।

____

बाँध गले में सूत
बिन पंख मैं उड़ जाऊँ।

____

बेगम, बादशाह, इक्का, गुलाम
बावन पत्तों के खेल का नाम।

____

लगा लो तुम चौके-छक्के
बना लोगे सौ रन पक्के।

____

राजा, रानी, वजीर, सिपाही
सबकी आपस में हुई लड़ाई।

____

बच्चों ने कई खेल खेले होंगे, कई देखे भी होंगे। कुछ के बारे में सुना होगा, पढ़ा होगा या फिल्मों, नाटकों में देखा होगा। इन सभी को चर्चा में शामिल किया जा सकता है।

खेलने के अलावा तुम क्या-क्या करते हो?

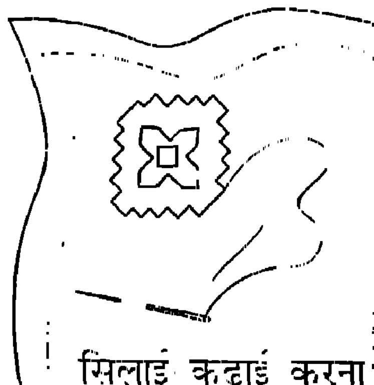
______________ ______________ ______________

______________ ______________ ______________

तुम्हारे परिवार के लोग दिए गए चित्रों में से जो कुछ करते हैं उनमें रंग भरो। खाली छोड़ी हुई जगह में कुछ और भी जो वे करते हैं, उसका चित्र बनाओ और लिखो।



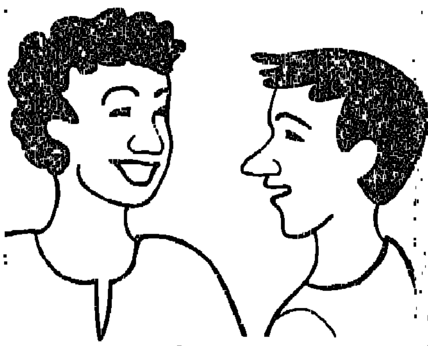
पढ़ना



सिलाई कढ़ाई करना



नाचना



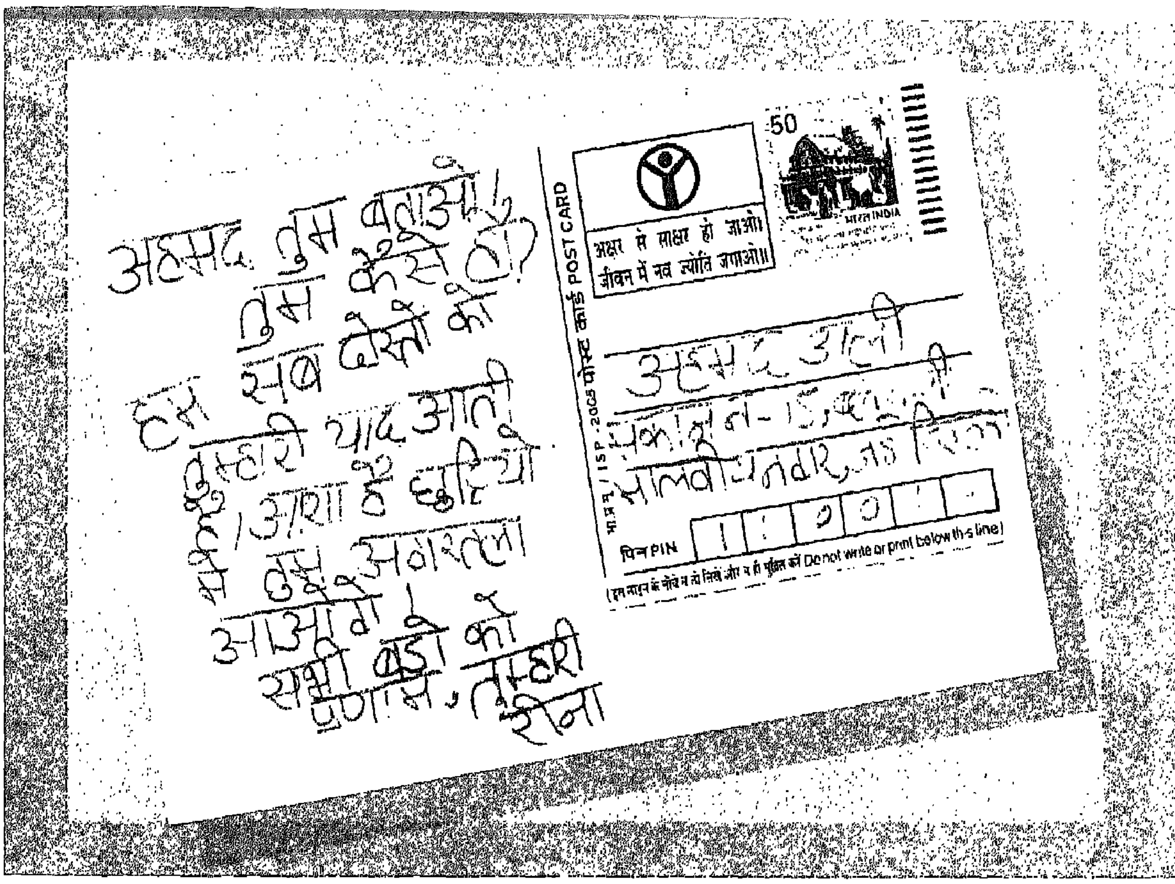
गप-शप करना



पेड़-पौधों की देखभाल



डाक-टिकट इकट्ठे करना



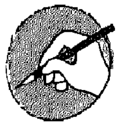
मैं हूँ एक चिट्ठी। कागज़ कलम से लिखी चिट्ठी, जो रीना ने अपने दोस्त अहमद को लिखी। मुझे पत्र-पेटी में डाला। डाकिए ने मुझे निकाला और निकालकर एक बड़े से थैले में डाला। मैं हो गई डाकिए की साइकिल पर सवार और पहुँची डाकघर। वहाँ मुझे थैले से निकाला और निकालकर एक ज़ोर का ठप्पा लगाया। ठप्पा था अगरतला का, जहाँ से मेरा सफर शुरू हुआ।

ठप्पे के बाद पहुँची मैं दूसरे बड़े थैले में। इसमें थीं अनेकों चिट्ठियाँ जो जा रही थीं दिल्ली। डाकघर की लाल गाड़ी से पहुँची मैं रेलवे स्टेशन। वहाँ मैं चढ़ी दिल्ली जानेवाली रेलगाड़ी में।

पाँच-छः दिन के लंबे सफ़र के बाद मैं दिल्ली पहुँची। वहाँ के डाकघर के पते के अनुसार फिर से हुई मेरी छँटाई और फिर लगा ठप्पा। इसके बाद डाकिए ने मुझे पहुँचा दिया अहमद के घर।

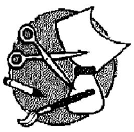
नीचे रीना की चिट्ठी का सफ़र चित्रों में दिया गया है। पर ये क्या! सारे आगे-पीछे हो गए हैं। क्रम के अनुसार चित्रों के नीचे नंबर डालो।





एक चिट्ठी रीना ने अहमद को लिखी। अब एक चिट्ठी तुम अपनी कक्षा में किसी दोस्त को लिखो। चिट्ठी के ऊपर दोस्त का नाम ज़रूर लिखना।

सबने चिट्ठी लिख दी, पर डालेंगे किस में?



चलो कक्षा के लिए एक पत्र-पेटी बनाएँ –

1. एक जूते का खाली डिब्बा लो।
2. डिब्बे पर लाल रंग करो या लाल कागज़ चिपका दो।
3. अब डिब्बे के ढक्कन को कैंची से इतना काटो कि चिट्ठी अंदर जा सके।

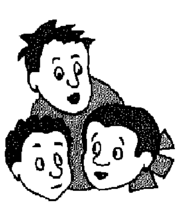
लो हो गई तैयार पत्र-पेटी।

तुम सब अपनी-अपनी चिट्ठी इसके अंदर डाल दो और इंतज़ार करो अपनी-अपनी चिट्ठियों का।

अब एक बच्चा डाकिया बने। वह पत्र-पेटी से चिट्ठियाँ निकाले और सब बच्चों को बाँटे।

अच्छा लगा दोस्त की चिट्ठी पढ़कर?

जैसे तुमने अपने दोस्त को चिट्ठी लिखी वैसे ही तुम्हारे घर पर भी रिश्तेदार और दोस्त चिट्ठियाँ भेजते होंगे। तुम घर से कुछ चिट्ठियाँ लाओ और देखो। देखा कितनी अलग-अलग प्रकार की चिट्ठियाँ होती हैं।



- तुम्हें इन चिट्ठियों में क्या अंतर दिखाई दिया?
- किन-किन चिट्ठियों पर टिकट लगे हैं?
- क्या सभी टिकट एक जैसे हैं? उनमें क्या-क्या अंतर हैं?
- क्या तुमने चिट्ठियों पर डाकघर का ठप्पा लगा देखा है?

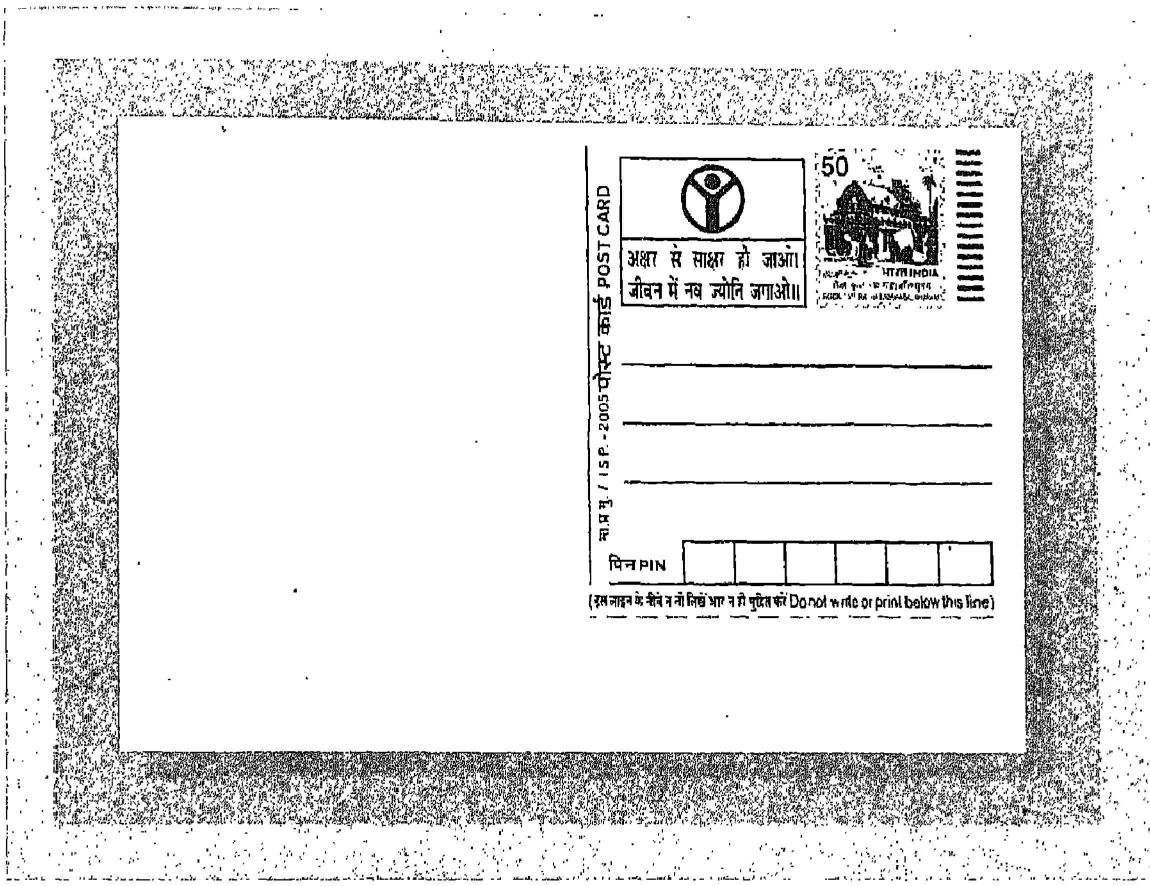
कक्षा में ही अपने मित्र को चिट्ठी लिखकर कुछ बताने में बच्चों को मज़ा आएगा तथा ये उनको पत्र-लेखन के लिए भी प्रोत्साहित करेगा। असली चिट्ठियाँ देखकर बच्चे बेहतर ढंग से समझ पाएँगें।

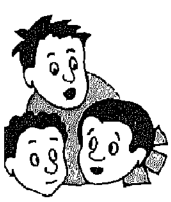
कुछ अलग-अलग तरह के टिकट इकट्ठे करके नीचे चिपकाओ।

तुम्हारी चिट्ठी तुम्हारे दोस्त के पास कैसे पहुँची? क्योंकि लिखा था उस पर उसका नाम, उसका पता।

पुराने ज़माने में चिट्ठियाँ कैसे पहुँचती थीं। बच्चों को बुजुर्गों से पता करने को कहें। पोस्टकार्ड पर पता लिखने में बच्चों को मदद की जरूरत पड़ सकती है।

दिए गए पोस्टकार्ड पर तुम अपना पता लिखो।





रीना की चिट्ठी तो रेलगाड़ी से दिल्ली पहुँच गई, पर जब रेलगाड़ियाँ नहीं थीं तो दूर जगहों पर चिट्ठियाँ कैसे पहुँचती थीं?

डाकघर की सैर

अगर स्कूल या घर के पास डाकघर हो तो वहाँ जाकर देखो कि चिट्ठियाँ कैसे आती-जाती हैं। वहाँ अन्य क्या-क्या काम होते हैं।

ये क्या! रज़िया और उसकी आपा चिट्ठी को लेकर क्या बातें कर रहे हैं?

पुराने जमाने के बारे में पता करने का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत बुजुर्ग हैं। यह समझने से बच्चे बुजुर्गों से बात करने के लिए प्रेरित होंगे।



रज़िया और आपा निकल पड़ी फ़ोन करने गाँव की एक दुकान पर। आपा ने फ़ोन का नंबर लगाया। दोनों ने नानी से बातें की। दुकानदार को पैसे दिए और खुशी-खुशी घर लौट आईं।

- तुमने फ़ोन कहाँ-कहाँ देखा है?

____

____

- तुम फ़ोन पर किस-किस से बात करते हो?

____________ ____________ ____________

- तुम्हें चिट्ठी लिखना या फ़ोन करना – दोनों में से क्या ज़्यादा अच्छा लगता है?

____

फ़ोन भी अलग-अलग तरह के होते हैं। तुमने जो फ़ोन देखे हैं उनका चित्र बनाओ।

अपना फ़ोन बनाओ

इसके लिए चाहिए दो माचिस की खाली डिब्बियाँ या आइसक्रीम के कप और धागा। दोनों माचिस की डिब्बियों में छेद करो। एक डिब्बी के छेद में से धागा निकालकर गाँठ बाँध दो। धागे का दूसरा सिरा दूसरी डिब्बी के छेद में से निकालकर गाँठ बाँधो। बन गया तुम्हारा अपना फ़ोन। अपने एक दोस्त को फ़ोन का एक सिरा कान में लगाने को कहो और दूसरा तुम अपने मुँह पर रखो। ध्यान रहे कि धागा खिंचा रहे कहीं छुए न। शुरू करो अपनी बातें।

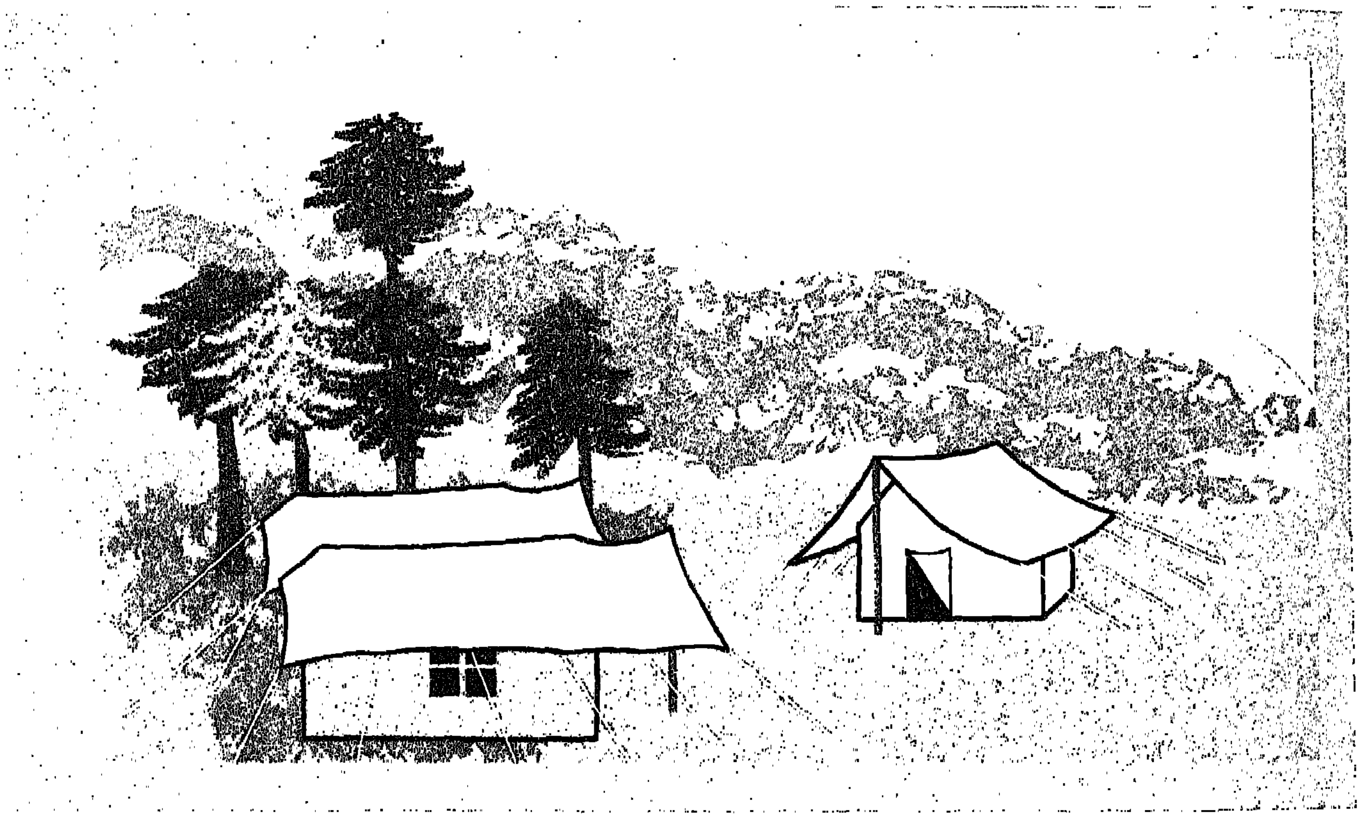
हमने चिट्ठी भी लिखी, फ़ोन भी किया। बताओ कि चिट्ठी और फ़ोन में कौन-सी बातें एक जैसी हैं और कौन-सी अलग?

स्थानीय परिवेश को देखते हुए बच्चों से संचार के अन्य माध्यम जैसे मोबाइल फोन, ई-मेल आदि पर भी बात की जा सकती है।

ऐसे भी होते हैं घर

18

मेरा नाम नसीम है। मैं श्रीनगर में रहता हूँ। कल से हमारे स्कूल में बहुत चहल-पहल है। यह पूरे सात दिनों तक रहेगी। जानते हो क्यों? हमारे स्कूल में कैंप जो लगा है। कैंप में कई जगहों से बच्चे आए हैं। मैदान में टैंट लगाकर सबके रहने का इंतज़ाम किया गया है।

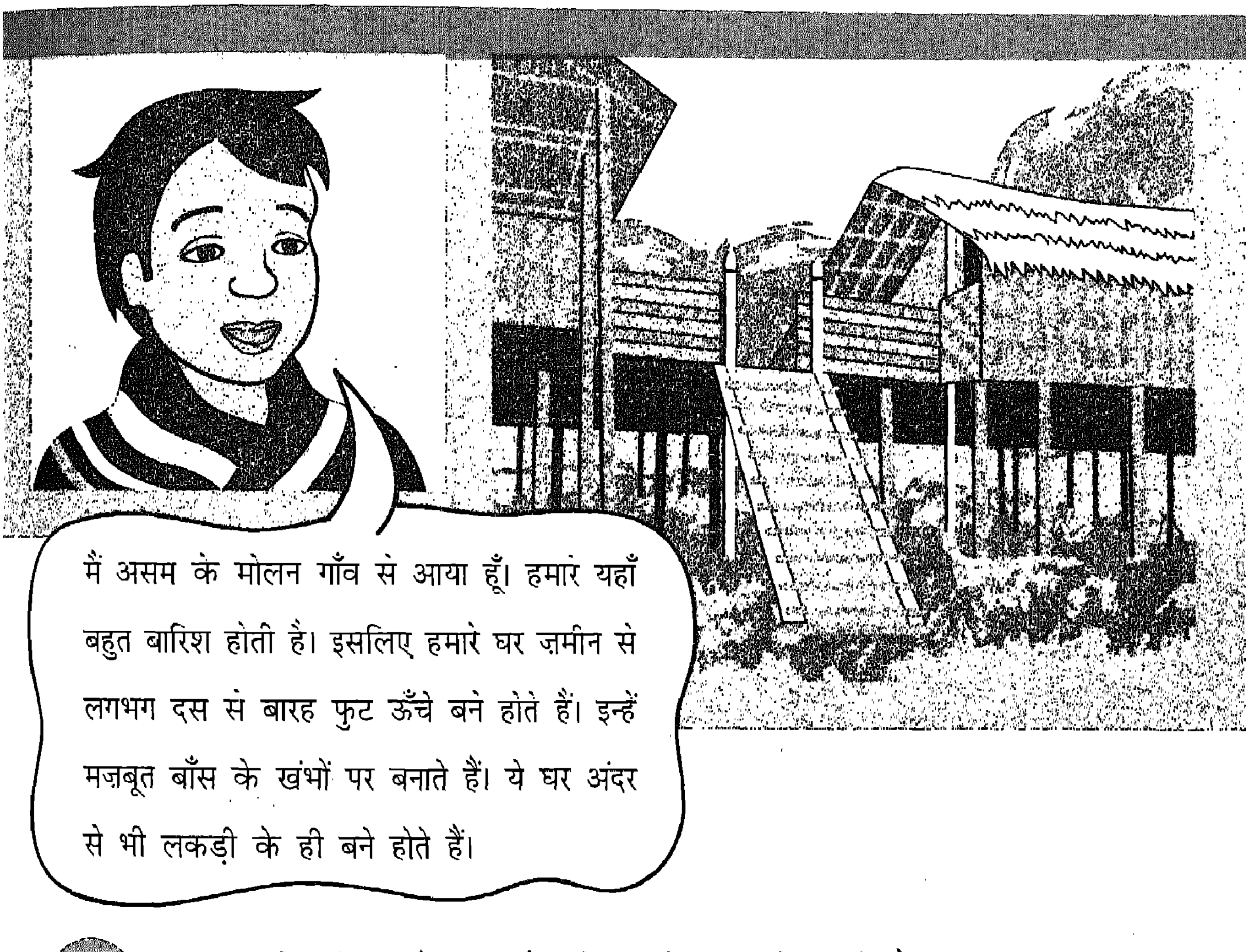


हमने स्कूल को खूब सजाया है। कुछ बच्चों ने कपड़ों की कतरनों से झालर बनाकर, उन्हें दरवाज़े पर लगाया है। कुछ ने बादाम के छिलकों से पोस्टर बनाए हैं। कहीं तो सूखे पत्तों तथा लकड़ी के बुरादे से रंगोली बनाई है।

मकानों की विविधता दिखाने के लिए कुछ जगह जैसे - असम, राजस्थान, दिल्ली, पहाड़ी इलाके का उपयोग हुआ है। इन जगहों का परिवेश समझने से बच्चे इन मकानों को समझ पाएँगे।

आज कैंप का पहला दिन है। हम सब बहुत खुश हैं। सुबह सब बच्चे इकट्ठे हुए। सब बच्चे ज़मीन पर एक गोला बना कर बैठ गए। सबने अपना-अपना परिचय दिया। सबने अपने बारे में बताया कि वे कहाँ रहते हैं, क्या खाना पसंद करते हैं। बच्चे अपने साथ अपने घर और परिवार की तस्वीरें भी लाए हैं। बारी-बारी से सब बच्चों ने अपने घरों के बारे में भी बताया। सबसे पहले भूपेन के समूह की बारी आई।

भूपेन ने अपना नाम बताया और कहा -



❊ भूपेन के यहाँ, घर बाँस के खंभों पर क्यों बनाते हैं?

____

____

❀ इन मकानों की छतें कैसी हैं? इन्हें ऐसा क्यों बनाया जाता है?

____

____

❀ इन मकानों में अंदर जाने का क्या तरीका है?

____

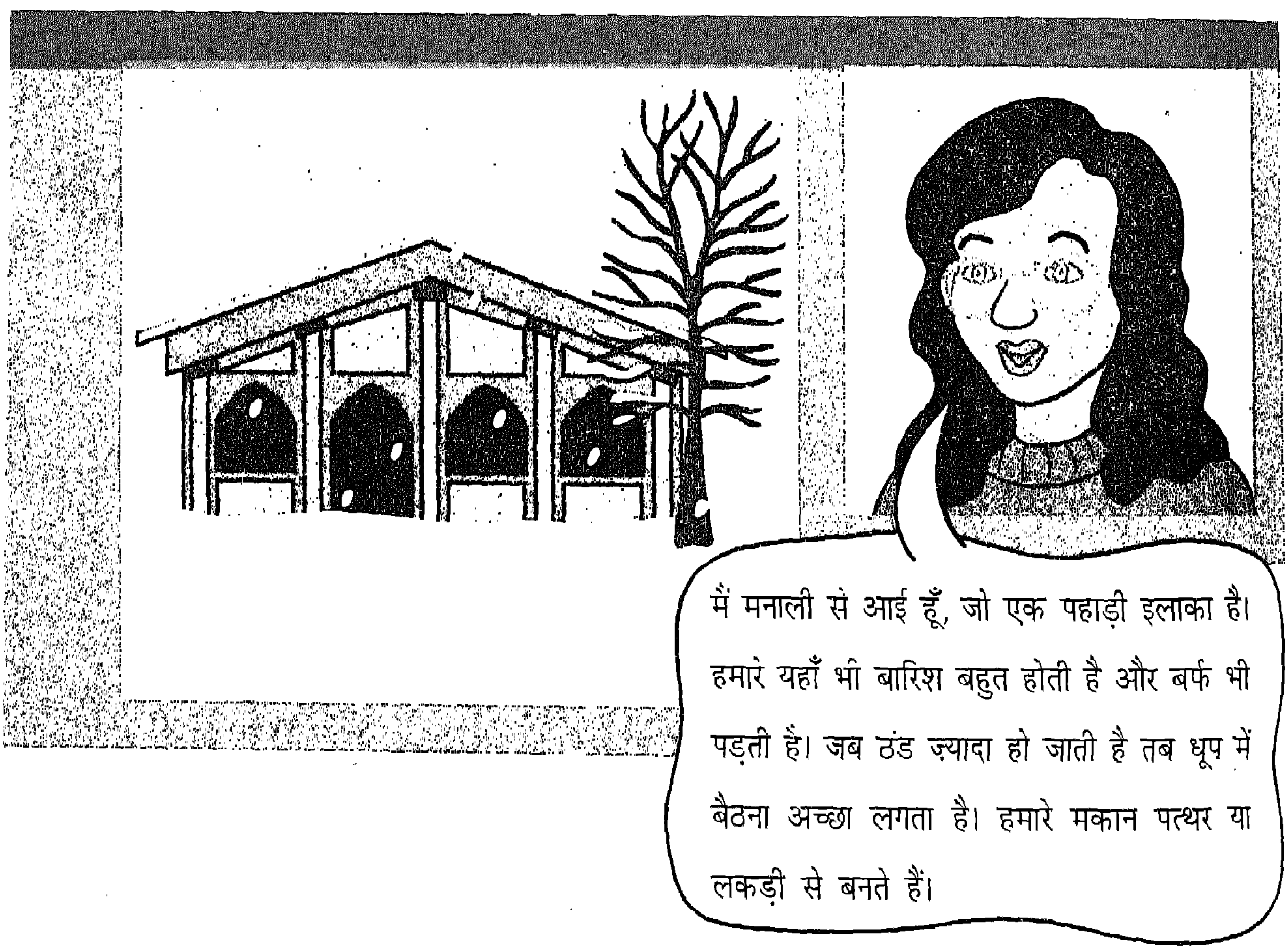
____

❀ रात के समय इन मकानों की सीढ़ी हटा देते हैं। क्यों?

____

____

अब आई चमेली की बारी। उसने कहा –



चमेली का घर किस इलाके में है?

____

चमेली और भूपेन के मकानों की छतों में क्या समानता है?

____

____

____

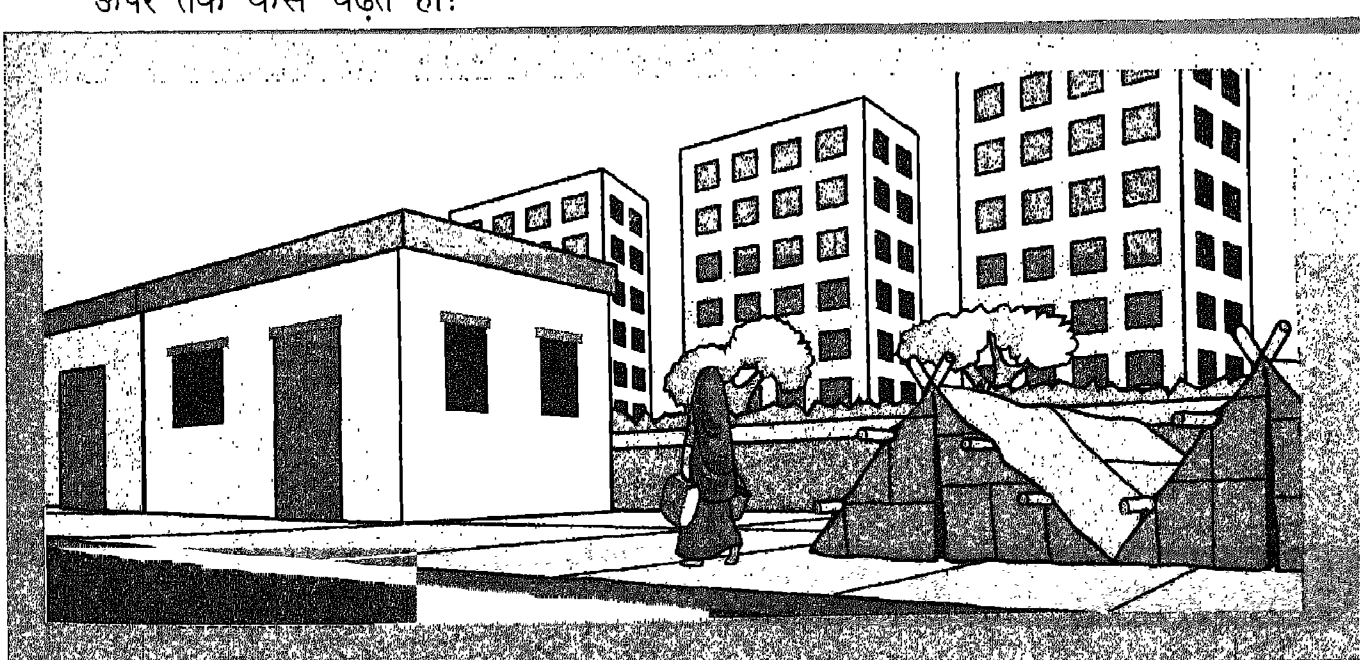
ऐसी छतें इन इलाकों में कैसे मदद करती हैं?

____

____

मिताली और अनुज ने बताया –

मिताली और अनुज दिल्ली से आए हैं। उन्होंने सबको दिल्ली की तस्वीरें दिखाई। एक तस्वीर में ऊँची-ऊँची इमारतें देखकर भूपेन बोला – अरे! इतने ऊँचे मकान। इनमें ऊपर तक कैसे चढ़ते हो?



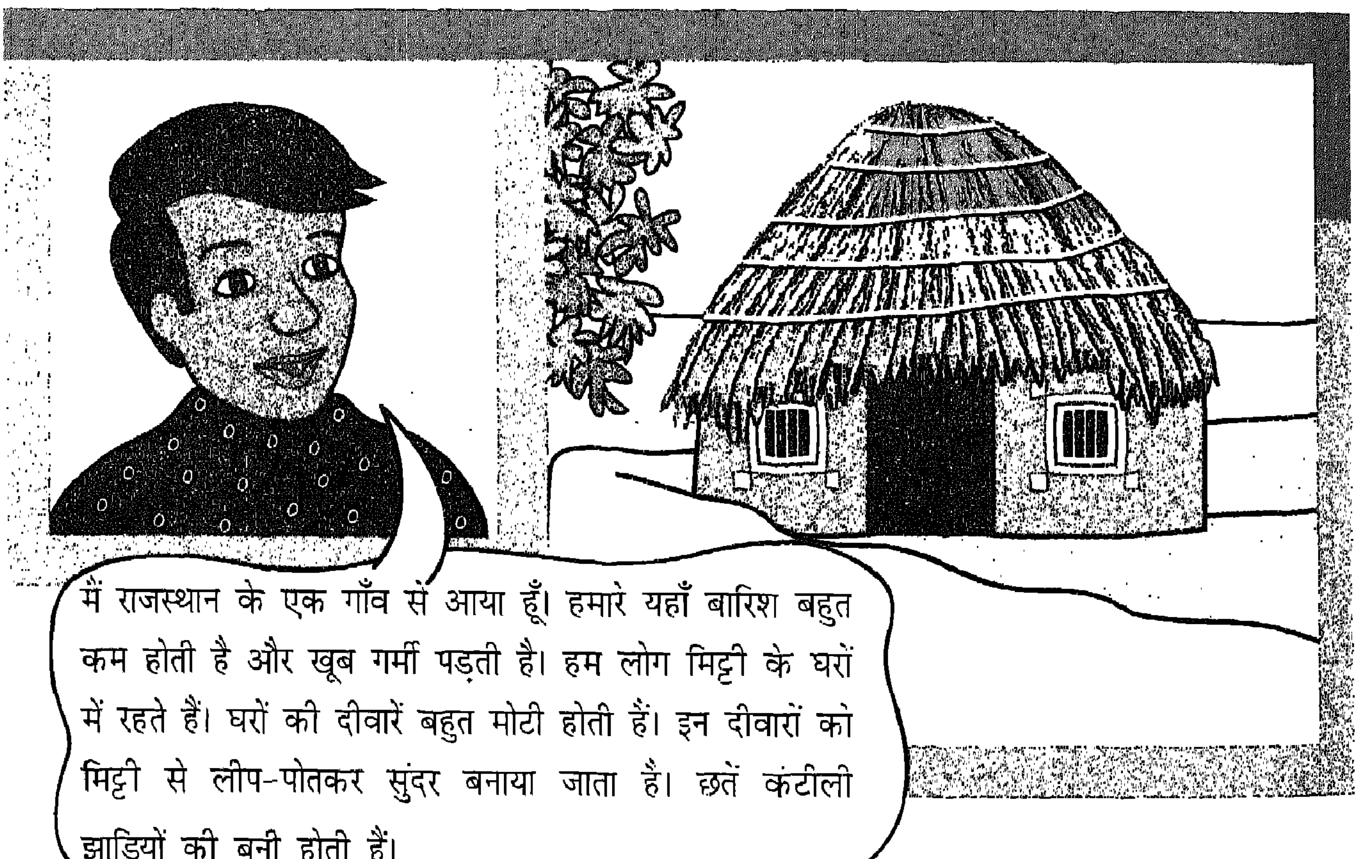
इन मकानों को देखो और पता करो कि क्या तुम्हारे यहाँ भी ऐसे मकान हैं?

बहुमंजिले मकानों में ऊपर कैसे चढ़ते होंगे?

____

दिल्ली भारत की राजधानी है। दिल्ली और उसके जैसे बड़े शहरों में, गाँवों और कस्बों से लोगों को काम की तलाश में आना पड़ता है। ये लोग अक्सर शहर में ही बस जाते हैं। यहाँ रहने वाले लोग ज़्यादा हैं और जगह कम। बहुत लोगों के पास मकान होते ही नहीं। उन्हें झुग्गी-झोपड़ियों में रहना पड़ता है – और कई लोगों के पास वह भी नहीं। लोग जहाँ जगह मिले वहीं सो जाते हैं – सड़क पर, फुटपाथ पर, स्टेशन पर...। वाकई शहरों में घर की बहुत बड़ी समस्या है।

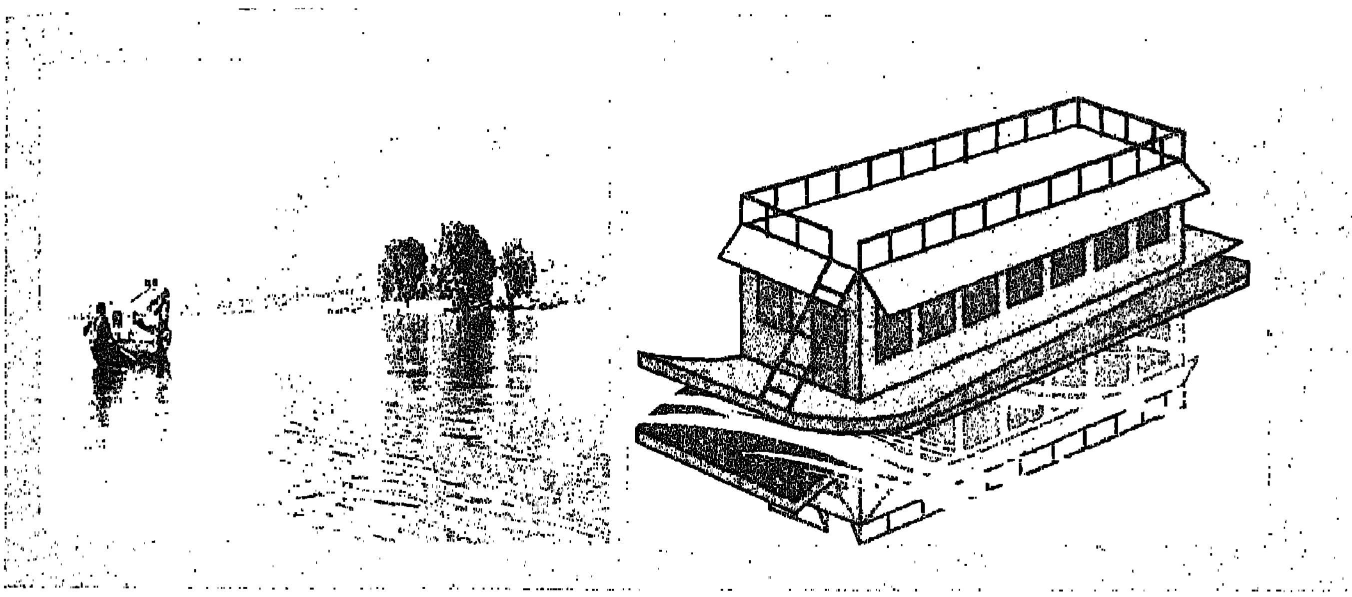
काशीराम ने बताया –



बच्चों से बेघर लोगों की मुसीबतों के बारे में संवेदनशीलता से बातचीत करने की आवश्यकता है।

इसी तरह सभी टोलियों ने अपने-अपने घरों के बारे में बताया। परिचय के बाद रंगारंग कार्यक्रम हुआ। बच्चों ने तरह-तरह के नाच किए। अपनी-अपनी भाषा में लोकगीत सुनाए। सब ने इलायची और बादाम डला हुआ कहवा (चाय) पीया। बहुत मज़ा आया।

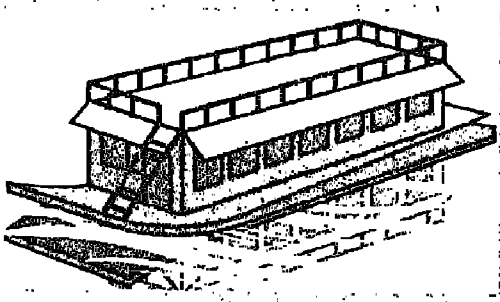
शाम को हम सब डल झील घूमने गए। वहाँ हमने एक हाउस बोट देखी। शिकारे में बैठे। कुछ बच्चों ने चप्पू भी चलाया। चारों तरफ़ नीले-नीले पहाड़ और बीच में 'चार चिनारी'।

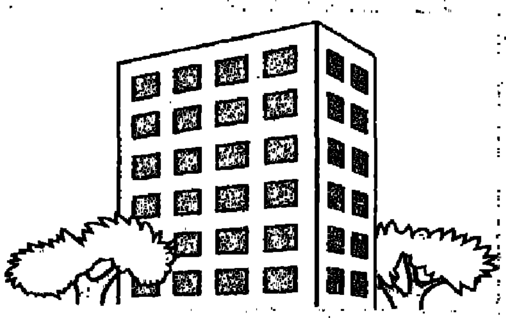


- हाउस बोट दूसरे घरों से अलग हैं। कैसे?

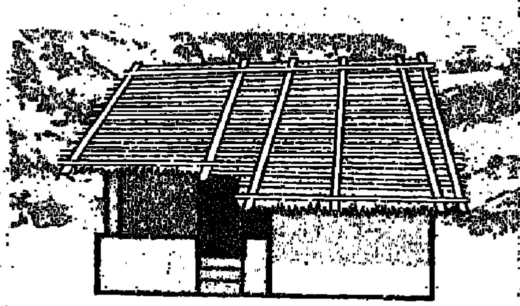
- क्या तुम ऐसे घर में रहना पसंद करोगे? क्यों?

चित्र देखकर मिलान करो।









झोपड़ी

बर्फ का घर (इग्लू)

तंबू

हाउस बोट

बहुमंजिला मकान

※ तुम्हारा घर किन-किन चीज़ों से बना है। उन के नाम पर '✓' का निशान लगाओ।

घास	मिट्टी	लकड़ी	सीमेंट	केनवास	लोहा
☐	☐	☐	☐	☐	☐
प्लास्टिक	चूना	बाँस	ईंटें	काँच	पत्थर
☐	☐	☐	☐	☐	☐

अपने घर के आस-पास के मकानों को देखो। वे किन-किन चीज़ों से बने हैं? उन चीज़ों की सूची बनाओ।

__________ __________ __________ __________

__________ __________ __________ __________

※ मकान जिन चीज़ों से बनते हैं, उन चीज़ों के नमूनों को इकट्ठा करो।

※ आओ ईंट बनाएँ

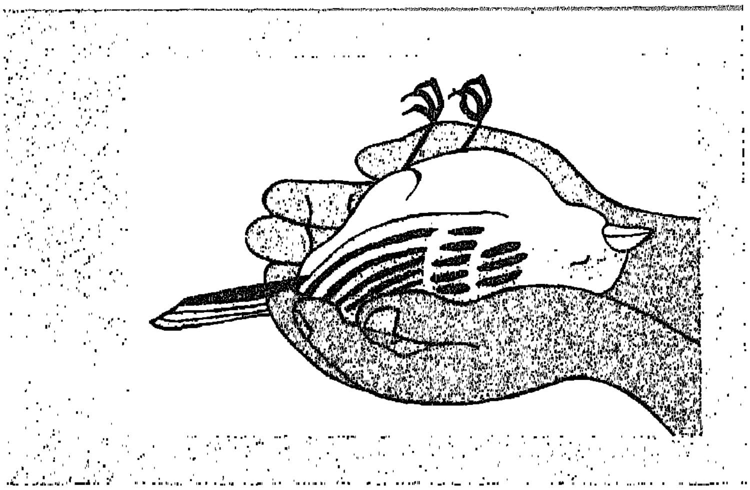
चिकनी मिट्टी को गूँध लो। खाली माचिस में दबाकर भरो। सुखाकर निकालो। तुम्हारी छोटी-सी ईंट तैयार हो गई!

अपनी ईंटों पर तरह-तरह के रंग करो। उस पर अपना नाम भी लिखो। इन सभी ईंटों को मिलाकर एक रंग-बिरंगा घर बनाओ। घर की छत को भी सजाओ।

- कई तरह के घरों के चित्र इकट्ठे करो या उनके चित्र बनाओ। चित्रों से एक सुंदर चार्ट बनाओ। कक्षा में उसे सजाओ।

मकान किन चीज़ों से बनाए जाते हैं – बच्चे अपने आस-पास उपलब्ध इन चीज़ों को इकट्ठा करके बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।

'टक' की आवाज़ सुनकर कक्षा में बैठे सभी बच्चे चौंक गए। आवाज़ छत पर लगे पंखे से आई थी। कल्याणी चिल्लाई—देखो-देखो! उस कोने में देखो। चिड़िया पंखे से कट गई। पीटर झट से उठा और चिड़िया को उठा लाया। चिड़िया तड़प रही थी।



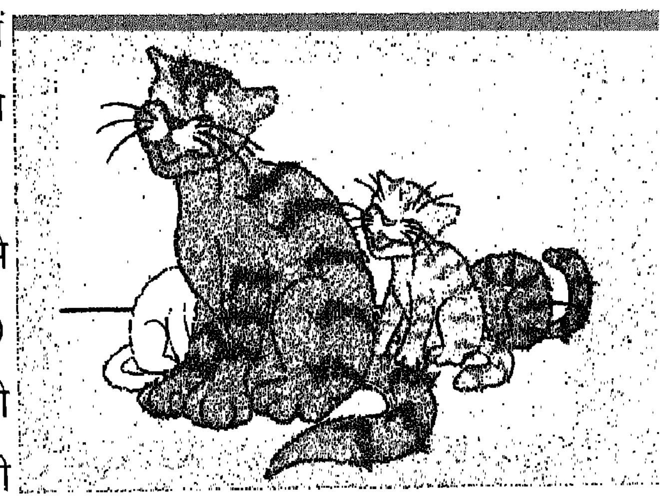
नवजोत और अली जल्दी से जाकर एक कटोरी में पानी ले आए। पीटर ने चिड़िया को प्यार से सहलाया। पानी की कटोरी चिड़िया की चोंच के पास लगाई। चिड़िया ने थोड़ा पानी पिया। पानी पीकर वह धीरे-धीरे अपने पंख फड़फड़ाने लगी। नवजोत ने सभी बच्चों को पीछे हटने के लिए कहा। उन्होंने देखा कि चिड़िया धीरे-धीरे उड़ने की कोशिश कर रही है। तभी फुर्र... की आवाज़ के साथ चिड़िया बाहर उड़ गई।



अगले दिन बच्चों ने देखा एक चिड़िया कमरे में चक्कर लगा रही है। बच्चों ने यह पहचानने की कोशिश की कि क्या वह पिछले दिन वाली चिड़िया थी। उन्हें लगा कि वही है। उन्होंने जल्दी से पंखा बंद कर दिया और ताली बजाने लगे।

वाक्यों को सही क्रम में डालो –

- पीटर ने चिड़िया को प्यार से सहलाया। ☐
- बच्चों ने देखा एक चिड़िया उनकी कक्षा में चक्कर लगा रही है। ☐
- नवज़ोत और अली जल्दी से जाकर एक कटोरी में पानी ले आए। ☐
- फुर्र... की आवाज़ के साथ चिड़िया कक्षा से बाहर उड़ गई। ☐
- चिड़िया पंखे से कट गई। ☐



शंकर बहुत खुश था। उसके घर के आँगन में बिल्ली ने चार बच्चे जो दिए थे। वह अपना खाली समय वहीं बिताने लगा।

एक सुबह बिल्ली के रोने की आवाज़ से उसकी नींद खुली। (बोलो, बिल्ली कैसे रोती है?) वह भागा आँगन की ओर। देखा तो बिल्ली अपने तीन बच्चों को साथ चिपका कर रो रही थी। एक बच्चा गायब था। बाहर जाकर देखा तो मालिनी बिल्ली के बच्चे को सहला रही थी।

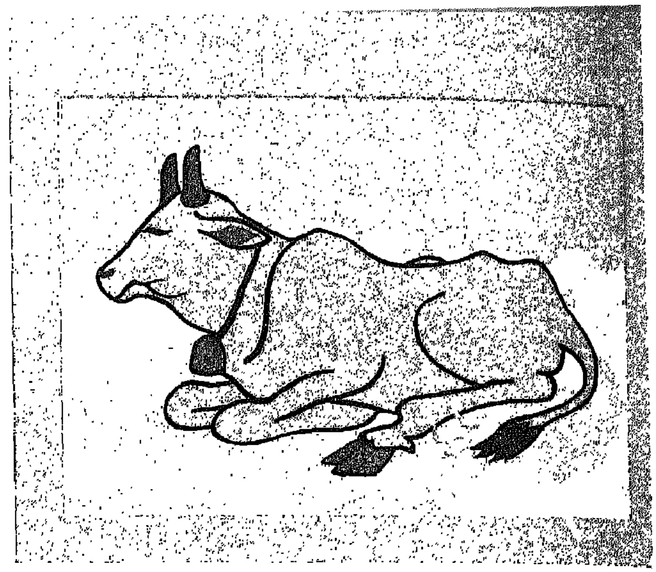
शंकर ने मालिनी को घर के आँगन में बुलाया। मालिनी ने बिल्ली को रोते हुए देखा।

सोचो, मालिनी ने क्या किया होगा?

जानवरों की भावनाओं के बारे में चर्चा करने से बच्चे जानवरों के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं।

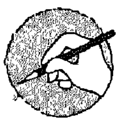
भोली, मीनू की गाय है। मीनू रोज़ सुबह भोली को मैदान में चराने ले जाती है।

एक दिन तेज़ी से आते स्कूटर से भोली के पाँव में चोट लग गई। चोट से खून निकल रहा था।





अब मीनू के घर के लोग क्या करेंगे?



चंदू धोबी अपने गधे का बहुत ध्यान रखता है। गधा भी तो उसके बहुत सारे काम करता है।

चित्रों को देखकर लिखो कि चंदू अपने गधे के लिए क्या-क्या करता है?



____

____

____

____

❋ क्या तुम्हारे घर में या पड़ोस में किसी के यहाँ कोई पालतू जानवर है? कौन-सा?

____

❋ क्या तुम उसे किसी प्यार के नाम से पुकारते हो? किस नाम से?

____

❋ तुम क्या करते हो जब तुम्हारे पालतू जानवर को –

- भूख लगती है ______________
- गर्मी या ठंड लगती है ______________
- कोई परेशान करता है ______________
- चोट लगती है ______________

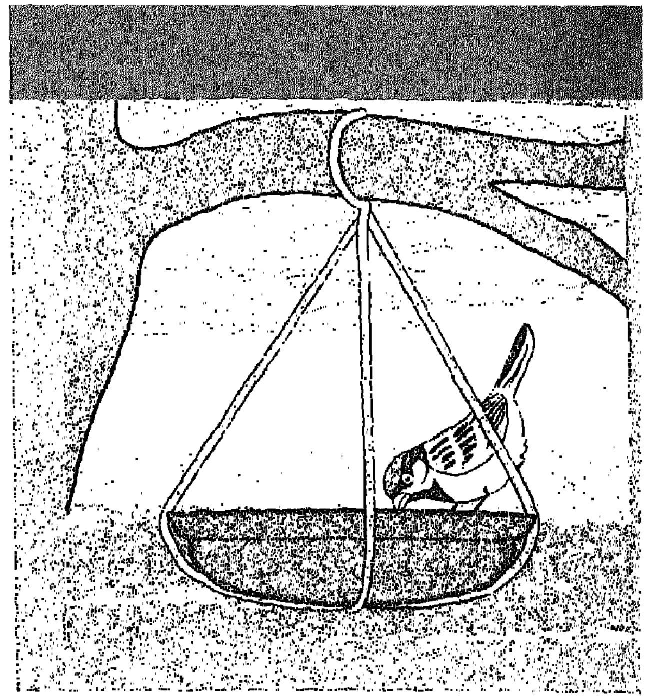
❋ हम कुछ जानवरों को पालते हैं। उनकी देखभाल भी करते हैं। तालिका में कुछ जानवरों के नाम हैं, जिन्हें पाला जाता है। तालिका को पूरा करो।

जानवर का नाम	इन्हें क्यों पालते है
कुत्ता	
	दूध देती है
	गाड़ी खींचता है
बैल	
मुर्गी	
मछली	
	प्यारा या प्यारी लगती है
मधुमक्खी	

हम जानवरों को पालते हैं तथा उनकी देखभाल भी करते हैं – यह संबंध समझने से बच्चों को उनके परिवेश में जीवों की आपसी निर्भरता समझने में आसानी होगी।

पक्षियों का प्याऊ

मिट्टी का एक चौड़े मुँह का बर्तन लो। बर्तन को रस्सी से बाँधकर लटकाओ, जैसा चित्र में दिखाया है। अब उस बर्तन में पानी डालकर उसे किसी पेड़ की शाखा पर या घर के बाहर किसी खूँटी पर टाँग दो। उसमें रोज़ पानी भरो। देखो, पानी पीने के लिए कौन-कौन से पक्षी वहाँ आते हैं?



- पानी की जरूरत हमें भी है और जानवरों को भी। ऐसी ही कुछ और चीज़ें हैं जिन्हें हम और जानवर दोनों इस्तेमाल करते हैं। ऐसी किन्हीं तीन चीज़ों के नाम लिखो।

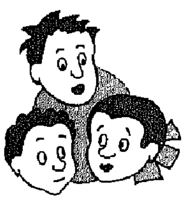
तुमने शायद भोजन भी अपनी सूची में शामिल किया होगा।

तुम जानते ही हो हमारा भोजन कितनी अलग-अलग तरह का है। इसी तरह जानवरों का भोजन भी अलग-अलग तरह का होता है।

- क्या तुमने कभी किसी जानवर को कुछ खिलाया है या किसी और को कुछ खिलाते हुए देखा है? यदि हाँ, तो तालिका में लिखो।

बच्चों को पक्षियों का प्याऊ बनाने में मदद करें। इसे बाहर खुले में रखवाएँ जिससे बच्चे पक्षियों को नज़दीक से देखें और उनके बारे में बहुत-सी बातें जानें।

किस जानवर को खिलाया	क्या खिलाया

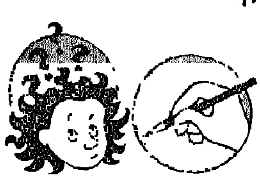


- तुम इन जानवरों को खाना क्यों खिलाते हो?
- किस जानवर को सबसे ज़्यादा बच्चों ने खाना खिलाया है?
- उसे क्या-क्या खिलाया?



देखो, क्या तुम्हारी तालिका में इनके भी नाम हैं? पता करो ये क्या खाते हैं?

चूहा, कॉकरोच, छछुंदर, मकड़ी, छिपकली, कौआ, गिलहरी, बंदर, सूअर



सोचो, क्या कभी किसी जानवर ने तुम्हारी मर्ज़ी के बिना तुम्हारा खाना खाया है? कैसे?

कौन क्या खाता है? उसे लाइन खींचकर मिलाओ। एक उदाहरण दिया है।

छिपकली

चूहा

चिड़िया

मनुष्य

घासफूस

रोटी, फल, सब्जी

साँप

रोटी

चींटी

मच्छर, कीड़े-मकोड़े

बकरी

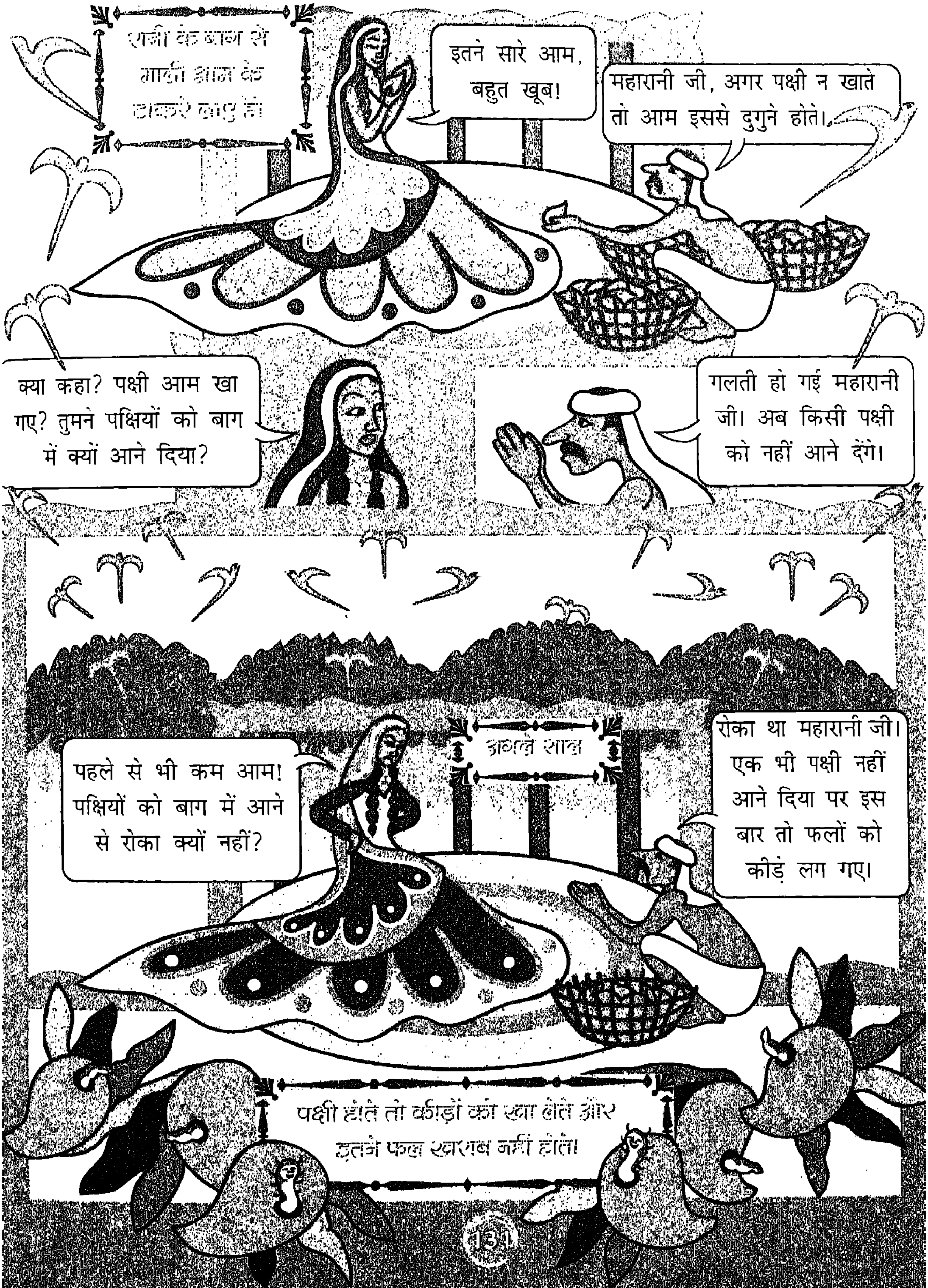
तालिका में जानवरों के नाम लिखो।

ऐसे जानवर जिन्हें तुमने छुआ है	ऐसे जानवर जिन्हें तुमने छुआ नहीं है पर छू सकते हो	ऐसे जानवर जिन्हें तुम छू नहीं सकते
____________	____________	____________
____________	____________	____________
____________	____________	____________
____________	____________	____________

तुमने देखा कि कुछ जानवरों को हम छू सकते हैं। ये अधिकतर हमारे घरों में और आस-पास रहते हैं। इनमें से कुछ हमारी मदद करते हैं।

कुछ जानवरों के पास हम नहीं जाते। डर लगता है कहीं काट न लें, नुकसान न पहुँचाएँ या खा ही न जाएँ!

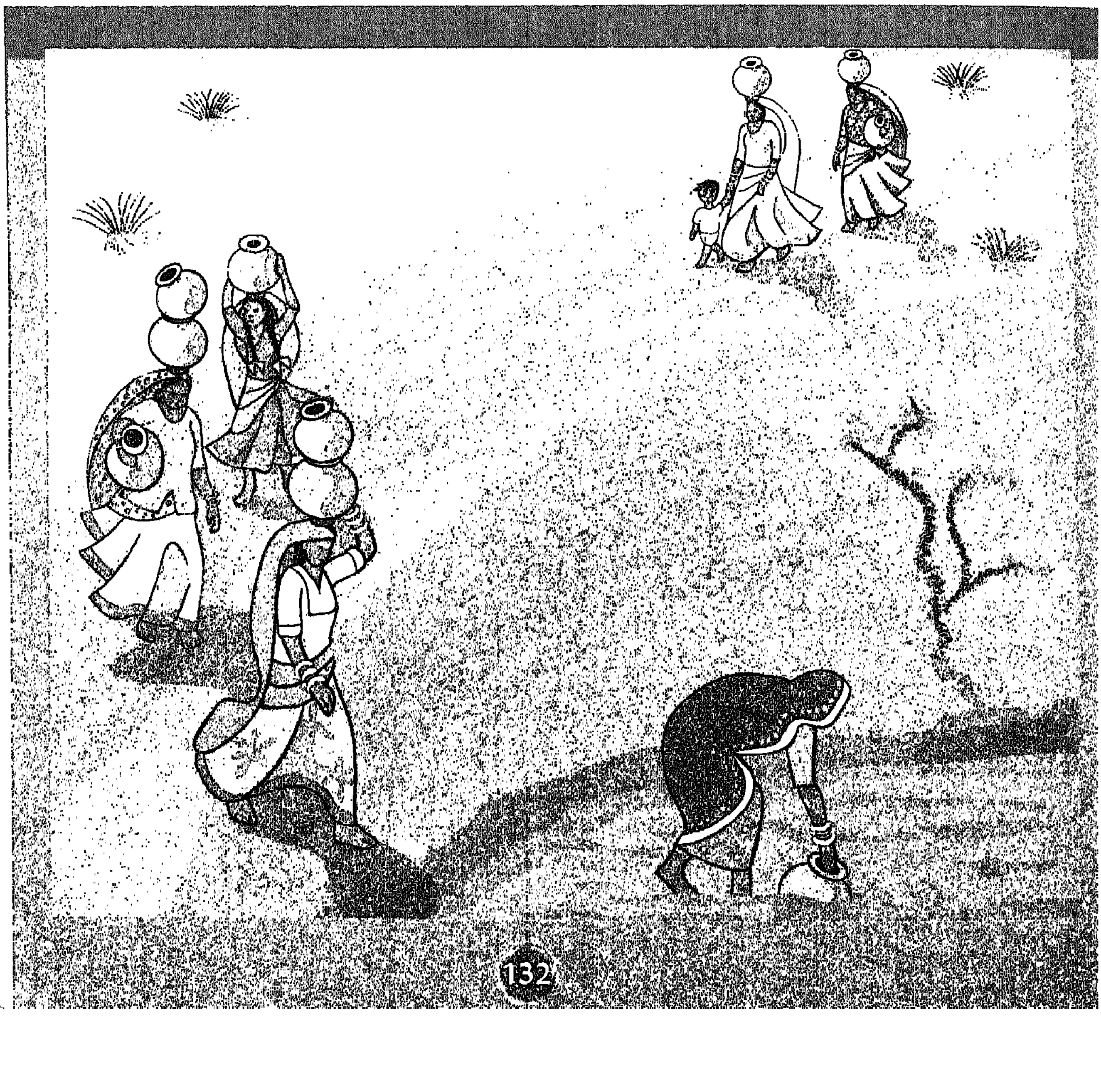
बच्चों से यह चर्चा की जा सकती है कि पशु-पक्षियों को छूने का अर्थ है उन्हें प्यार से सहलाना न कि उन्हें सताना। अगले पृष्ठ पर चित्र द्वारा दिखाई गई कहानी प्रकृति में संतुलन को दर्शाती है। बच्चों को यह बात सहज और सरल तरीके से स्पष्ट करना ज़रूरी है।


रानी के बाग से माली आम के टोकरे लाए हैं
इतने सारे आम, बहुत खूब!
महारानी जी, अगर पक्षी न खाते तो आम इससे दुगुने होते।
क्या कहा? पक्षी आम खा गए? तुमने पक्षियों को बाग में क्यों आने दिया?
गलती हो गई महारानी जी। अब किसी पक्षी को नहीं आने देंगे।
अगले साल
पहले से भी कम आम! पक्षियों को बाग में आने से रोका क्यों नहीं?
रोका था महारानी जी। एक भी पक्षी नहीं आने दिया पर इस बार तो फलों को कीड़े लग गए।
पक्षी होते तो कीड़ों को खा लेते और इतने फल खराब नहीं होते।

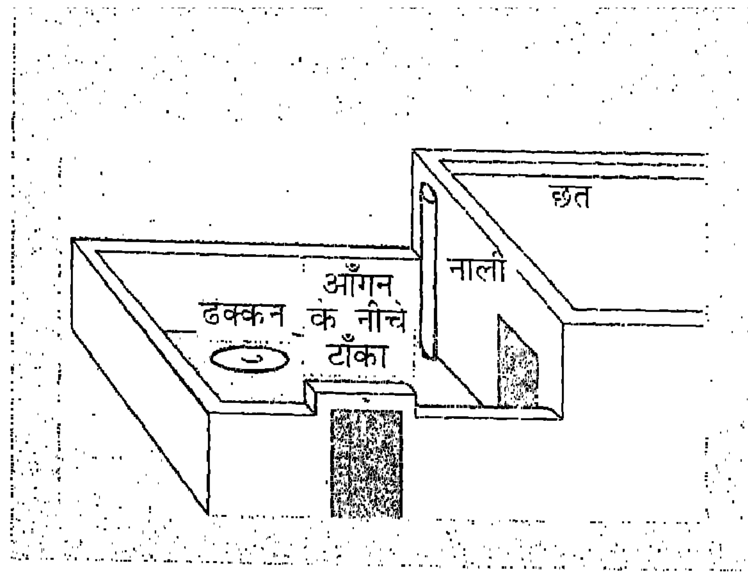
20 बूँद-बूँद से

माधो राजस्थान के बज्जू गाँव में रहता है। गाँव कहाँ? देखो तो चारों ओर रेत ही रेत दिखाई देती है। जब कभी रेत नहीं उड़ती, तब कुछ घर दिख जाते हैं।

माधो के घर में सब परेशान हैं। वैसे ही हर साल गर्मियों में पानी की बहुत कमी होती है। इस साल तो बिल्कुल ही बारिश नहीं हुई। अब उसकी माँ और बहन को और भी दूर जाना पड़ता है, पानी लाने के लिए। पास वाली बावड़ी सूख जो गई है! हर रोज़ चार घड़े पानी जुटाने में ही कई घंटे निकल जाते हैं। गर्म रेत में चल-चल कर उनके पैर तो जलते ही हैं, छाले भी पड़ जाते हैं।



गाँव में खुशी की लहर तब उठती है, जब कभी रेल से पानी आता है। माधो के पिताजी ऊँट-गाड़ी में पानी लाने जाते हैं, पर ऐसा मौका अक्सर नहीं आता। लोग पानी का इंतज़ार करते ही रह जाते हैं।



कुछ लोग बारिश का पानी इकट्ठा करते हैं। यह खास तरह से किया जाता है – टाँका बना कर। क्या तुम जानते हो टाँका क्या होता है? और इसे कैसे बनाते हैं?

आँगन में गड्ढा बना कर उसे पक्का करके टाँका बनाते हैं। टाँके को ढक्कन से बंद रखते हैं। टाँके के लिए घर की छत को कुछ ढलवा बना देते हैं, जिससे छत पर गिरा बारिश का पानी नाली के द्वारा नीचे टाँके में इकट्ठा हो सके। छत की नाली पर जाली लगा देते हैं जिससे कूड़ा-कचरा टाँके में न जा सके।

यह पानी, साफ़ करके, पीने के काम में लाया जाता है। कभी-कभी गाँव के एक टाँके से माधो को भी पानी लेने देते हैं।



सोचो! पानी की कमी से लोगों को क्या-क्या परेशानी होती होगीं?



- माधो के गाँव के लोग पीने का पानी कहाँ से लाते हैं?
- माधो के घर में पानी भरकर कौन लाता है?
- टाँके का पानी ज़्यादातर पीने के काम में ही आता है। क्यों?
- अब तुम बताओ, क्या तुम्हारे घर में भी बारिश का पानी इकट्ठा किया जाता है? यदि हाँ, तो कैसे?
- क्या पानी को इकट्ठा करने का कोई और तरीका भी हो सकता है?

अगर पानी इकट्ठा करने के स्थानीय तरीकों पर बच्चे अपने अनुभव बाँटें तो किताबी ज्ञान को जीवन के अनुभवों से जोड़ पाएँगे।

माधो की तरह सोनल के घर में भी पानी की किल्लत रहती है। सोनल भावनगर शहर में रहती है। नल में रोज़ केवल आधे घंटे पानी आता है। मोहल्ले भर के लोग एक ही नल पर, सोचो कितना बुरा हाल होता होगा।

पर सोनल पानी भरने के लिए डटी रहती है। जब मौका मिलता है, बूँद-बूँद कर के भी बाल्टी भर लेती है।

आओ पता लगाएँ कि कितनी बूँदों से भरती है कटोरी, या फिर बाल्टी।

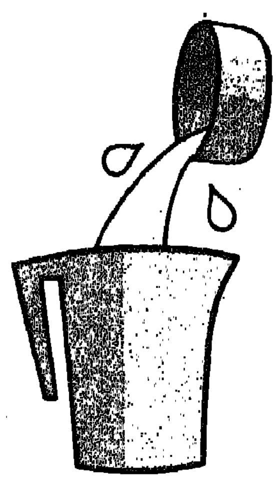
चित्र में दिखाए तरीके से प्रयोग करो, पता लगाओ और खाली डिब्बे में लिखो।



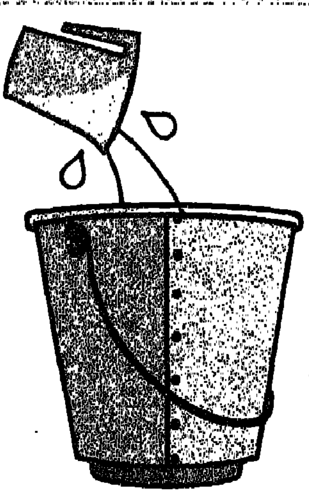
1. एक चम्मच में कितनी बूँदे? ☐



2. एक कटोरी में कितने चम्मच? ☐



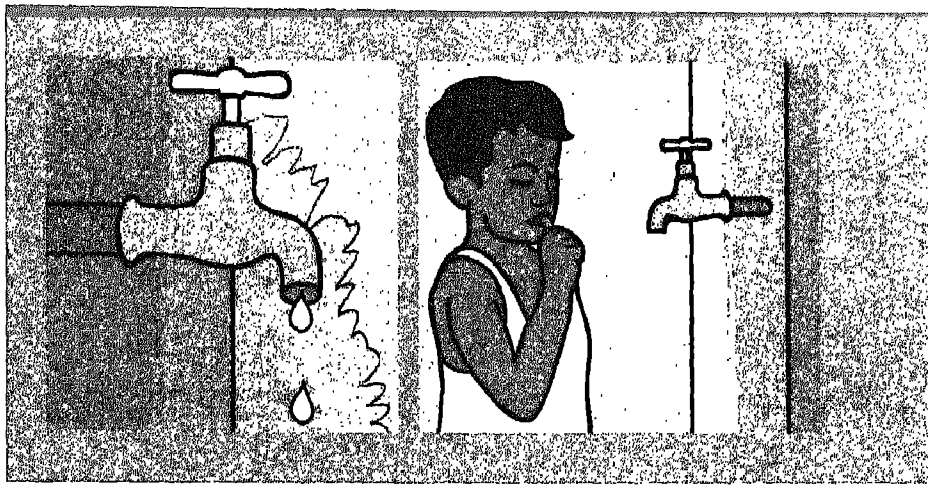
3. एक मग में कितनी कटोरी? ☐



4. एक बाल्टी में कितने मग? ☐

देखा, बूँद-बूँद से मिला कितना पानी!

अगर नल से बूँद-बूँद पानी टपकता रहेगा तो कितना पानी बरबाद होगा। इन चित्रों में ऐसा ही कुछ हो रहा है।

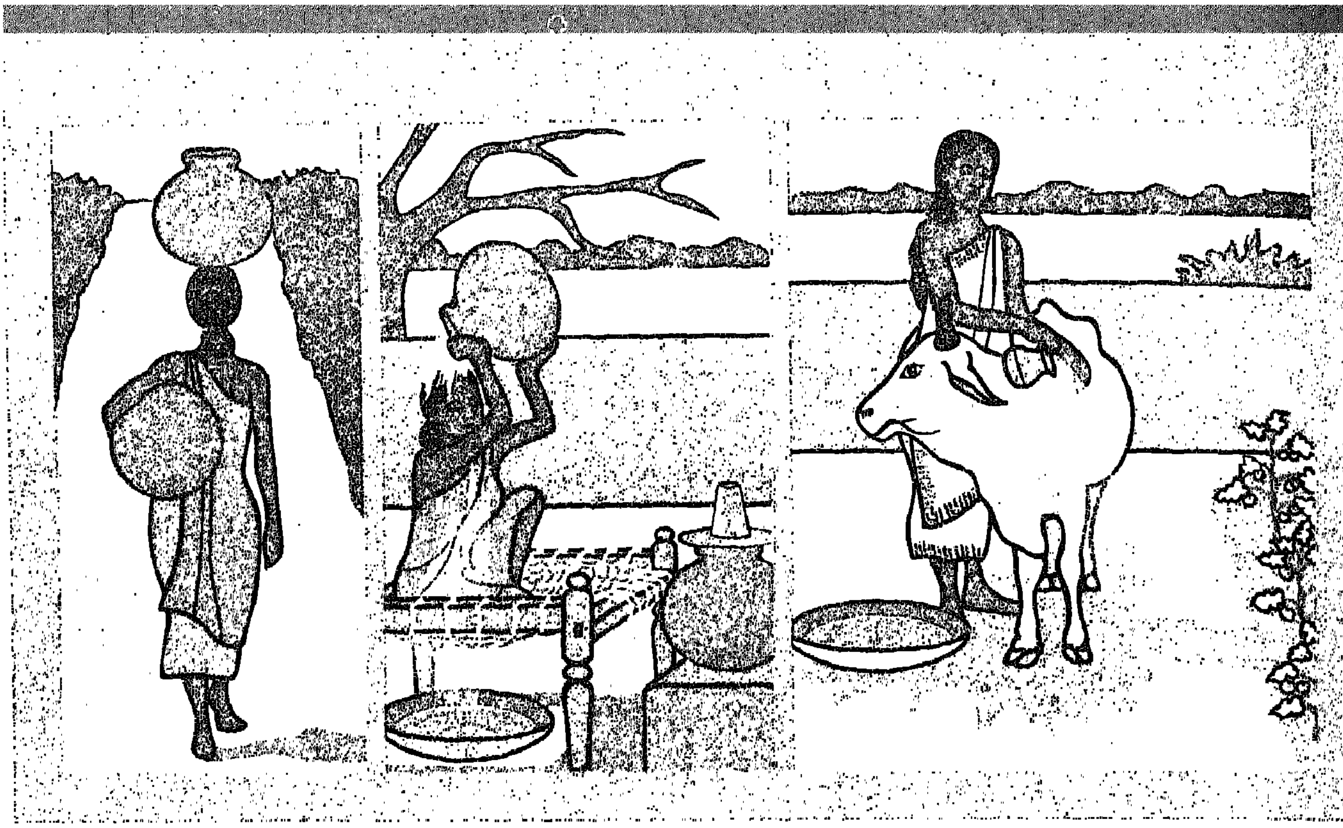


पानी की बचत के लिए तुम क्या कुछ सोच सकते हो? तुम्हारा सुझाव लिखो।

क्या तुमने घर में, स्कूल में या रास्ते में पानी को बेकार बहते देखा है? कहाँ?

चित्र देखो और चर्चा करो – क्या एक बार पानी से काम करने के बाद उसी पानी से कुछ और काम कर सकते हैं?

जिस जगह पर पानी की किल्लत होती है वहाँ लोग पानी की बचत करने व उसके दुबारा इस्तेमाल के कई तरीके अपनाते हैं। ऐसा वह लोग मज़बूरी में करते हैं। इस बात को समझकर बच्चे अपने जीवन में पानी की बचत के कुछ उपाय अपनाएँ तो 'पानी सबका सांझा है' – यह बात वे समझ पाएँगें।



अलग-अलग रंगों से लाइनें खींचकर दिखाओ, किस काम के बाद क्या काम करोगे, जिससे वही पानी बार-बार इस्तेमाल हो सके। एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

हाथ मुँह धोना	कपड़े धोना	फल-सब्ज़ी धोना
पोंछा लगाना	पौधों में डालना	शौचालय में डालना

तुमने पानी के बार-बार इस्तेमाल के कुछ तरीके सुझाए। यह तरीके लोग ज़्यादातर मजबूरी में ही अपनाते हैं, जहाँ पानी की बहुत कमी होती है। जानते हो पानी की कमी इसलिए भी होती है क्योंकि कुछ लोग पानी बेकार करते हैं। सोचो कितना अच्छा हो अगर सभी को पानी मिले!

इस्तेमाल किए हुए पानी के पुन: उपयोग पर चर्चा करें, ये पानी के बचाव के महत्त्व को समझने में सहायक होगी। इस बारे में बच्चों के सुझाव सुनना और इन सुझावों को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित करना उपयोगी रहेगा।

बोलो भाई कितने?

आओ, सब मिलकर एक खेल खेलें। इस खेल को तो तुम ज़रूर जानते होगे। सब बच्चे एक गोले में खड़े हो जाओ।

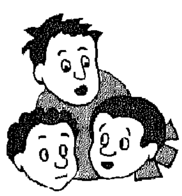
एक बच्ची गोले के बीच खड़े होकर कोई ताल बजाए। जब तक ताल बजता रहे तब तक सब गोले में भागते रहो।

ताल बजाने वाली बच्ची अचानक ताल रोककर कोई भी छोटी संख्या जैसे– 'पाँच', 'चार' या 'दो', ज़ोर से पुकारे।

ताल रुकने पर, जितनी संख्या पुकारी गई हो, उतनी ही संख्या की टोलियों में बँट जाओ।

जो बच्चे किसी भी गुट में नहीं जुड़ पाते, वे खेल से बाहर हो जाएँ।

जब तक केवल दो बच्चे गोले में न रह जाएँ, यह खेल खेलते रहो।

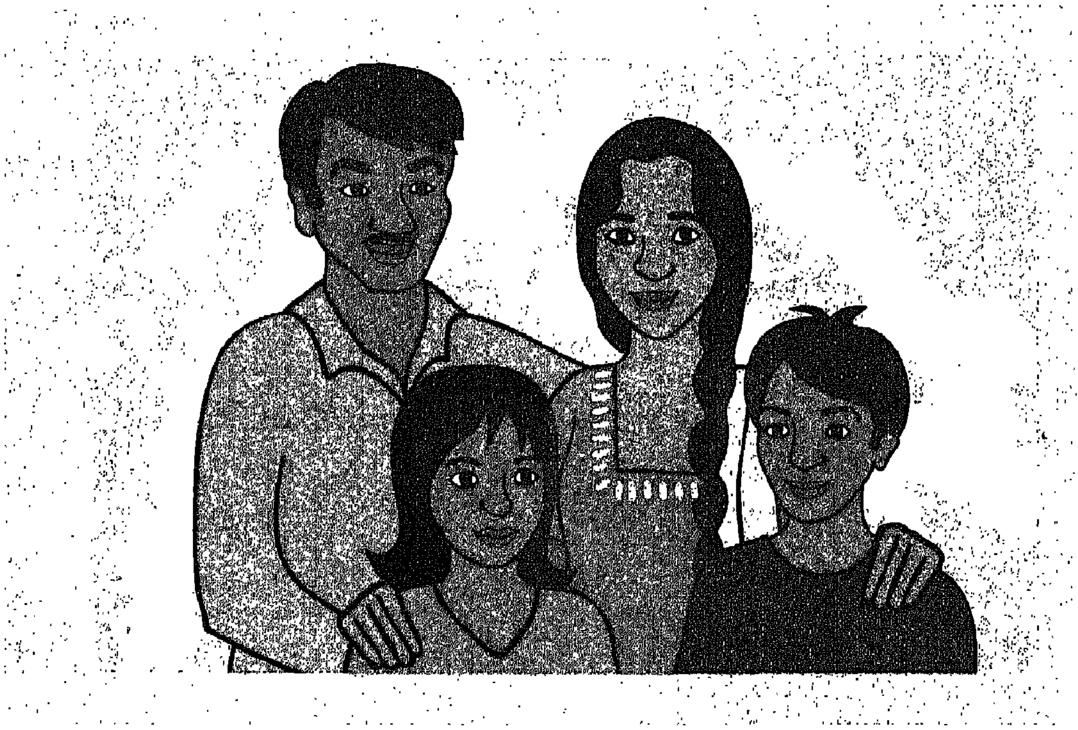


आओ, अब खेल के बारे में कुछ बातें करें

- जब तुम सही संख्या के गुट में शामिल हुए तो तुम्हें कैसा लगा? क्यों?
- अगर तुम किसी गुट में शामिल न हो पाए तब तुम्हें कैसा लगा? क्यों?
- क्या तुम्हें लोगों के साथ रहना पसंद है?
- तुम किन-किन के साथ रहना पसंद करते हो?
- अगर तुम्हें हमेशा अकेले ही रहना पड़े तो तुम्हें कैसे लगेगा?

'बोलो भाई कितने' खेल में ताल बजाने और संख्या पुकारने का काम कोई भी कर सकता है। बच्चों की संख्या के अनुसार पुकारी जाने वाली संख्या कम या ज़्यादा की जा सकती है।

हम सब अकेले न रह कर और लोगों के साथ रहना पसंद करते हैं। हम सब किसी न किसी गुट में जुड़कर जीते हैं। चलो देखते हैं एक ऐसे गुट को – गुरलीन, नागराजन और उनके बच्चे तान्या और समर।





ये लोग एक-दूसरे से कैसे जुड़े हैं?

जो चित्र तुमने देखा उसमें दिखाए गए लोग एक परिवार के हैं। ऐसे परिवार के चित्र या फोटो हम कई बार देखते हैं। कहाँ-कहाँ देखते हैं हम ऐसा परिवार? क्या सभी परिवार ऐसे ही होते हैं? आओ! अब कुछ परिवारों के बारे में पढ़ें।

सीताम्मा

सीताम्मा एक छोटे शहर गुंटूर में पुश्तैनी मकान में रहती है। मकान में नीचे दादा, दादी, छोटे चाचा और बुआ रहते हैं। पहली मंजिल के एक हिस्से में सीताम्मा अपने पिताजी, माँ और छोटी बहन गीताम्मा के साथ रहती है। दूसरे हिस्से में ताऊजी और उनके तीनों बच्चे रहते हैं। कुछ ही महीनों पहले उसकी ताईजी की मौत हो गई थी।

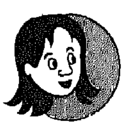
बच्चों के स्वयं के परिवार के बारे में पाठ चार में हुई चर्चा को ध्यान में रखना अच्छा होगा। कक्षा में मौजूद बच्चों के परिवारों में विविधता से पाठ की शुरुआत हो सकती है।

उसके बड़े चाचा और नई चाची अलग बरसाती के एक कमरे में रहते हैं। उनकी नई-नई शादी हुई है।



रात के खाने के पहले सीताम्मा की माँ सब बच्चों को पढ़ाई करवाती है।

सब का खाना नीचे रसोई में इकट्ठा बनता है। कोशिश होती है कि रात को सब मिलकर खाएँ। आजकल रात को ताऊजी की छोटी लड़की, सीताम्मा की माँ के पास ही सोती है। सुबह सीताम्मा उसे स्कूल के लिए तैयार करती है।



- सीताम्मा के परिवार में कौन-कौन हैं?
- इन अलग-अलग लोगों का आपस में कैसा रिश्ता है?
- इस परिवार में पिछले साल में क्या-क्या बदलाव आए हैं?

तारा

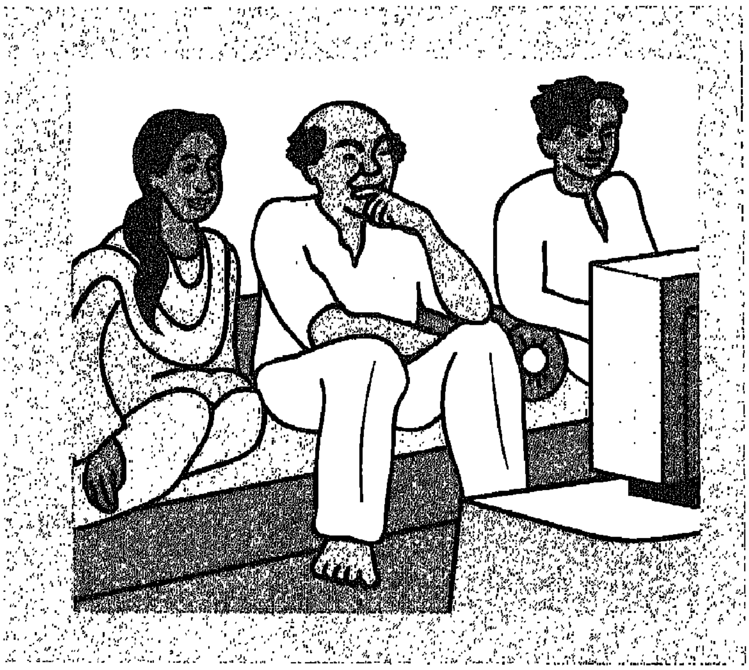
तारा अपनी अम्मा और नाना के साथ चैन्नई में रहती है। उसकी अम्मा मीनाक्षी ने शादी नहीं की है और तारा को गोद लिया है। मीनाक्षी सुबह ऑफिस जाती है और शाम को घर आती है। स्कूल से लौटने के बाद तारा की देखभाल उसके नाना जी करते हैं। वे ही उसे खाना खिलाते हैं, स्कूल का काम करने में मदद करते हैं। उसके साथ खेलते भी हैं। छुट्टी के दिनों में तीनों दूर घूमने निकल जाते हैं, खूब मज़े करते हैं। कभी-कभी तारा की मौसी, मौसा



और उनके बच्चे भी आ जाते हैं। तब वे सब मिलकर खूब खेलते हैं और गप-शप करते हैं।

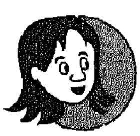


- ❋ तारा की देखभाल कौन करता है? कैसे?
- ❋ परिवार के लोग मिलकर क्या-क्या करते हैं?



सारा और हबीब

सारा और हबीब एक शहर में रहते हैं। दोनों नौकरी करते हैं। हबीब सरकारी दफ़्तर में क्लर्क है और सारा स्कूल में पढ़ाती है। हबीब के अब्बू रिटायर हो चुके हैं और उनके साथ रहते हैं। शाम को तीनों साथ बैठकर टी.वी. देखते हैं या ताश खेलते हैं। अब्बू को सब के साथ टी.वी. देखने में मज़ा आता है – देखने के साथ-साथ बहस जो होती है। छुट्टी के दिन पड़ोस के बच्चे उनके घर में खूब धमाल मचाते हैं। सब साथ मिलकर मज़े करते हैं - कभी खेल-कूद कर, कभी घूमने जाकर, कभी नाटक देखकर।



- ❋ इस परिवार में कौन-कौन है?
- ❋ पिताजी को सब के साथ टी.वी. देखने में ज़्यादा मज़ा आता है। क्यों?
- ❋ परिवार के लोग कैसे मज़े करते हैं?

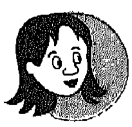
तोताराम

तोताराम अपने पिताजी, चाचा और चचेरे भाईयों के साथ मुंबई की बस्ती में रहता है। तोताराम और उसके भाई मुंबई पढ़ने के लिए आए हैं। उसके पिताजी और चाचाजी यहाँ नौकरी करते हैं।

घर का सारा काम सभी मिलकर करते हैं। तोताराम के चाचा के हाथ का खाना सभी को बहुत पसंद है। उसके पिताजी खरीदारी का सारा काम सँभालते हैं। वे जितना पैसा कमाते हैं, उसका कुछ हिस्सा वे गाँव में तोताराम के दादा को भेजते हैं। तोताराम की माँ, दादा, दादी, चाची और छोटे भाई-बहन गाँव के घर में रहते हैं। तोताराम साल में एक बार गाँव जाता है।



उसको अपनी माँ की बहुत याद आती है। वह उसे बहुत लंबी चिट्ठी लिखता है।



- तोताराम के परिवार के लोग एक-दूसरे से संपर्क कैसे बनाए रखते हैं?
- तोताराम के परिवार में कौन-से लोग शहर में रहते हैं? और कौन-से गाँव में? क्यों?

कृष्णा और कावेरी

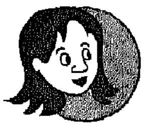
कृष्णा और कावेरी अपने पिताजी के साथ रहते हैं। सुबह तैयार होकर तीनों इकट्ठे घर से निकलते हैं। कृष्णा कावेरी को स्कूल छोड़कर कॉलेज जाता है। पिताजी दुकान जाते हैं, दिन भर के लिए।



दोपहर में कावेरी स्कूल से लौटकर ताला खोलती है और कृष्णा का इंतज़ार करती है। कॉलेज से आकर कृष्णा खाना गर्म करता है और दोनों मिलकर खाते हैं।

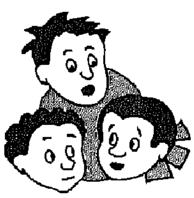
स्कूल का काम करने के बाद कावेरी बाहर खेलने जाती है। लौटकर भाई के साथ कभी कैरम खेलती हैं, कभी टेलीविज़न देखती है। पिताजी जब आ जाते है तब तीनों मिलकर खाना बनाते हैं और खाते हैं।

छुट्टियों में कावेरी अपनी माँ के पास रहने जाती है। कृष्णा भी कुछ दिन वहीं माँ के पास रहता है, पर उसे अपने घर में ही रहना पसंद है – उसकी सारी चीज़ें और पिताजी जो यहाँ हैं।

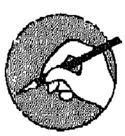


- कृष्णा अपनी बहन का ध्यान कैसे रखता है?
- परिवार में क्या-क्या काम इकट्ठे करते हैं?

तुमने कई परिवारों के बारे में पढ़ा। कुछ सवालों पर चर्चा भी की। परिवार क्या है? परिवार कैसे-कैसे होते हैं? इस बारे में तुमने अपनी राय तो बना ली होगी।



परिवार में क्या-क्या होता है?



दिए गए वाक्यों में से जो परिवार में होता है उन पर '✓' का निशान लगाओ।

- एक परिवार के लोग अक्सर एक-दूसरे जैसे दिखते हैं। ☐
- परिवार के लोगों को एक-दूसरे से बहुत प्यार होता है। ☐
- एक परिवार में जन्म होने से या शादी होने से हम उस परिवार का हिस्सा हो जाते हैं। ☐
- परिवार के लोग अक्सर एक घर में एक साथ रहते हैं। ☐
- परिवार के बड़े लोग अपने परिवार के लिए पैसे कमाते हैं। ☐

पाठ में कुछ परिवारों के बारे में बताया गया है। इनके अलावा भी कई तरह के परिवार होते हैं। इस विविधता को समझने के लिए बच्चों से उनके परिवार के बारे में चर्चा की जा सकती है।

❀ परिवार के लोगों का आपस में झगड़ा हो तो भी सभी साथ रहते हैं। ☐

❀ परिवार में बच्चों और बूढ़ों की देखभाल होती है। ☐

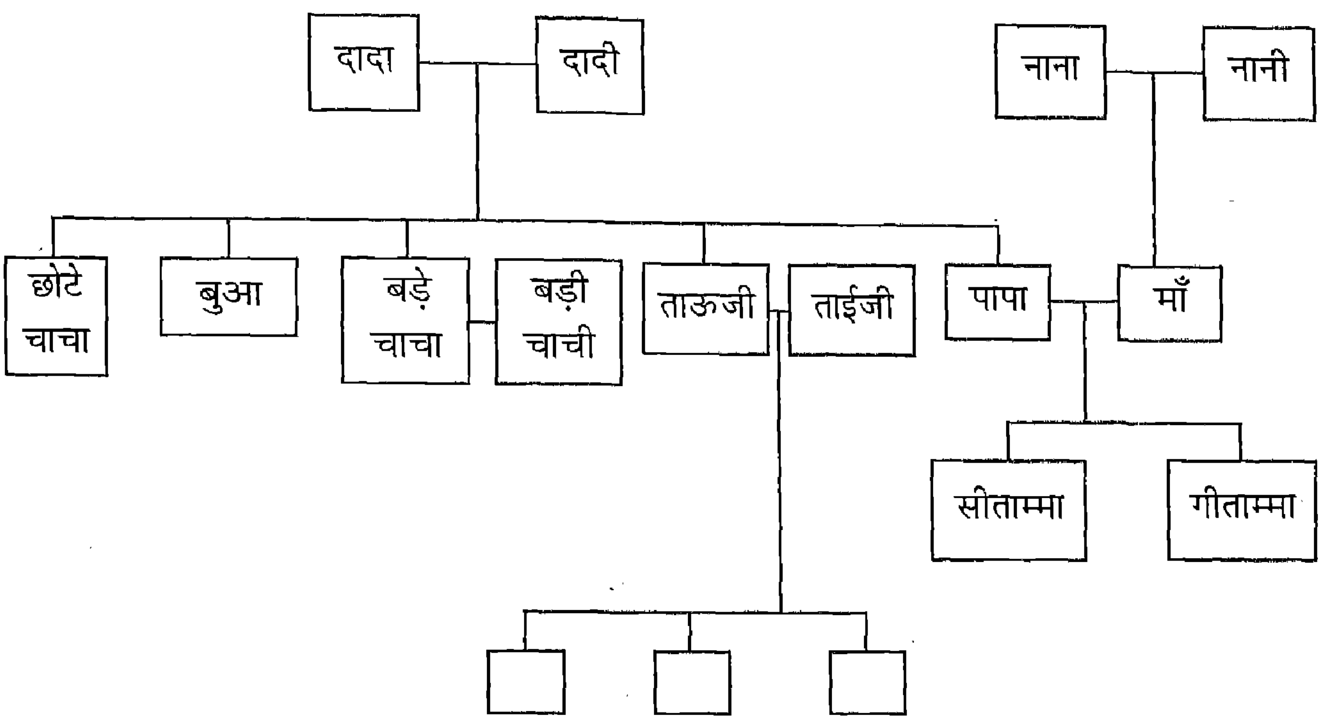
अपने परिवार की कुछ और बातें सोचो और खाली जगह में लिखो।

____

____

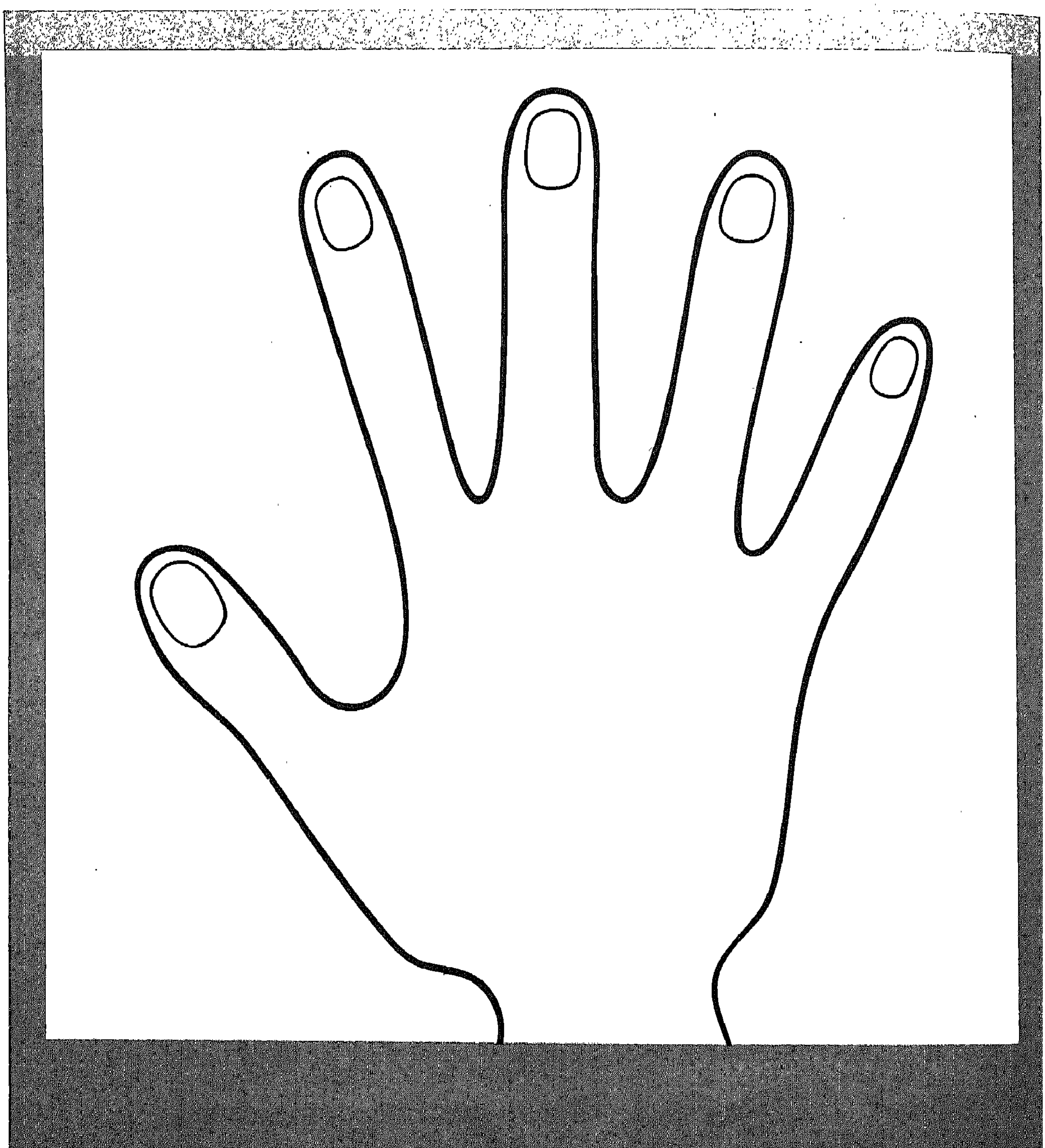
सीताम्मा का परिवार

क्या तुम परिवार की कल्पना एक पेड़ के रूप में कर सकते हो? यहाँ सीताम्मा के परिवार को चित्र द्वारा दर्शाया गया है।



चलो अब तुम भी अपने परिवार का इसी तरह का चित्र अपनी कॉपी में बनाओ। इसके लिए किसी बड़े की मदद लो। मदद के लिए सीताम्मा के परिवार का चित्र देखो।

नीचे एक हाथ का चित्र बना है। उस पर अपनी हथेली रखो। अँगूठे पर अँगूठा और उंगलियों पर उंगलियाँ।



तुमने जो हाथ चित्र पर रखा है वह तुम्हारा दायाँ हाथ है। अब अपना दूसरा हाथ कॉपी के पन्ने पर रखो और दाएँ हाथ से उसके किनारे-किनारे पेंसिल चला कर चित्र बनाओ।

इस बार तुमने जिस हाथ का चित्र बनाया है, वह तुम्हारा बायाँ हाथ है।

करो दायाँ हाथ आगे, करो दायाँ हाथ पीछे,
करो ये ऊपर नीचे और थोड़ा मुस्कुराओ।
आएगा... फिर मज़ा...
करो बायाँ हाथ आगे, करो बायाँ हाथ पीछे,
करो ये ऊपर नीचे और थोड़ा मुस्कुराओ।
आएगा... फिर मज़ा...

इसी तरह अब दाएँ पैर और बाएँ पैर के लिए भी गाओ।

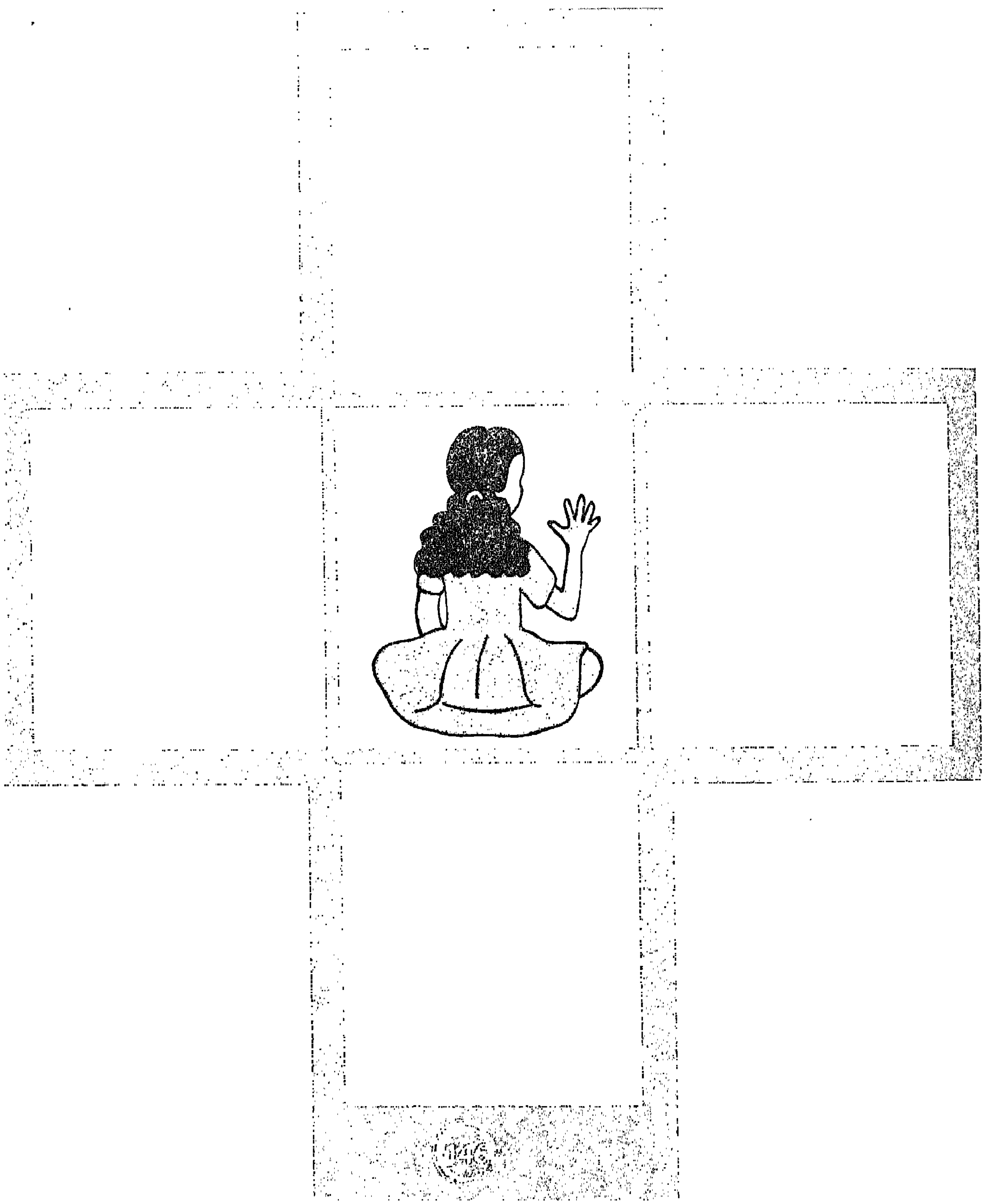
अब देखो और बताओ कि कक्षा में –

- तुम्हारी बाईं ओर क्या है?
- तुम्हारे पीछे क्या-क्या है?
- तुम किसके बाईं ओर बैठे हो?
- तुम्हारी दाईं ओर क्या है?
- तुम्हारी दाईं ओर कौन बैठा है?
- तुम्हारे आगे क्या है?
- तुम किसके दाईं ओर बैठे हो?

हाव-भाव के साथ गाना गाने में बच्चों को मज़ा आएगा व दायाँ-बायाँ, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे स्वयं अपने अनुभव से सीखेंगे।

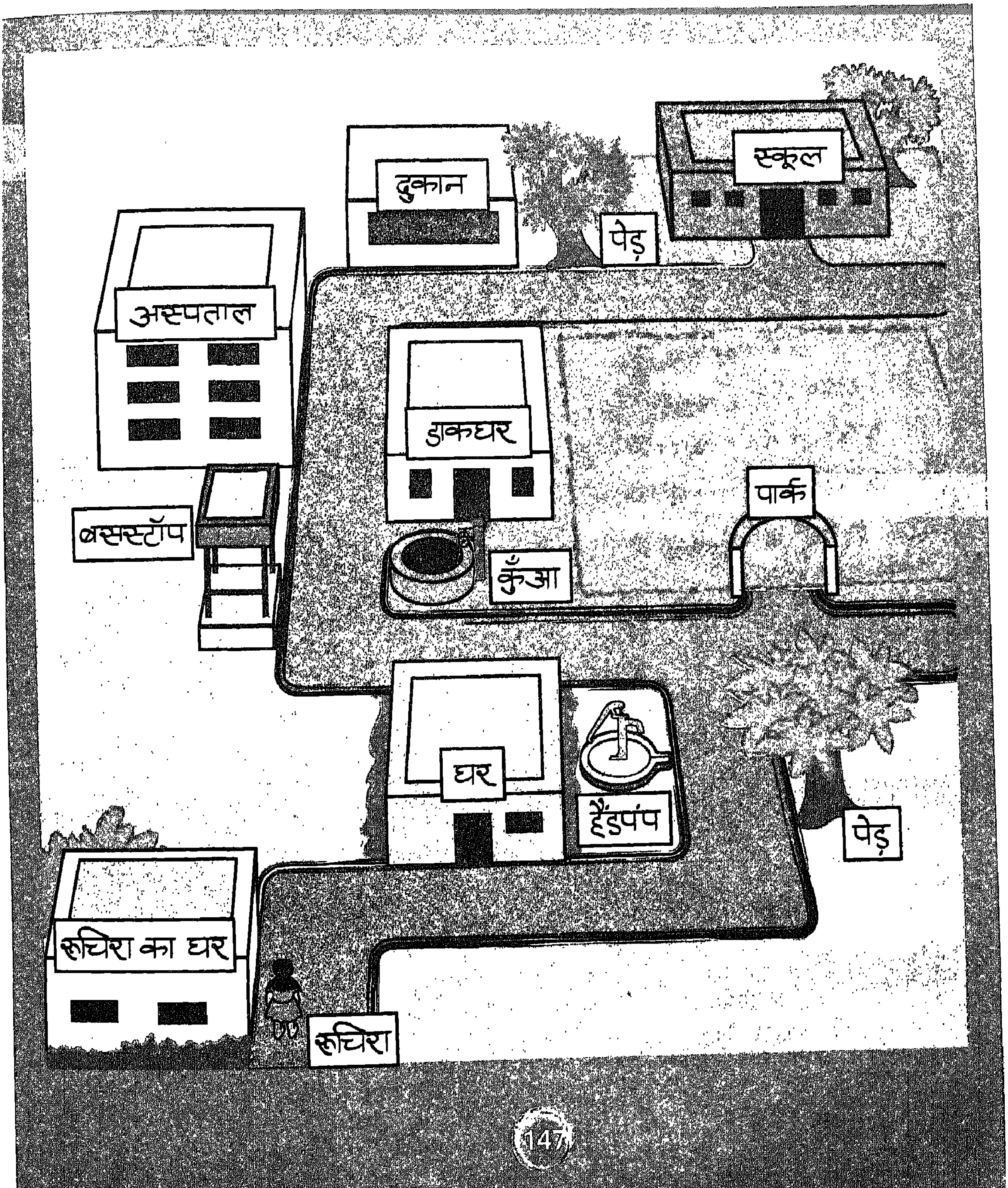
यह एक चित्र है, जिसमें रुचिरा बीच में है। अब तुम इसी में चित्र बनाओ –

- रुचिरा के पीछे किताब का।
- रुचिरा के आगे पेड़ का।
- रुचिरा की दाईं तरफ़ किसी जानवर का।
- रुचिरा की बाईं तरफ़ कुर्सी का।



रुचिरा को घर से स्कूल पहुँचाओ।

चित्र में स्कूल देखो। घर से स्कूल तक का रास्ता भी ढूँढ़ो। अब रुचिरा के घर से स्कूल तक का रास्ता रंगीन पेंसिल से दिखाओ।



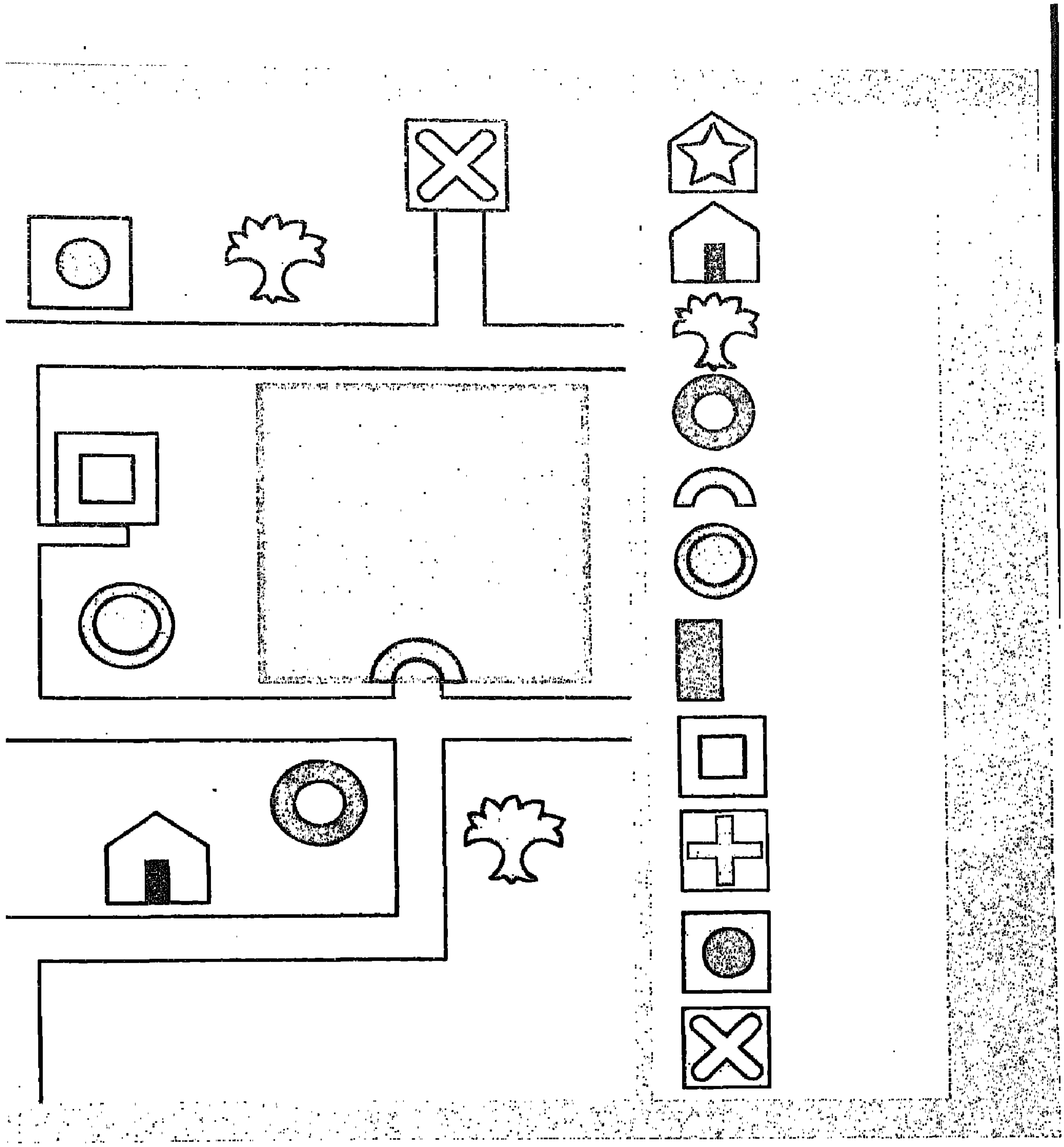
⁂ रुचिरा को घर से स्कूल तक के रास्ते में कौन-कौन सी जगह मिलेंगी? उनके नाम लिखो।

⁂ इनमें से कौन-सी चीज़ें दाईं ओर मिलेंगी और कौन-सी बाईं ओर?

दाईं ओर	बाईं ओर

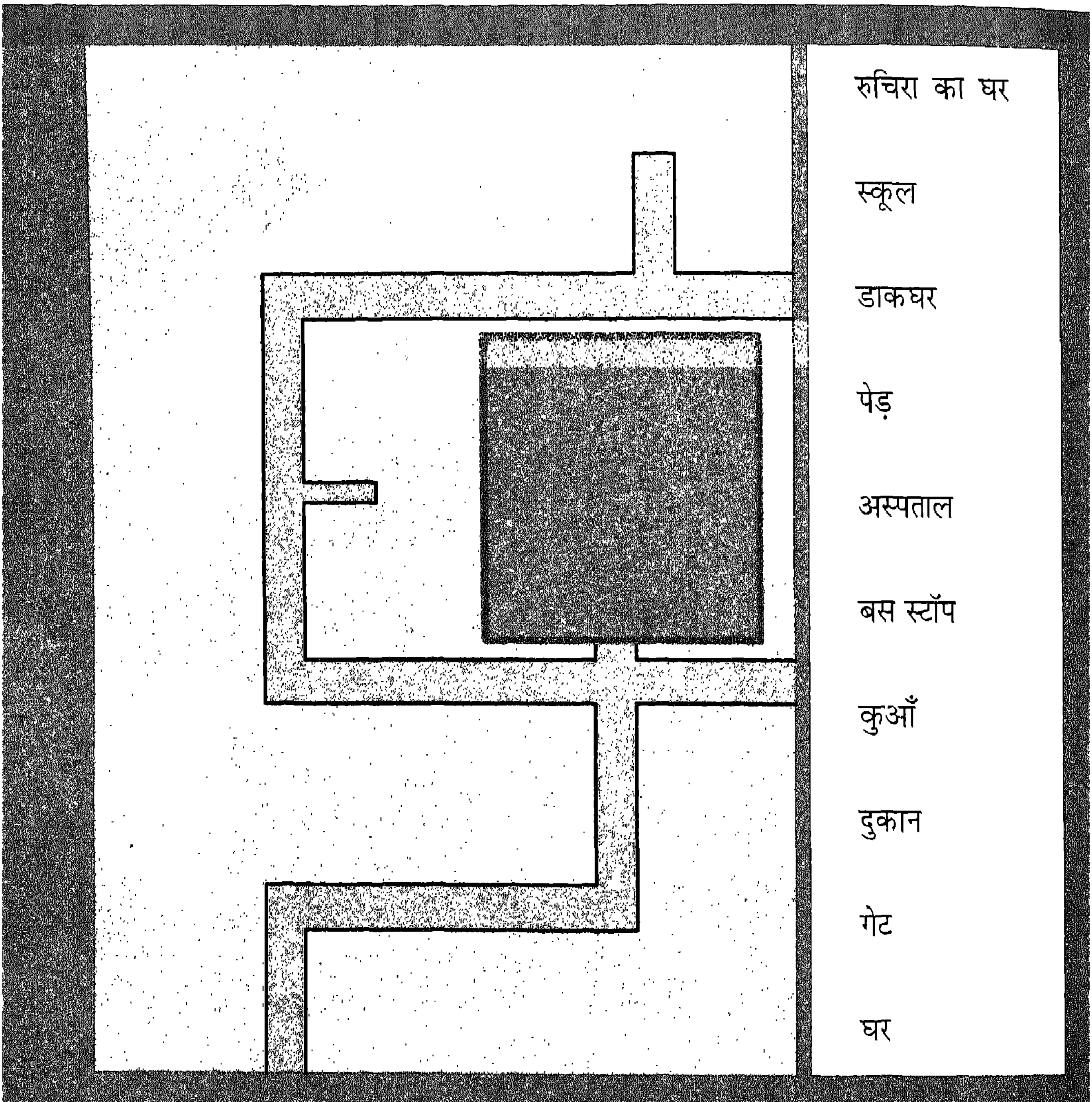
⁂ रुचिरा को घर से स्कूल जाते समय कुल कितनी बार मुड़ना पड़ेगा?

अगले पृष्ठ पर एक चित्र बना है। यह चित्र पहले दिए चित्र का छोटा रूप है। इसमें जगहों के चित्र के स्थान पर निशान बनें हैं। ऐसे चित्र को नक्शा कहते हैं। निशानों को पहचानो और लिखो।



तुम बता सकते हो कि ये निशान क्यों बनाए जाते हैं?

नीचे चित्र के सामने एक सूची बनी है। इसमें तुम अपनी इच्छा से कुछ निशान (संकेत) बनाओ। ये निशान पहले वाले निशानों से अलग बनाना। अब तुम्हारे बनाए निशानों को नक्शे में भी बनाओ।



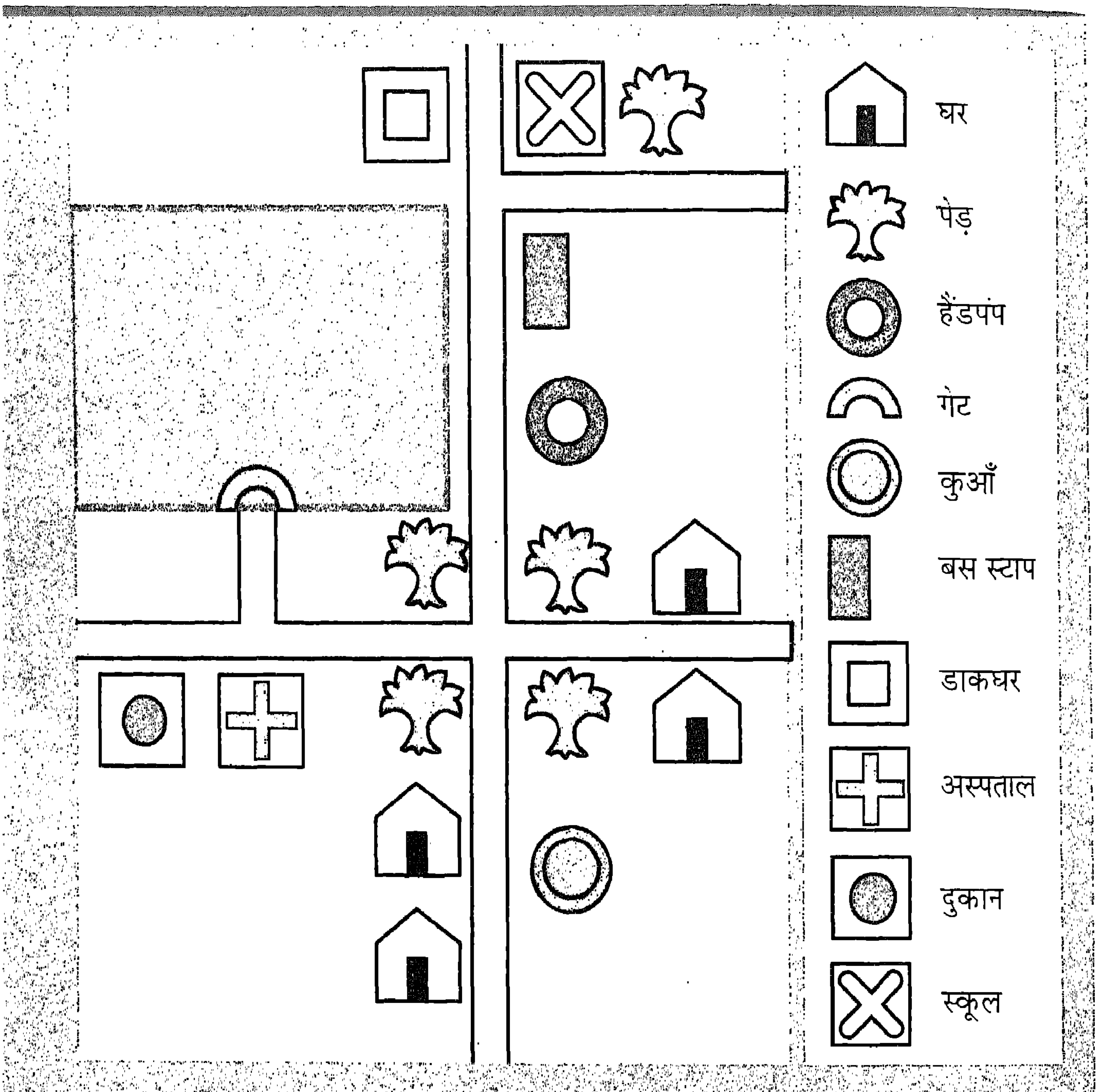
नक्शे में निशान बनाने की आवश्यकता को स्पष्ट करना और बच्चों द्वारा बनाए निशान पर चर्चा करना रुचिकर और उपयोगी रहेगा।

पृष्ठ 149 में तुमने अस्पताल पर '+' चिह्न देखा होगा। इस चिह्न की मदद से बिना पढ़े ही अस्पताल को पहचाना जा सकता है।

ऐसे और कौन-कौन से चिह्न तुम्हें अपने आस-पास दिखते हैं? उनके चित्र बनाओ। वे क्या दर्शाते हैं, यह भी लिखो।

चिह्न	क्या दर्शाता है

❖ नक्शे में दिखाए निशानों की सूची बनी है। ध्यान से देखो और लिखो।



- नक्शे में कितने घर हैं? ______________________
- नक्शे में कितनी दुकानें हैं? ______________________
- नक्शे में कितने पेड़ हैं? ______________________

- नक्शे में कितने हैंडपंप हैं? ____________________

- स्कूल पोस्टऑफ़िस के पास है या अस्पताल के पास? __________

- बस स्टॉप के पास क्या है? ____________________

- यदि नक्शे के साथ सूची न होती तो क्या तुम नक्शा पढ़ पाते?

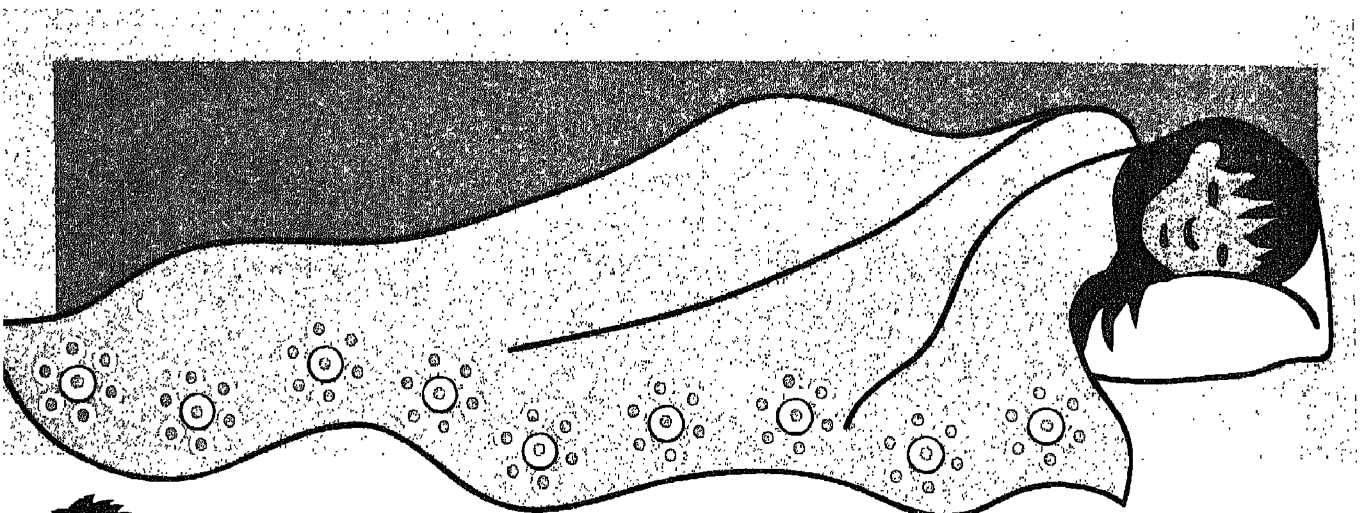
____

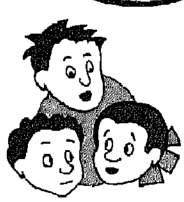
❋ गणित में जो चिह्न तुमने सीखे हैं उन्हें लिखो।

__________ __________ __________

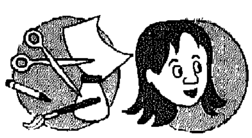
__________ __________ __________

साजिदा की आपा ने उस को एक बहुत सुंदर दुपट्टा दिया। दुपट्टे के ऊपर सुंदर कढ़ाई थी और शीशे भी लगे हुए थे। रात को खाना खाने के बाद साजिदा दुपट्टा अलग-अलग तरह से ओढ़ कर खेलने लगी। खेलते-खेलते थक गई तो वह दुपट्टा ओढ़े ही सो गई। सपने में वह सोचने लगी – इतना सुंदर दुपट्टा कैसे बना होगा?

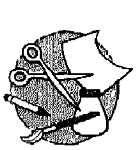




साजिदा का दुपट्टा कैसे बना होगा?

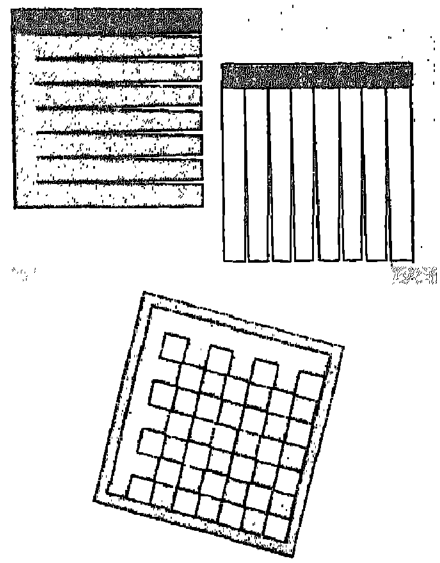


- तुम भी एक दुपट्टा या कोई थोड़ा लंबा बिना सिला कपड़ा लो। उसे अलग-अलग तरह से पहन कर देखो, कितनी तरह से पहन पाए?
- क्या किसी ने उसे लुंगी बनाकर या साफा बनाकर पहना? दुपट्टे को और कैसे-कैसे पहना?
- अपने घर में कोई छः कपड़े देखो। तुमने कपड़ों में क्या-क्या अंतर पाया – जैसे छूने में, रंग में, डिज़ाइन में?



- किसी मोटे कपड़े या बोरी को ध्यान से देखो। क्या तुम्हें खड़े और लेटे धागे दिखाई दिए? किसी भी कपड़े को नज़दीक से देखोगे तो तुम्हें ऐसी ही बनावट दिखाई देगी।

तुम भी इसी तरह कागज़ की पट्टियों को बुन कर देखो।

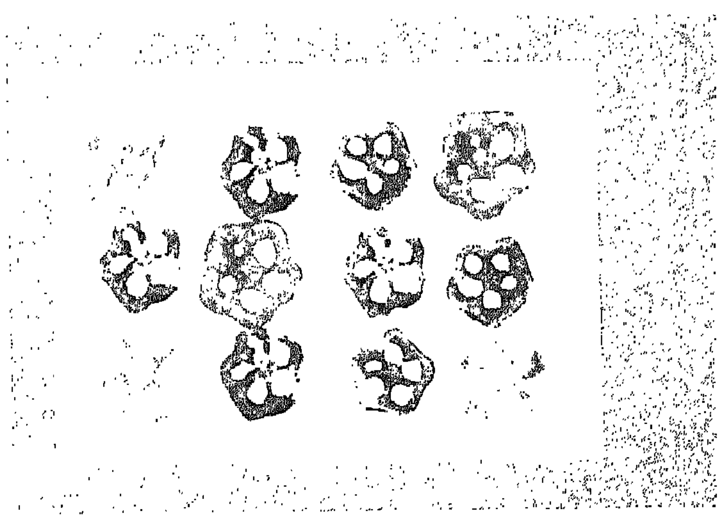


कागज़ से बुनाई

1. दो अलग-अलग रंग के कागज़ लो।
2. एक कागज पर खड़ी लकीरें खींचो और दूसरे पर लेटी।
3. दोनों कागज़ों पर खींची गई लकीरों को काटो। ध्यान रहे, पट्टियाँ अलग न हो जाएँ।
4. दोनों कागज़ों को एक-दूसरे के ऊपर रखकर उनके दो किनारे (जिन्हें चित्र में रंग से दिखाया गया है) आपस में जोड़ दो।
5. अब कटी हुई पट्टियों को एक-दूसरे के साथ बुनकर मैट बनाओ।
6. इसके किनारे पर एक कागज़ का बार्डर या टेप चिपका दो, जिससे वह खुले नहीं।

कपड़े पर छपाई

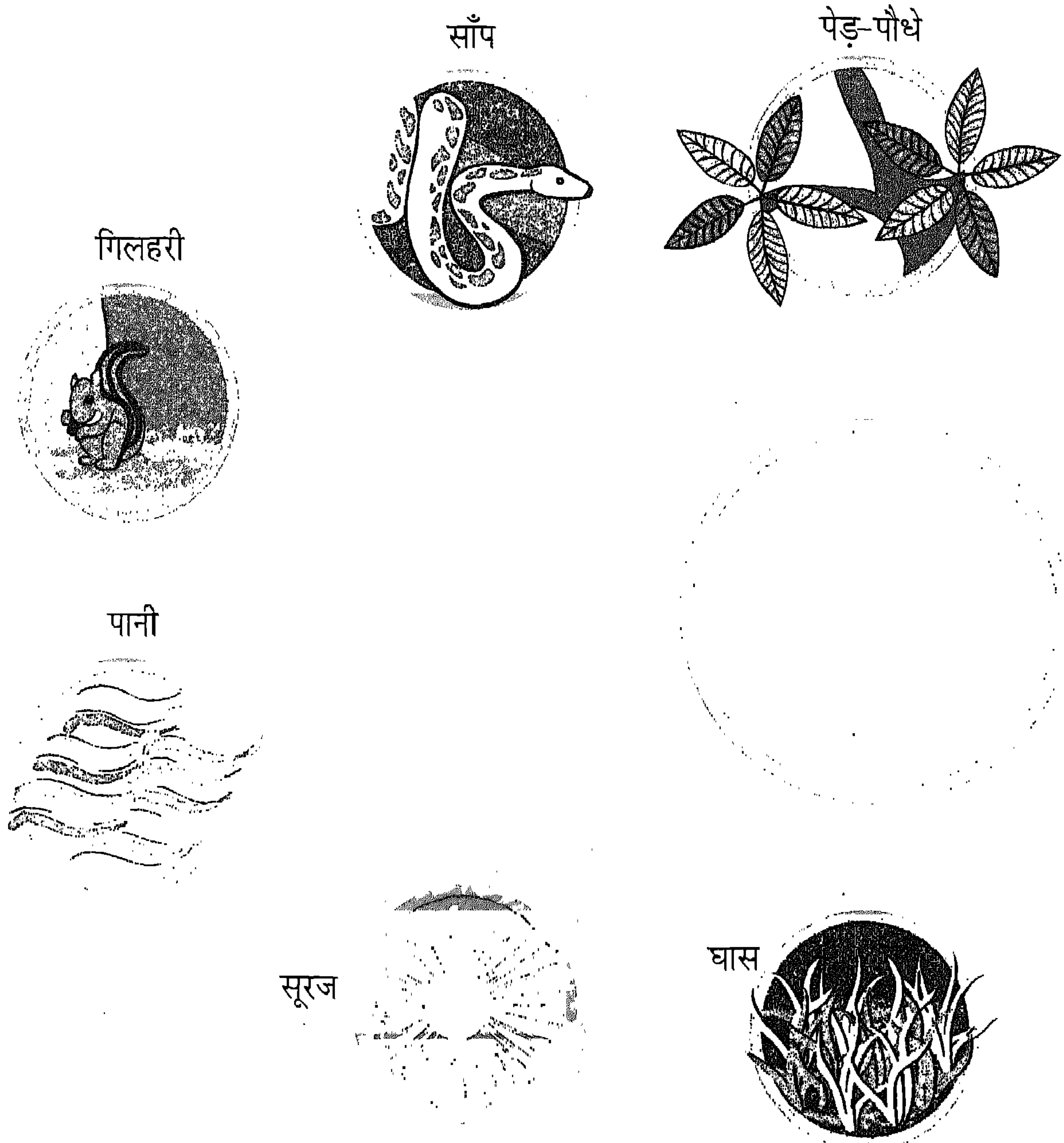
तुमने 'पौधों की परी' पाठ में कपड़ों पर बने फूल-पत्तियों के डिज़ाईन भी देखे। कटी हुई सब्ज़ियों की मदद से तुम भी कुछ डिज़ाइन बनाओ।



गोभी के फूल या भिंडी को बीच से काटो। उन पर गीले रंग लगाकर कागज़ या कपड़े पर ठप्पे लगाकर अपनी पसंद के डिज़ाइन बनाओ।

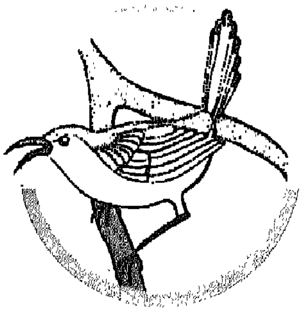
बच्चों द्वारा 'कागज़ की बुनाई' और 'कपड़े पर छपाई' करना हमारी पारंपरिक कला को बढ़ावा देगा। इससे बच्चों को अपनी कला दिखाने का मौका भी मिलेगा।

24 जीवन का जाल

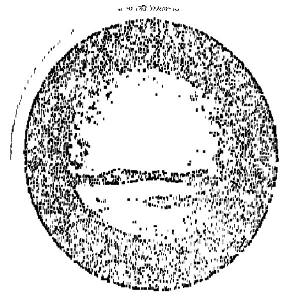


अब तक तुमने करीब-करीब यह पूरी किताब पढ़ ली होगी। तुमने पेड़-पौधों, जानवरों, पानी, घर, वाहनों तथा और भी कई चीज़ों के बारे में पढ़ा और सोचा। क्या

पक्षी

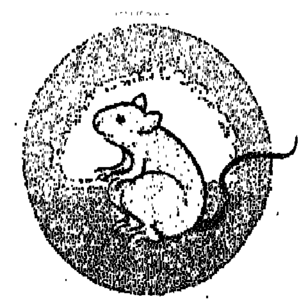


चंद्रमा

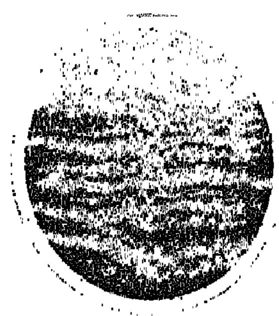


गाय

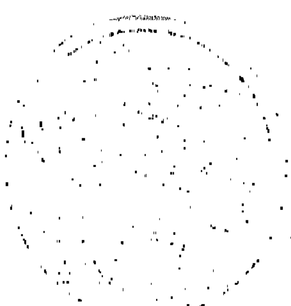




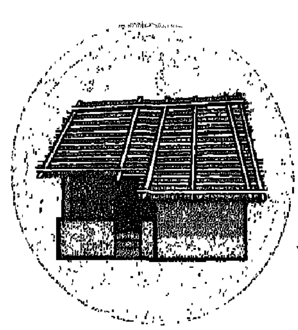
चूहा



मिट्टी

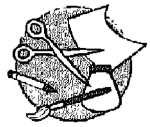


हवा



घर

तुम बता सकते हो कि हमने इन चीज़ों के बारे में कुछ जानने और सोचने की कोशिश क्यों की?



- हमारा चित्र में दिखाई चीज़ों से क्या नाता है? चलो पता लगाएँ –
- सबसे पहले दी गई खाली जगह में अपना चित्र बनाओ।
- अब अपने चित्र से एक लाइन खींचकर उन चीज़ों से जोड़ो जो तुम्हें अपने जीने के लिए बहुत ज़रूरी लगती हैं।
- क्या तुमने खुद को 'घर' से जोड़ा है?
- देखें, घर किन-किन चीज़ों से जुड़ता है। पहले सोचो – घर किन चीज़ों से बनता है?

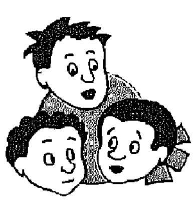
    - लकड़ी – जो पेड़ से मिलती है।
    - ईंट – जो पानी और मिट्टी से बनती है।
    - मिट्टी – हमें ज़मीन से मिलती है, और
    - पानी – हमें नदी, तालाब, कुएँ या बारिश से मिलता है।

तुम समझ गए न, घर को किन चित्रों या शब्दों से जोड़ना है?

अब इसी तरह एक-एक करके सभी चीज़ों को दूसरी चीज़ों से जोड़ो। यह सब करने में हो सकता है तुम्हें कुछ और चीजों के नाम लिखने की ज़रूरत पड़े।

इतना सब करने पर क्या बना? बन गया न एक बड़ा-सा जाल!

यह जाल देखकर तुम क्या समझे?



तुमने जो जाल बनाया है उसे अपने दोस्तों को दिखाओ और उनका बनाया हुआ जाल भी देखो। क्या सब एक जैसे हैं? साथियों के साथ इस पर चर्चा भी करो।

बच्चों द्वारा बनाया जाल उनके परिवेश में मिलने वाली चीज़ों की परस्पर निर्भरता की समझ को दर्शाता है। कक्षा में इस विषय पर चर्चा करने से उन्हें जाल बनाने में मदद मिलेगी।